भारतीय रेल

मई - 2019

₹ 10

चित्रकार - श्याम सुंदर अचारी

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुंच बनाएं

भारतीय रेल की विज्ञापन दरें (रुपये में)

विवरण	सामान्य दरें	अनुबंधित दरें
सेकण्ड कवर	10,450/-	9500/-
थर्ड कवर	9500/-	8550/-
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	8550/-	7600/-
पूरा पृष्ठ (सामान्य)	7600/-	6650/-
आधा पृष्ठ	5130/-	4180/-
सेन्टर स्प्रेड	15,000/-	13,300/-
सेन्टर स्प्रेड (स्पेशल पोजिशन)	16,500/-	14,700/-

(विज्ञापन चार कलर में)

तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी–बारी विज्ञापन देने पर ही अनुबंधित दरें लागू होंगी

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार	28 से.मी. x 20.5 से.मी.	छपाई क्षेत्र	23 से.मी. x 16.5 से.मी.

★ पत्रिका का प्रसार समग्र देश में ★

विज्ञापन सामग्री – ई–मेल, आर्टपुल, सीडी

संपर्क करें : व्यापार प्रबंधकः प्रशांत कुमार पट्टनायक, मोबाइल : 9717647367

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001

टेलीफोन : 011–23382531, 23303665, 23304456

Email : bmpr310rb@gmail.com

SECURITY AND TELECOM SOLUTIONS
for New Age Businesses

More Features • More Technology • More Performance

IP VIDEO SURVEILLANCE

The 3-Dimensional Video Surveillance Security: Persistent, Proficient, Proactive

- Enterprise Video Management System (VMS)
- Intelligent Video Analytics (IVA)
- Cognitive Response Engine with Automated Monitoring (CREAM)
- Network Video Recorders (NVR)
- IP Cameras
- Mobile Applications

www.MatrixVideoSurveillance.com

PEOPLE MOBILITY MANAGEMENT - TIME-ATTENDANCE & ACCESS CONTROL

Right People in Right Place at Right Time

- Face Recognition, Palm Vein, Fingerprint, PIN and RFID Card
- Aadhaar Enabled Biometric Attendance System
- Access Control
- Contract Workers Management
- Job Processing and Costing

www.MatrixAccessControl.com

TELECOM

Communication Solutions for Modern Enterprises

- Unified Communication Solution for Modern Enterprises
- IP-PBX for SME, SMB and SOHO
- The Smart Video IP Deskphone
- Universal Media Gateways
- 4G FCT with Battery Backup New Launch
- 4G FCT Compatible with Jio VoLTE

www.MatrixTeleSol.com

Available on GeM Government e Marketplace

MATRIX
TELECOM | SECURITY

MATRIX COMSEC
394-GIDC, Makarpura, Vadodara-390 010, India.
Call: **(+91) 1800-258-7747**
E-mail: **Inquiry@MatrixComSec.com**

www.MatrixComSec.com

YOUR PARTNERS IN SAFETY
SINCE 1999

ASHLOK

SOLDIERS OF SAFETY SOS

A.L.I.C.E

LIGHTNING PROTECTION

RoHS

UL

NFC 17-102:2011 CERTIFIED

CELEBRATING 20 YEARS IN YOUR SAFETY

10000+ MW

Solar Farms Across India Protected by Ashlok's Thor Helios & Counting...

EARTHING PROTECTION

BACKFILL COMPOUND(S)

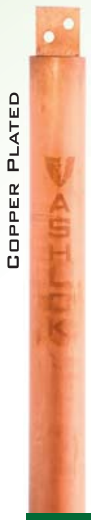

+91 -94440 87356

earthing@ashlok.com

wWw.ashlok.com

No. 58 | SIDCO Industrial Estate | North Phase | Ambattur | Chennai - 600 098.

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

मई–2019

आरंभ : 1960 | वर्ष : 59 | अंक : 10 | मूल्य : ₹10

संपादक मंडल

विनोद कुमार यादव
अध्यक्ष

विजय कुमार
वित्त आयुक्त (रेलवे)

सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव

राजेश दत्त बाजपेई
निदेशक (सूचना एवं प्रचार)

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय
सम्पादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
रेलवे टेली - 44519, 9666
(मो.) 9717641075,9909909966
ई-मेल
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन:
23303665, 23382531
रेलवे टेली. : 43665/9669
(मो.) : 9717647367

सदस्यता शुल्क :
सर्वसाधारण - ₹ 100,
रेलकर्मियों के लिए - ₹ 90

संपादन सहयोग :
दिनेश / रणमत सिंह

आवरण :
चित्रकार - श्याम सुंदर अचारी,
(प्रथम पुरस्कार, अंतर-रेलवे चित्रकला प्रतियोगिता 2019) (पेज नं. 33 देखें)

Twitter
@bhartiyarailrb
Facebook
www.facebook.com\kbhartiyarailpatrika
Instagram
bhartiyarailpatrika

7 अध्यक्ष रेलवे बोर्ड द्वारा ई-स्वास्थ्य संबंधी कैजाला मोबाइल एप का शुभारंभ

8 रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा हाईस्पीड रेल परियोजना की समीक्षा
8 अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा रेल भवन में व्यायामशाला का उद्घाटन
9 इरकॉन ने मनाया 43वां वार्षिक दिवस
9 अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड का आरडीएसओ दौरा
10 सदस्य चल स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने किया रेल डिब्बा कारखाना का दौरा
10 'हाई आउटपुट बेलास्ट क्लीनिंग मशीन' मध्य रेल में शामिल
11 रेलवे बोर्ड के नए सदस्य, सामग्री प्रबंधन : वी.पी. पाठक
11 रेलवे बोर्ड के नए सदस्य, संकेत एवं दूरसंचार : एन. काशीनाथ
12 रेलवे बोर्ड में 64वां रेलवे सप्ताह समारोहपूर्वक संपन्न
15 इरकॉन को श्रीलंका रेलवे से 91.27 मिलियन यूएस डॉलर का कांट्रैक्ट अवार्ड
16 भारतीय रेल ने मनाई डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती
17 रेल अधिकारी को मिला काका हाथरसी पुरस्कार
18 अवसंरचना विस्तार से गतिशीलता बढ़ाती : राइट्स
22 'प्रोजेक्ट उत्कृष्ट' के अन्तर्गत हावड़ा-यशवंतपुर दूरंतो एक्सप्रेस का उन्नयन
22 राजधानी एक्सप्रेस के कोच होंगे झटकों से मुक्त
23 अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
26 खेल जगत
28 रेलों के अंचल से

36-37 राष्ट्रीय रेल संग्रहालय में महात्मा गांधी पर प्रदर्शनी का आयोजन

38-39 सुनहरे इतिहास को समेटे भावनगर रेल संग्रहालय
40-41 स्टेशन सौंदर्यीकरण
45 हरित पहल
46-47 यात्री सुविधाएं
48 पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित मुख्यालय भवन... विमलेश चन्द्र
52 गौरव और अध्ययन का विषय अमृत कुम्भ-2019 डॉ. अमित मालवीय
54 अनुपम विरासत से परिपूर्ण हैं एहोल के मंदिर विद्युत प्रकाश मौर्य
57 रेत का महल सविता मिश्रा अक्षजा'
59 लापता जसविंदर शर्मा
62 जीवन में अमृत वर्षा करती है हंसी शिवचरण बैरवा
63 विज्ञान वरदान या अभिशाप (कविता) शीला वर्मा
64 क्या बाजार की अल्पकालीन अस्थिरता... आर.के. महोपात्रा
69 ग़ज़ल हरदीप बिरदी
69 ग़ज़ल संजय कुमार 'गिरि'

भारतीय रेल अपने कर्मठ कर्मचारियों के प्रति कटिबद्ध

किसी भी सफल संस्था के पीछे उसके कर्मियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय रेल के लाखों कर्मी चौबीसों घंटे बिना रूके लाखों लोगों को उनके गंतव्य तक पहुँचाते हैं। सर्दी, गर्मी, वर्षा तथा अन्य विषम परिस्थितियों में भी कार्य कर यात्रियों की सुखद एवं सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित बनाते हैं। भारतीय रेल भी अपने कर्मियों को उत्तम कार्य हेतु अनुकूल वातावरण एवं स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने तथा उनकी अन्य समस्याओं के निवारण हेतु सदैव कटिबद्ध है। इसके लिए अत्याधुनिक तकनीक का भी सहारा लिया जा रहा है।

भारतीय रेल में लगभग 13 लाख से अधिक रेलकर्मी कार्य कर रहे हैं। स्वाभाविक बात है कि कर्मचारी तथा उनके परिवारजन जितने स्वस्थ रहेंगे, उतना वे कार्य में अपना श्रेष्ठ दे सकेंगे। भारतीय रेल इन कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों को उत्तम स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध करवा रही है। सभी रेल अस्पतालों को अपग्रेड किया जा रहा है। बिना भौतिक कार्ड के रेलकर्मी या उसके परिवारजन देश के किसी भी रेल अस्पताल में चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। साथ ही, अच्छे निजी अस्पतालों के साथ भी अनुबंध किये गये हैं।

हाल ही में अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड विनोद कुमार यादव ने भारतीय रेल पर कई सुविधाओं का शुभारंभ किया, जिसमें माइक्रोसॉफ्ट का स्वास्थ्य संबंधित मोबाइल एप 'कैजाला' भी है। इस एप से सभी रेल अस्पतालों को जोड़ा गया है। इस एप से दूरदराज के स्थानों पर कार्यरत रेलकर्मियों को डॉक्टरों से ऑनलाइन स्वास्थ्य संबंधी सलाह लेने, चिकित्सा रिपोर्टों को सेव तथा एक्सेस करने तथा उपचार के लिए उसे डॉक्टरों के साथ साझा करने में सुविधा रहेगी।

भारतीय रेल अपने 1.25 करोड़ रेलकर्मियों तथा उनके परिवारजनों के लिए यूनीक मेडिकल आईडेंटीफिकेशन उपलब्ध कराने के लिए 'उम्मीद' नामक स्मार्ट कार्ड बना रही है। यह एक वेब और मोबाइल आधारित एप्लिकेशन है। इसके आने से लाभार्थियों को भौतिक कार्ड साथ ले जाने की आवश्यकता नहीं है। वह कहीं भी इस स्मार्ट कार्ड से लाभ प्राप्त कर सकेगा।

परियोजना सक्षम के अंतर्गत कर्मचारियों तथा अधिकारियों को अधिक कार्यक्षम बनाने के लिए विशेष प्रकार की ट्रेनिंग दी जा रही है। जिससे उन्हें अपग्रेड किया जा सके। उन्हें वर्तमान की अत्याधुनिक तकनीकों से अवगत कराया जा रहा है। रेल भवन के कर्मचारी कार्य के साथ कसरत भी कर सकें इसके लिए अत्याधुनिक जिम शुरू किया गया है।

कुछ ही समय पहले रेल मंत्रालय द्वारा कर्मचारियों की समस्या से संबंधित कर्मचारी चार्टर लागू किया गया है। जिसमें कर्मचारी के हर कार्य के लिए एक तय सीमा निर्धारित कर दी गई है। अब संबंधित विभाग तथा अधिकारी द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि रेलकर्मियों के कार्य निश्चित समयावधि में पूर्ण किये जा रहे हैं। रनिंग स्टाफ हेतु ठहरने के स्थान में काफी सुधार किया गया है। वातानुकूलित कक्ष के साथ-साथ उन्हें अच्छा खाना भी प्राप्त हो यह सुनिश्चित किया जा रहा है।

ऐसे कई कदम हैं जो रेलकर्मियों तथा उनके परिवारजनों के लिए वरदान साबित होंगे।

आप को यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। आप के सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं। यदि आप रेल, पर्यावरण तथा साहित्य में अपने मौलिक लेख भेजना चाहें तो आप का स्वागत है। आप हमारे फेसबुक पेज को लाइक करना न भूलें।

भारतीय रेल में यात्रा के समय अपने आसपास स्वच्छता बनाये रखकर अपने तथा अन्य लोगों की यात्रा भी सुखद बनाएं। ■

अध्यक्ष रेलवे बोर्ड द्वारा ई-स्वास्थ्य संबंधी कैजाला मोबाइल एप का शुभारंभ

कैजाला मोबाइल एप को लाँच करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, साथ में हैं सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड, एस.एन. अग्रवाल, महानिदेशक, रेल स्वास्थ्य सेवा, डॉ. एच. प्रदीप कुमार, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, गजानन माल्या एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

4 अप्रैल, 2019 को सिकंदराबाद में दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय में अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव द्वारा गजानन मल्लया, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे तथा एस.एन. अग्रवाल, सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड की उपस्थिति में कई डिजिटल पहलों - भारतीय रेलकर्मियों हेतु कैजाला मोबाइल एप, यूनीक मेडिकल आईडेंटीफिकेशन (उम्मीद) स्मार्ट कार्ड, ई-कार्यालय, परियोजना सक्षम-चरण II एवं दक्षिण मध्य रेलवे पर कई अवसंरचनाओं का शुभारंभ किया गया।

भारतीय रेल के कर्मचारियों के लिए कैजाला मोबाइल एप : भारतीय रेल पर सभी कर्मचारियों, उनके परिवारों तथा रेल पेंशनरों की स्वास्थ्य संबंधी सेवा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए माईक्रोसॉफ्ट के 'कैजाला' एप का शुभारंभ किया गया है। यह एप देश भर के रेल अस्पतालों को जोड़ता है। यह एप दूरदराज के स्थानों पर कार्यरत रेलकमियों को डॉक्टरों से ऑन-लाइन स्वास्थ्य संबंधी सलाह लेने, चिकित्सा रिपोर्टों को सेव व एक्सेस करने तथा उपचार के लिए उसे डॉक्टरों के साथ साझा करने में आसानी और सुविधा प्रदान करेगा।

यूनीक मेडिकल आईडेंटीफिकेशन (उम्मीद) स्मार्ट कार्ड: उम्मीद, कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और आश्रितों के लिए चिकित्सा पहचान पत्र बनाने के लिए एक वेब और मोबाइल आधारित एप्लिकेशन है, जिसका शुभारंभ भारतीय रेल पर स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं तक पहुंच को आसान बनाने के लिए किया गया है। इसके आने से लाभार्थियों को भौतिक कार्ड साथ ले जाने की आवश्यकता नहीं है। डाटा बेस के माध्यम से लाभार्थी की पहचान किए जाने के साथ ही यूनीक मेडिकल कार्ड से लाभार्थी किसी भी चिकित्सा इकाई में आसानी से चिकित्सा सुविधाओं को उपयोग करने में सक्षम होगा। उम्मीद, लगभग 1.25 करोड़ लाभार्थियों को कवर करने वाला भारतीय रेल का सबसे बड़े डाटा बेस है तथा उन्हें विस्तारित सेवा जैसे कि ई-पास देने में भी उपयोग में आएगा।

ई-कार्यालय : भारतीय रेल संगठन में सभी जगहों पर ई-कार्यालय कार्यान्वित कर उसके माध्यम से कार्यबल से अधिक दक्षता और उत्पादकता हासिल करने हेतु एक विशाल छलांग लगाई गई है। यह पहल, जिसे सबसे पहले दक्षिण मध्य रेलवे पर लागू किया गया है, कागज रहित कार्य प्रणाली को सक्षम बनाते हुए ई-प्लेटफॉर्म पर फाइलों की संभलाई में मदद करेगी। इसे चरणबद्ध तरीके से सभी जोनों में लागू किया जाएगा।

परियोजना सक्षम - चरण II : भारतीय रेल, जो तेजी से परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रही है, ने परियोजना सक्षम - चरण II शुरू किया है। यह कुशल पहल संगठन में तकनीक के साथ ही सांस्कृतिक परिवर्तनों के अनुकूल कार्यबल के बहु अनुशासनिक प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए है। यह पिछले वर्ष की परियोजना सक्षम चरण-I की सफलता के परिणामस्वरूप संभव हो पाया है, जिसने 12 लाख से अधिक कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने और भारतीय रेल की कार्य संस्कृति में सकारात्मक योगदान देने में भूमिका निभाई है।

इसके अलावा, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने वीडियो लिंक के माध्यम से सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म 8/9 और 10 पर क्विक वॉटरिंग प्रणाली का शुभारंभ भी किया। इससे पांच मिनट में 24 डिब्बों वाली गाड़ी में पानी भरा जा सकेगा, जिससे प्लेटफॉर्म पर गाड़ियों के वेटिंग टाइम में कमी आएगी तथा स्टेशनों की गाड़ी संभलाई क्षमता भी बढ़ेगी। उन्होंने दक्षिण मध्य रेलवे मुख्यालय, रेल निलयम, सिकंदराबाद में नवीकृत प्रेक्षागृह, जो वातानुकूलित सुविधा के साथ लगभग 250 व्यक्तियों को समायोजित करने की क्षमता रखता है तथा काचीगुडा में रेलवे सुरक्षा बल के लिए बैरक, जिसमें रेलवे सुरक्षा कर्मियों के आराम के लिए आधुनिक सुविधाएं हैं, का उद्घाटन किया।

श्री यादव ने जोन पर रेलवे के पदाधिकारियों तथा अन्य सभी जोनों के महाप्रबंधकों की सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय रेल अपनी सेवाओं को बेहद कुशल बनाने के लिए कई एप्लिकेशनों और सॉफ्टवेयरों का उपयोग करके सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत लाभ उठा रही है।

सदस्य कार्मिक, श्री अग्रवाल ने कहा कि भारतीय रेल संगठन को मजबूत बनाने के लिए, 13 लाख से अधिक सेवारत कार्यबल और सेवानिवृत्त कर्मचारियों की बेहतर सुविधा, दक्षता और उत्पादकता के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम बनाने की आवश्यकता है। महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, गजानन मल्लया ने कहा कि संगठन के विकास की योजनाओं को पूरा करने के लिए जोन बेहतर निष्पादन, प्रौद्योगिकी में नवाचार और परिवर्तन लाना जारी रखेगा। अपर महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, जॉन थॉमस की देख-रेख में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में डॉ. एम. प्रदीप कुमार, महानिदेशक (रेलवे स्वास्थ्य सेवाएं); सुश्री अलका अरोड़ा मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (प्रशिक्षण); उमेश बलोंडा, कार्यकारी निदेशक (सिगनल व दूरसंचार), ट्रांसफॉर्मेशन निदेशालय, रेलवे बोर्ड और पुनीत चावला, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, रेल टेल उपस्थित थे। डॉ. टी.जे. प्रकाश, प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक; एन.वी. रमणा रेड्डी, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी; दक्षिण मध्य रेलवे के अन्य विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष, सिकंदराबाद और हैदराबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक भी रेल निलयम में उपस्थित थे, जबकि विजयवाड़ा, गुंटूर एवं गुंतकल मंडल के रेल प्रबंधकों ने वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा इसमें भाग लिया। ■

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा हाईस्पीड रेल परियोजना की समीक्षा

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष विनोद कुमार यादव ने अहमदाबाद में नेशनल हाईस्पीड रेल परियोजना की समीक्षा की। मंडल कार्यालय में आयोजित मीटिंग में श्री यादव ने सचिव रेलवे बोर्ड एवं एडवाइजर इंफ्रा सुशांत कुमार मिश्रा, नेशनल हाईस्पीड रेल परियोजना के प्रबंध निदेशक अचल खरे तथा पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता सहित वरिष्ठ अधिकारियों के साथ परियोजना की समीक्षा की व वड़ोदरा व अहमदाबाद मंडल का प्रेजेंटेशन देखा तथा कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने इस प्रोजेक्ट की साबरमती स्टेशन पर जाकर समीक्षा भी की तथा साबरमती-अहमदाबाद के बीच अलाइनमेंट का निरीक्षण तथा विंडो निरीक्षण भी किया। श्री यादव ने अहमदाबाद स्टेशन पर सरसपुर की तरफ से आनेवाली हाईस्पीड परियोजना का भी मुआयना किया। इस दौरान श्री यादव के साथ तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद, दिनेश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक, वडोदरा, देवेन्द्र कुमार तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। ■

हाईस्पीड रेल परियोजना की समीक्षा बैठक को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, साथ में हैं सचिव, रेलवे बोर्ड, सुशांत कुमार मिश्रा, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा रेल भवन में व्यायामशाला का उद्घाटन

2 अप्रैल, 2019 को रेल भवन में रेलकर्मियों को स्वस्थ वातावरण मुहैया कराने के लिए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव द्वारा व्यायामशाला का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर वित्त आयुक्त (रेलवे), विजय कुमार एवं सदस्य, यातायात गिरीश पिल्लई उपस्थित थे

इरकॉन ने मनाया 43वां वार्षिक दिवस

इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड ने 28 अप्रैल को अपना 43वां वार्षिक दिवस हर्षोल्लास के साथ वायुसेना सभागार, सुब्रोतो पार्क, नई दिल्ली में मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, सदस्य, इंजीनियरिंग, विश्वेश चौबे तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरकॉन, सुनील कुमार चौधरी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर दीपक सबलोक, निदेशक, परियोजना, मुकेश कुमार सिंह, निदेशक, वित्त तथा योगेश कुमार मिश्रा, निदेशक, कार्य समेत रेलवे बोर्ड के अनेक वरिष्ठ अधिकारी, भूतपूर्व अधिकारी एवं अन्य संगठनों के अधिकारी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री यादव ने वर्ष 2018-19 में इरकॉन की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए आशा जताई कि आगामी वर्षों में भारतीय रेल के इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण और विकास में इरकॉन अग्रणी भूमिका निभाएगा। सदस्य, इंजीनियरिंग ने कहा कि इरकॉन द्वारा पूरी की जा रही अनेक परियोजनाएं उसके इंजीनियरों की गुणवत्ता और प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरकॉन ने कंपनी की सफलता

का श्रेय इरकॉन की समर्पित टीम को दिया। उन्होंने इरकॉन पर भरोसा बनाए रखने के लिए रेलवे बोर्ड का भी आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि कंपनी कंस्ट्रक्शन सेक्टर की भावी चुनौतियों के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

इरकॉन ने इस वर्ष से अपने वार्षिक दिवस को 'सृजन' नाम दिया है, जो कंपनी के मुख्य कार्यक्षेत्र का प्रतीक है।■

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड का आरडीएसओ दौरा

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड विनोद कुमार यादव ने 16 मार्च, 2019 को आरडीएसओ का दौरा किया और महानिदेशक, आरडीएसओ, वीरेंद्र कुमार, सभी अपर महानिदेशकों और कार्यकारी निदेशकों के साथ एक बैठक की जिसमें उन्होंने आरडीएसओ द्वारा हाल की उपलब्धियों और वर्तमान में चालू परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण देखा तथा अपने सुझाव दिए।

श्री यादव ने आरडीएसओ की कार्य प्रणाली की विशेष रूप से पिछले एक वर्ष में आये सुधार की सराहना की, साथ ही इस दिशा में और सुधार करने का आह्वान किया। इसके लिए उन्होंने उपस्थित प्रत्येक कार्यकारी निदेशक से सुझाव मांगे और उन्हें व्यक्तिगत रूप से सुना।

इस अवसर पर अध्यक्ष ने कहा कि आरडीएसओ को एक विश्वस्तरीय संस्थान बनाना है, और इसके लिए रेलवे बोर्ड से जो भी मदद की आवश्यकता है और जो भी महानिदेशक, आरडीएसओ को चाहिए वह दिया जाएगा। ■

1 मई को राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली में उत्तर रेलवे एवं आरसीएफ कपूरथला के संयुक्त उपक्रम से वेंडर मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, सदस्य, सामग्री प्रबंधन, वी.पी. पाठक, उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक टी.पी. सिंह एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे

सदस्य, चल स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने किया रेल डिब्बा कारखाना का दौरा

राजेश अग्रवाल, सदस्य, चल स्टॉक, रेलवे बोर्ड ने रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा किया।

आरसीएफ में उन्होंने वर्कशाप में कोच निर्माण गतिविधियों का निरीक्षण किया। आरसीएफ जिसे कि थ्री फेस प्रणाली वाली मेन लाइन इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (मेमु) बनाने का आदेश प्राप्त हुआ है, के लिए आरसीएफ में निर्मित किये जा रहे अंडर फ्रेम का निरीक्षण किया। इन डिब्बों का आरसीएफ में व्यापक स्तर पर निर्माण इस वर्ष से शुरू हो जायेगा। इसके अलावा आपने एसी कम्पोजिट कोच, एसी टू टियर और पावर कार का निरीक्षण भी किया तथा इनके निर्माण के लिए बहुमूल्य सुझाव भी दिए। श्री अग्रवाल ने बाद में आरसीएफ के महाप्रबंधक एस.पी. त्रिवेदी से आरसीएफ के कोच निर्माण में तेजी लाने के लिए विचार विमर्श किया। इसके अलावा श्री अग्रवाल ने रेलवे बोर्ड के साथ आरसीएफ के उच्च अधिकारियों सहित वीडियो कान्फ्रेंसिंग भी की।

श्री अग्रवाल ने बाद में आरसीएफ में प्रवेश के लिए फिरोजपुर रेल लाइन पर रेलवे अंडर ब्रिज के स्थान का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उनके साथ मंडल रेल प्रबंधक, फिरोजपुर, विवेक कुमार तथा अन्य उच्च अधिकारी मौजूद थे। आरसीएफ निवासियों की मांग पर आरसीएफ के बाहर रेलवे अंडर ब्रिज बनाने की योजना है। इसके पश्चात उन्होंने आरसीएफ हॉल्ट स्टेशन स्थित रेल वाटिका के बाग में वृक्षारोपण भी किया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने आरसीएफ की यूनियन/एसोसिएशन के पदाधिकारियों से मीटिंग की और उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार किया। श्री अग्रवाल ने विक्रेताओं के साथ बैठक भी की जो कोच निर्माण के लिए आरसीएफ को सामग्री की आपूर्ति

रेल डिब्बा कारखाना का निरीक्षण करते हुए सदस्य, चल स्टॉक, रेलवे बोर्ड, राजेश अग्रवाल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

करते हैं। उन्होंने उन्हें उच्च क्वालिटी का सामान सही समय पर उपलब्ध करवाने का आह्वान किया। सदस्य चल स्टॉक ने बाद में आरसीएफ के उच्च अधिकारियों से भी बातचीत की। श्री अग्रवाल ने भारतीय रेल की उन्नति में आरसीएफ के योगदान को सराहते हुए कहा कि आरसीएफ ने रेल डिब्बों में नई टेक्नोलॉजी लाकर जहां भारतीय रेल का कायाकल्प करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं इससे भारतीय रेल अब यात्रियों को तेज गति और सुरक्षित यात्रा के साथ आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम हो गई है। समय के साथ-साथ रेल डिब्बों की मांग और बढ़ रही है और इसके लिए जरूरी है कि आरसीएफ अपने उत्पादन में बढ़ोतरी करे। इसके लिए रेलवे बोर्ड आरसीएफ को हर सहायता प्रदान करेगा। ■

भारतीय रेल की पहली 'हाई आउटपुट बेलास्ट क्लीनिंग मशीन' मध्य रेल में शामिल

विश्वेश चौबे, सदस्य इंजीनियरिंग, रेलवे बोर्ड, देवेन्द्र कुमार शर्मा, महाप्रबंधक, मध्य रेल, ए.के. जैन, रेल संरक्षा आयुक्त (सेंट्रल सर्कल), एस.के. अग्रवाल, प्रधान मुख्य अभियंता, एस.के. तिवारी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) और मध्य रेल के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में 12 मार्च, 2019 को वडाला यार्ड में भारतीय रेल की पहली हाई आउटपुट बेलास्ट क्लीनिंग मशीन मध्य रेल की कार्यप्रणाली में शामिल की गई। भारतीय रेल ट्रंक मार्गों पर वर्ष 2022 तक तथा पूरे भारतीय रेल प्रणाली पर 2024 तक ट्रैक निरीक्षण, निगरानी, रखरखाव और रिले को पूरी तरह से मशीनीकृत करने की दिशा में आगे बढ़ रही है और उसी के अनुसार मशीनों को शामिल किया जा रहा है। 490 आधुनिक ट्रैक मेंटेनेंस मशीनों के ऑर्डर पहले ही दे दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश मशीनों का निर्माण भारत में किया जाएगा और संरक्षा को और मजबूत करने के लिए अगले 2-3 वर्षों में आपूर्ति की जाएगी। ■

हाई आउटपुट बेलास्ट क्लीनिंग मशीन (उच्च आउटपुट गिट्टी सफाई मशीन) के मध्य रेल में शामिल करने का एक दृश्य

रेलवे बोर्ड के नए सदस्य, सामग्री प्रबंधन : वी.पी. पाठक

भारतीय रेल भंडार सेवा के 1980 बैच के अधिकारी वी.पी. पाठक ने 16 अप्रैल, 2019 को रेलवे बोर्ड के सदस्य, सामग्री प्रबंधन का पदभार ग्रहण कर लिया है। इससे पूर्व आप 12 जून, 2018 से रेलवे बोर्ड के महानिदेशक, रेल भंडार के पद पर कार्यरत थे।

श्री पाठक ने 1979 में इलाहाबाद के मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान से सिविल इंजीनियरिंग में प्रतिष्ठा के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त की। श्री पाठक ने चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना के महाप्रबंधक का कार्यभार संभालने के अलावा पूर्व रेलवे, उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे, कोर, पूर्वोत्तर रेलवे, उत्तर पश्चिम रेलवे, रेल कोच फैक्टरी तथा डीजल रेल इंजन कारखाना में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है।

रेलवे बोर्ड के महानिदेशक, रेल भंडार के पद पर आपकी सेवा के दौरान भारतीय रेल ने स्क्रैप बिक्री से 4192 करोड़ रुपये की आय अर्जित की। यह आय पिछले वर्ष की तुलना में 33.4 प्रतिशत अधिक थी।

आपको ट्रैकिंग तथा संगीत में दिलचस्पी है। आप 2014 में कैलाश मानसरोवर की यात्रा कर चुके हैं। ■

रेलवे बोर्ड के नए सदस्य, संकेत एवं दूरसंचार : एन. काशीनाथ

एन. काशीनाथ ने 16 अप्रैल, 2019 को रेलवे बोर्ड के सदस्य, संकेत एवं दूरसंचार का पदभार ग्रहण किया। एन. काशीनाथ भारतीय रेल की सिग्नल इंजीनियर्स सेवा के 1980 बैच के अधिकारी हैं। आप अगस्त, 2018 से रेलवे बोर्ड में महानिदेशक (संकेत एवं दूरसंचार) के पद पर कार्यरत थे।

श्री काशीनाथ जबलपुर के गर्वमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रॉनिक्स तथा टेलीकम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में स्नातक हुए। 1980 में पास आउट करने के बाद लगभग डेढ़ वर्षों तक आपने नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन में काम किया और फरवरी, 1982 में रेलवे में शामिल हुए। वह उत्तर रेलवे में शुरू की गई ट्रेन डिस्क्राइबर परियोजना, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के विभिन्न सेक्शनों पर ऑप्टिकल फाइबर केबल की प्रारंभिक तैनाती तथा उत्तर पूर्व फ्रंटियर रेलवे में जीएसएमआर का इस्तेमाल करते हुए मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्यूनिकेशन परियोजना के लिए सर्वेक्षण से जुड़े रहे। 2003 में आपको दक्षिण रेलवे में चीफ सिग्नल इंजीनियर तथा चीफ सिग्नल तथा टेलीकॉम इंजीनियर (परियोजना) के रूप में पदस्थापित किया गया, जहां वह भारतीय रेल की पहली ट्रेन सुरक्षा चेतावनी प्रणाली (टीपीडब्ल्यूएस) परियोजना से जुड़े थे। यह परियोजना 2008 में चालू की गई थी। श्री काशीनाथ 2010 में विशाखापत्तनम में मंडल रेल प्रबंधक बने। वह 2012 में दक्षिण पूर्व रेलवे, कोलकाता के मुख्य सुरक्षा अधिकारी बने। बाद में उन्होंने मेट्रो रेल कोलकाता के प्रधान मुख्य सिग्नल तथा टेलीकॉम इंजीनियर के रूप में काम किया। अक्टूबर, 2016 में आपने अतिरिक्त सदस्य सिग्नल रेलवे बोर्ड के रूप में काम किया और अगस्त, 2018 में महानिदेशक (संकेत एवं दूरसंचार) के रूप में पदोन्नत किया गया। ■

लेखकगण कृपया ध्यान दें!

★

कहानी, कविता, संस्करण,
पर्यटन, स्वास्थ्य

इत्यादि विषयों पर कृपया 800 से 1000 शब्दों का मौलिक लेख (फोटो सहित)

editorbhartiyarail@gmail.com

पर मेल कर दें।

प्रकाशित लेखों के लिए उचित मानदेय भी दिया जायेगा।

रेलवे बोर्ड में 64वां रेलवे सप्ताह समारोह संपन्न

दीप प्रज्ज्वलित कर 64वें रेल सप्ताह समारोह का शुभारंभ करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव, साथ में है वित्त आयुक्त (रेलवे), विजय कुमार, सदस्य इंजीनियरी, विश्वेश चौबे, सदस्य कार्मिक, एस.एन. अग्रवाल, सदस्य सामग्री प्रबंधन, वी.पी. पाठक (बाएं) एवं लेखन सामग्री शाखा एवं ओएंडएम शाखाओं (संयुक्त रूप से) को रनिंग एफिशिएन्सी शील्ड प्रदान करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड (दाएं)

रेलवे बोर्ड का 64वां रेलवे सप्ताह समारोह 12 अप्रैल को रेल भवन में आयोजित किया गया। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष वी.के. यादव ने समारोह की अध्यक्षता की और वर्ष 2018-19 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए रेलवे बोर्ड के विभिन्न पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों को रनिंग एफिशिएंसी शील्ड, मेरिट प्रमाणपत्र एवं अन्य पुरस्कार प्रदान किए। रेलवे बोर्ड के अन्य सदस्य और वरिष्ठ अधिकारीगण भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री यादव ने रेलवे बोर्ड की स्टेशनरी और ओएंडएम शाखाओं (संयुक्त रूप से) को रनिंग एफिशिएंसी शील्ड प्रदान की जिनका चयन दक्षता के उच्च मानकों का पालन करने, मामलों का त्वरित निपटारा करने और अभिलेखों (रिकॉर्ड) का उत्कृष्ट रखरखाव करने के लिए 'सर्वश्रेष्ठ रखरखाव वाली शाखा' के रूप में किया गया है। इसके अलावा, रेलवे बोर्ड के उत्कृष्ट रखरखाव करने वाले दो अन्य अनुभागों जैसे प्रोजेक्ट और ईआरबी-V शाखाओं को मेरिट सर्टिफिकेट और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

वित्त वर्ष 2018-19 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए रेलवे बोर्ड के 45 पदाधिकारियों को मेरिट सर्टिफिकेट एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा, अंतर-मंत्रालय और ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज टूर्नामेंटों में सराहनीय प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए प्रशस्ति पत्रों के साथ 49 नकद पुरस्कार विभिन्न खिलाड़ियों को और 10 नकद पुरस्कार सांस्कृतिक कलाकारों को प्रदान किये गए। ■

मध्य रेल

देवेंद्र कुमार शर्मा, महाप्रबंधक, मध्य रेल ने 13 अप्रैल, 2019 को वाई.वी. चव्हाण सभागार, मुंबई में आयोजित एक भव्य समारोह में 194 रेलवे कर्मचारियों और अधिकारियों को व्यक्तिगत पुरस्कार प्रदान किए एवं संपूर्ण दक्षता शील्ड मुंबई मंडल को प्रदान की गई। उन्होंने मंडलों कार्यशालाओं, रेलवे स्टेशनों को 21 अंतर-मंडलीय दक्षता शील्ड भी दी।

महाप्रबंधक की संपूर्ण दक्षता शील्ड मुंबई मंडल को प्रदान की गई जिसे एस.के. जैन, मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई मंडल ने अपर मंडल रेल प्रबंधकों एवं सभी शाखा अधिकारियों के साथ प्राप्त की। मुंबई मंडल ने इलेक्ट्रिकल, सिग्नल और टेलीकॉम, मेडिकल, स्टोर्स की शील्ड एकल रूप से जीती जबकि इंजीनियरिंग और मैकेनिकल शील्ड भुसावल और पुणे डिवीजन के साथ संयुक्त रूप से जीती; नागपुर मंडल ने

कमर्शियल शील्ड, भुसावल मंडल ने सिक्योरिटी शील्ड, सोलापुर मंडल ने सेफ्टी शील्ड जबकि पुणे मंडल ने पंक्चुएलिटी शील्ड जीती। स्वच्छता के लिए बेस्ट स्टेशन का पुरस्कार भुसावल मंडल के नासिक रोड स्टेशन ने एवं बेस्ट केप्ट गार्डन का पुरस्कार नागपुर मंडल के अजनी स्टेशन ने जीता। ■

पश्चिम रेलवे

पश्चिम रेलवे का 64वाँ रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह 12 अप्रैल, 2019 को मुंबई के यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान सभागृह में सम्पन्न हुआ। वर्ष 2018-19 के दौरान समग्र क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु महाप्रबंधक की प्रतिष्ठित कार्यकुशलता शील्ड रतलाम मंडल ने जीती। महाप्रबंधक ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट निष्पादन के लिए विभिन्न मंडलों तथा कारखानों को कुल 23 दक्षता शील्डें प्रदान कीं। मुंबई सेंट्रल मंडल को वाणिज्य, यांत्रिक और सुरक्षा शील्डें प्राप्त हुई एवं सिविल इंजीनियरिंग में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन हेतु मुंबई सेंट्रल तथा रतलाम मंडल ने संयुक्त रूप से शील्ड हासिल की। ऊर्जा दक्षता में बेहतर निष्पादन हेतु मुंबई सेंट्रल मंडल तथा राजकोट मंडल ने संयुक्त रूप से शील्ड हासिल की। परिचालन शील्ड मुंबई सेंट्रल मंडल एवं वडोदरा मंडल ने संयुक्त रूप से हासिल की।

रतलाम मंडल के चित्तौड़गढ़ रनिंग रूम को सर्वश्रेष्ठ

रख-रखाव वाला रनिंग रूम घोषित किया गया। साबरमती डिस्ट्रिक्ट इकाई को भंडार विभाग की दक्षता शील्ड से सम्मानित किया गया। महाप्रबंधक ने 153 रेलकर्मियों को भी योग्यता प्रमाणपत्र, कार्यकुशलता पदक एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर उनकी सराहनीय सेवाओं तथा विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया। ■

आरडीएसओ

11 अप्रैल, 2018 को आरडीएसओ में 64वाँ रेल सप्ताह समारोह आयोजित किया गया। वीरेन्द्र कुमार, महानिदेशक, आरडीएसओ ने उत्कृष्ट और सराहनीय सेवाओं के लिए 59 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आरडीएसओ के नये आडीटोरियम में पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस समारोह में बड़ी संख्या में आरडीएसओ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर महानिदेशक द्वारा 'सर्वोत्तम अनुरक्षित कार्यालय' के लिए चल दक्षता शील्ड, कार्मिक निदेशालय एव बीएंडएस निदेशालय को संयुक्त रूप से और भू-तकनीकि प्रयोगशाला को 'प्रथम सर्वोत्तम अनुरक्षित प्रयोगशाला' तथा फटीग प्रयोगशाला को 'द्वितीय सर्वोत्तम अनुरक्षित प्रयोगशाला' के लिए तथा प्रोजेक्ट मेनेजमेंट शील्ड-परीक्षण निदेशालय को

प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त स्वच्छता शील्ड/मोस्ट क्लीन आफिस के लिए -ट्रैक डिजाइन एवं चालन शक्ति निदेशालय को संयुक्त रूप से प्रदान की गई तथा फटीग परीक्षण लैब को मोस्ट क्लीन प्रयोगशाला के लिए प्रदान की गई। ■

पूर्वोत्तर रेलवे

'64 वें रेल सप्ताह समारोह' के अवसर पर 23 अप्रैल को सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में आयोजित रेल सप्ताह पुरस्कार वितरण समारोह में पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक राजीव अग्रवाल ने विभिन्न विभागों के 118 रेलकर्मियों को उनकी विशिष्ट एवं उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रशस्तिपत्र, मेडल एवं नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। श्री अग्रवाल ने विभिन्न श्रेणियों में अन्तरमडलीय कार्यकुशलता शील्ड एवं ट्रॉफियाँ भी प्रदान कीं। सर्वांगीण कार्यकुशलता शील्ड लखनऊ मंडल को प्रदान की गई। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने हाल ही में वाराणसी में आयोजित अन्तर रेलवे सांस्कृतिक प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कलाकारों को भी पुरस्कृत किया।

पुरस्कार वितरण के पूर्व, पूर्वोत्तर रेलवे कला समिति के कलाकारों द्वारा मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर श्रीमती अलका अग्रवाल, अध्यक्ष, पूर्वोत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन एवं सदस्यायें, अपर महाप्रबंधक आनन्द प्रकाश, सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष, मंडलों के मंडल रेल प्रबंधक, वरिष्ठ रेल अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे। प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी एल.बी. राय ने महाप्रबंधक सहित सभी वरिष्ठ रेल अधिकारियों, कर्मचारियों तथा पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का स्वागत किया। सनत जैन, उप मुख्य कार्मिक अधिकारी/अराजपत्रित ने आगतजनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। संजय यादव, मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी ने समारोह का सफल संचालन किया। ■

उत्तर मध्य रेलवे

30 अप्रैल को उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में 64वें वार्षिक रेल सप्ताह समारोह के मुख्य कार्यक्रम के तहत महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी द्वारा अध्यक्षा, उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन श्रीमती ललिता चौधरी की उपस्थित में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 18 अधिकारियों और 64 कर्मचारियों को महाप्रबंधक पुरस्कार से तथा प्रयागराज में आयोजित हुये कुम्भ मेले के दौरान उत्कृष्ट कार्यों से उत्तर मध्य रेलवे को गौरवान्वित करने वाले कर्मचारियों के 50 ग्रुपों को भी सामूहिक पुरस्कार प्रदान किये गये।

इसी क्रम में इलाहाबाद मंडल को सर्वात्तम मंडल शील्ड, रेल पथ (ट्रैक) शील्ड, वाणिज्यिक विभाग दक्षता शील्ड, समग्र इंजीनियरिंग दक्षता शील्ड, इलेक्ट्रिक लोको शेड शील्ड, सामान्य सेवा एवं ऊर्जा दक्षता शील्ड, चिकित्सा शील्ड, सवारी माल डिब्बा दक्षता शील्ड, परिचालन विभाग दक्षता शील्ड, संरक्षा दक्षता शील्ड, सुरक्षा दक्षता शील्ड, कार्य दक्षता शील्ड, समग्र सुधार शील्ड मंडल, आगरा मंडल को समय पालन में सुधार शील्ड, कार्मिक विभाग दक्षता शील्ड, दूर संचार शील्ड, खेलकूद शील्ड, कार्य बागवानी शील्ड, रनिंग रूम एवं ड्राइवर लॉबी शील्ड, ट्रैक्शन डिस्ट्रीब्यूशन शील्ड, तथा झांसी मंडल को लेखा विभाग दक्षता शील्ड, ब्रिज शील्ड, ओ एण्ड एफ दक्षता शील्ड, यात्री सुरक्षा शील्ड, सिगनल शील्ड, स्क्रैप संग्रहरण शील्ड, राजभाषा शील्ड, जन सम्पर्क समग्र दक्षता शील्ड प्राप्त हुई।

इसी क्रम में वैगन मरम्मत कारखाना, झांसी को सर्वोत्तम कारखाना शील्ड, आगरा कैण्ट को स्टेशन साफ सफाई शील्ड, खजुराहो को सर्वोत्तम स्टेशन प्रमाणपत्र, केंद्रीय चिकित्सालय, इलाहाबाद को सर्वोत्तम चिकित्सालय शील्ड, बांदा स्वास्थ्य केंद्र को सर्वोत्तम स्वास्थ्य केन्द्र शील्ड, वैगन मरम्मत कारखाना, झांसी को कारखाना दक्षता शील्ड, सामान्य भण्डार डिपो, झांसी को भण्डार दक्षता शील्ड प्रदान की गई। ■

उत्तर रेलवे

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, टी.पी. सिंह ने 10 अप्रैल को उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय में आयोजित रेल पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उत्तर रेलवे की अपर महाप्रबंधक, सुश्री अर्चना जोशी, विभिन्न विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी, उत्तर रेलवे के कर्मचारी, यूनियनों, एसोसिएशनों और फेडरेशनों के सदस्यगण, उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा, श्रीमती हरिन्दर कौर एवं अन्य सदस्याएं उपस्थित थीं।

कार्यक्रम शुरुआत महाप्रबंधक द्वारा उत्कृष्ट सेवा करने वाले 204 रेलकर्मियों को पुरस्कृत किया गया। कार्य-निष्पादन मानकों के आधार पर महाप्रबंधक द्वारा 15 रनिंग शील्डें प्रदान की गईं। लखनऊ और अम्बाला मंडल को संयुक्त रूप से 'महाप्रबंधक उत्कृष्टता शील्ड' प्रदान की गई। सभी क्षेत्रों में 'सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन' के लिए दिल्ली मंडल को शील्ड प्रदान की गई। फिरोजपुर मंडल और मुरादाबाद मंडल को संयुक्त रूप से मितव्ययिता के लिए पुरस्कृत किया गया। बेस्ट इम्प्रूव्ड डिवीजन शील्ड दिल्ली मंडल को प्रदान की गई। ■

उत्तर पश्चिम रेलवे

उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा 64वां रेल सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक राजेश तिवारी ने उत्तर पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शील्डें प्रदान की। समारोह में कुल 33 शील्ड प्रदान की गई, जिसमें अजमेर मंडल को 7, जोधपुर मंडल को 8, बीकानेर मंडल को 4 एवं जयपुर मंडल को 7 शील्ड प्रदान की गई। बीकानेर-जयपुर मंडल को 2, बीकानेर-जोधपुर मंडल को 2, अजमेर-जयपुर मंडल को 2 शील्ड तथा जोधपुर-अजमेर मंडल को 1 शील्ड संयुक्त रूप से 6-6 माह के लिए दी गई। इस वर्ष जोधपुर मंडल को महाप्रबंधक की सम्पूर्ण कार्यकुशलता शील्ड दे कर सम्मानित किया गया।

श्री शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर 130 रेलकर्मियों को महाप्रबंधक स्तर पर पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त 9 सामूहिक पुरस्कार एवं 1 विशेष समूह पुरस्कार सम्पूर्ण महिला स्टेशन, गांधीनगर जयपुर पर कार्यरत महिला कर्मचारियों को प्रदान किये गये। ■

इरकॉन को श्रीलंका रेलवे से 91.27 मिलियन यूएस डॉलर का कांट्रैक्ट अवार्ड

इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड को अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण सफलता मिली है। कंपनी को श्रीलंका रेलवे की ओर से लगभग 91.27 मिलियन यूएस डॉलर का कार्य अवार्ड हुआ है। इस कांट्रैक्ट के अंतर्गत इरकॉन उत्तरी श्रीलंका में माहो से ओमनथाई के बीच रेल लाइन को अपग्रेड करेगा। इस रेल लाइन की लंबाई लगभग 128 किमी है।

यह एक आइटम रेट कांट्रैक्ट है, जिसे भारत के निर्यात-आयात बैंक द्वारा लाइन ऑफ क्रेडिट के तहत फाइनेंस किया जा रहा है। प्रोजेक्ट के अंतर्गत बनाई जाने वाली रेल लाइन पर 120 किमी की रफ्तार से सुरक्षित और उन्नत ट्रांसपोर्ट सेवा प्रदान की जाएगी। इरकॉन ने इससे पूर्व उत्तर श्रीलंका में पांच रेल लाइन परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिसका कुल कांट्रैक्ट मूल्य 645 मिलियन यूएस डॉलर है। ■

भारतीय रेल ने मनाई डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती

15 अप्रैल को भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती भारतीय रेल की विभिन्न क्षेत्रीय रेलों, मंडलों एवं उत्पादन इकाइयों में मनाई गई। इस अवसर पर रेलकर्मियों ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

रेल भवन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, विनोद कुमार यादव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

पश्चिम रेलवे मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जयंती कार्यक्रम में उपस्थित पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

मध्य रेल के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयंती कार्यक्रम पर दीप प्रज्ज्वलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मध्य रेल के महाप्रबंधक डी.के. शर्मा

उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के 128वें जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक टी.पी. सिंह

भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के 128वें जन्म दिवस पर चित्र पर पुष्पमाला अर्पित करते हुए पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक विद्या भूषण

भारत रत्न डॉ. भीम राव अम्बेडकर के 128वें जन्मदिवस समारोह के अवसर पर आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयन्ती पर उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक राजेश तिवारी ने बाबा साहेब के फोटो पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया

भारत रत्न डॉ. भीम राव अम्बेडकर एवं भगवान बुद्ध के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर, कौशल किशोर

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 128वीं जयन्ती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए आरडीएसओ के अपर महानिदेशक ओ.पी. केसरी (बाएं) एवं अपर महानिदेशक, ए.के. मिश्रा (दाएं)

रेल अधिकारी को मिला काका हाथरसी पुरस्कार

19 मार्च को ब्रज कला केन्द्र, दिल्ली एवं काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट के सौजन्य से साईं सभागार में आयोजित एक समारोह में महेश गर्ग बेधड़क को वर्ष 2018 के लिए काका हाथरसी पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर पद्मश्री डॉ. अशोक चक्रधर के अलावा काका हाथरसी ट्रस्ट तथा ब्रज कला केन्द्र के पदाधिकारी, कवयित्री सरोजिनी प्रीतम, कवि तेज नारायण शर्मा, एवं शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उक्त पुरस्कार प्रसिद्ध कवि काका हाथरसी की वसीयत के अनुरूप प्रति वर्ष देश के एक सर्वश्रेष्ठ कवि को दिया जाता है।

श्री गर्ग ने साढ़े उन्नीस वर्ष की आयु में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद आईआईटी, दिल्ली से मास्टर आफ टेक्नालॉजी की उपाधि प्राप्त की। भारतीय रेल सेवा के 1987 बैच के अधिकारी श्री गर्ग ने रेलवे में कई नव प्रवर्तन एवं तकनीकी सुधार किए, जिनके लिए उन्हें महाप्रबंधक पुरस्कार और राष्ट्रीय उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। गर्ग को रेग्युलेटेड डिस्चार्ज कोच टॉयलेट सिस्टम के लिए वर्ष 2005 में डिजाइन पेटेंट दिया गया, जिसका

एक परिवर्धित रूप राजधानी और शताब्दी ट्रेनों में बॉयो टॉयलेट सिस्टम के रूप में फिट किया जाता है।

अपनी पेशेवर उपलब्धियों के साथ-साथ, महेश गर्ग एक निपुण हिन्दी कवि हैं, जिन्हें साहित्य प्रेमी 'बेधड़क' के रूप में जानते हैं। उन्होंने लाल किले के प्रतिष्ठित गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन, आगरा के ताज महोत्सव, गाजियाबाद के अट्टहास कवि सम्मेलन, दिल्ली के श्री राम कवि सम्मेलन, जयपुर के महामूर्ख सम्मेलन, और 'सब' टीवी के 'वाह-वाह' सहित सैकड़ों कवि सम्मेलनों में भाग लिया है। ■

अवसंरचना विस्तार से गतिशीलता बढ़ाती : राइट्स

राजीव मेहरोत्रा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, राइट्स लिमिटेड

परिवहन और गतिशीलता राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन, रोजगार और आय के स्तर से जुड़े हैं। उच्च घनत्व परिवहन, अवसंरचना और उच्च स्तरीय नेटवर्क को आमतौर पर उच्च स्तर के विकास से जोड़कर देखा जाता है, क्योंकि इससे बाजारों में बेहतर पहुंच मिलती है जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक गुणक प्रभाव पड़ता है। एक सेक्टर के रूप में परिवहन का आमतौर पर सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 6 से 12% योगदान होता है।

सरकार को अर्थव्यवस्था के रूपांतरण के लिए सदैव आगे आना चाहिए। हमें उन निवेशों को प्राथमिकता देने की जरूरत है जिससे प्रमुख सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं के जवाबदेह पूर्ण वितरण पर कड़ाई से ध्यान केंद्रित किया जा सके। सार्वजनिक-निजी भागीदारी का इष्टतम स्तर प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, शहरी जल आपूर्ति तथा कनेक्टिविटी की और बेहतर आपूर्ति, उद्यमिता को बढ़ावा देने और निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए नीतियां बनाई गई हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के प्रति भारत प्रतिबद्ध है।

वर्ष 2022-23 तक 9% की वार्षिक वृद्धि दर का लक्ष्य है : पर्याप्त संख्या में रोजगार पैदा हों और सभी खुशहाल हों। सरकार द्वारा निवेश की दर जैसा कि जीएफसीएफ द्वारा मापी गई है, को वर्ष 2022 तक जीडीपी के मौजूदा 29 से बढ़ाकर 36% करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें से लगभग आधी वृद्धि सार्वजनिक निवेश से आएगी, जिससे जीडीपी में वृद्धि होगी।

भारत सरकार ने विकास की गति में तेजी लाने के लिए जिन प्रमुख लक्ष्यों को निर्धारित किया है, उनमें इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र का विकास भी शामिल है। इससे निजी क्षेत्र को राष्ट्र निर्माण में भागीदारी करने का प्रोत्साहन मिला है। इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में गतिविधियां बढ़ने के फलस्वरूप परामर्श और परियोजना प्रबंधन सेवाओं के लिए मांग में वृद्धि हुई है। माल और यात्रियों के सहज आवागमन के लिए मौजूदा परिवहन बुनियादी ढांचे और नए तथा आधुनिक बुनियादी ढांचे के निर्माण की क्षमता का विस्तार करने में अपनी भूमिका निभाने के लिए एक अग्रणी इंजीनियरिंग परामर्शीय और परिवहन इन्फ्रास्ट्रक्चर और परियोजना प्रबंधन कंपनी के रूप में राइट्स पूर्णतः तत्पर है, चाहे ये यात्रियों के लिए हाई स्पीड रेल कॉरिडोर का मामला हो, डेडीकेटेड फ्रेट रेल कॉरिडोर हो, रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास हो, भारत माला

राइट्स द्वारा श्रीलंका रेलवे को अनुकूलित डीएमयू एवं लोकोमोटिव्स का निर्यात किया गया

सड़क परियोजना हो या कोई अन्य बुनियादी ढांचागत विकास परियोजनाए हो।

भारत के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचा बनाने के लिए अवसर का सदुपयोग करने के लिए राइट्स बहुत अच्छी स्थिति में है। एकीकृत परिवहन प्रणाली (इंटीग्रेटेड ट्रांसपोर्ट सिस्टम) में इसका प्रमुख योगदान है। कंपनी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में उच्च तकनीकी इंजीनियरिंग परामर्श प्रदान करने के लिए जानी जाती है। अफ्रीका, मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका के 55 से अधिक देशों में इसका 44 से अधिक वर्षों का अनुभव है। मेट्रो रेलवे, हाई स्पीड रेल, राजमार्ग, हवाई अड्डों और बंदरगाहों जैसी बड़ी परिवहन परियोजनाओं की पूर्व-व्यवहार्यता/डीपीआर का कार्य करने के लिए यह भारत सरकार का पसंदीदा परामर्शी संगठन है। इसकी भारत सरकार और कई विदेशी सरकारों के लिए परिवहन अवसंरचना योजनाओं की संकल्पना में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। राइट्स की हाल ही की अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय परियोजनाओं में मेट्रो परियोजनाएं, रेलवे विद्युतीकरण और दोहरीकरण परियोजनाएं, लोकोमोटिव के पट्टे, डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, लॉजिस्टिक्स पार्क, ग्रीन एनर्जी सेक्टर, ब्राउनफील्ड/ग्रीनफील्ड रेलवे कार्यशालाओं की स्थापना और अनुकूलित रोलिंग स्टॉक निर्यात शामिल हैं। राइट्स के पास ग्राहक की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए-नए समाधान प्रदान करने के लिए प्रबंधन और तकनीकी क्षेत्र के अनुभवी बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

इसके साथ-साथ अन्य विभिन्न पहलों के माध्यम से, राइट्स सन् 2005 से डेडिकेटिड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) के अध्ययन कार्यों में शामिल है। अब ये कॉरिडोर कार्यान्वयन के चरण में हैं तथा इन्हें अगले 2-3 वर्षों में चरणबद्ध तरीके से खोला जाएगा। राइट्स ने कानपुर, गुवाहाटी, मेरठ, आगरा, पटना, वाराणसी, गोरखपुर, श्रीनगर, जम्मू सहित भारत में लगभग 13-14 मेट्रो परियोजनाओं की व्यवहार्यता/परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) का कार्य किया है। राइट्स भारत में मोनोरेल तथा कम्प्यूटर रेल प्रणाली सहित आधुनिक मास रेपिड ट्रांजिट प्रणाली के कार्यान्वयन के लिए परियोजना डिजाइन, विकास तथा प्रबंधन सेवाएं प्रदान कर रहा है। दिल्ली, बेंगलूरु, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर तथा नागपुर सहित देश की मेट्रो रेल परियोजनाओं का कार्य करने के साथ-साथ राइट्स कोलकाता तथा मुंबई में ऑपरेशनल शहरी रेल प्रणालियों के तकनीकी तथा वाणिज्यिक निष्पादन के सुधार का कार्य भी कर रहा है।

हाल ही में कंपनी को गांधीनगर तथा अहमदाबाद में मेट्रो रेल लिंक एक्सप्रेस के लिए छः ऐलिवेटिड मेट्रो स्टेशनों का विस्तृत डिजाइन परामर्श तथा दिल्ली-चंडीगढ़-अमृतसर के मध्य उच्च-गति (हाईस्पीड) रेल कॉरिडोर के लिए व्यवहार्यता रिपोर्ट का कार्य प्राप्त हुआ है।

सदैव सक्रिय भूमिका निभाने वाली कंपनी राइट्स ने रेल, वायु, सड़क, जलमार्ग संपर्क परियोजनाओं की विकास प्रक्रिया में भाग लेकर गतिशीलता को सक्षम करने का प्रयास किया है। परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए अवसंरचना परियोजनाओं की निगरानी तथा पहचान की गई परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण को प्राथमिकता देने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

राइट्स ने डीजल लोकोमोटिव्स वर्क्स, वाराणसी द्वारा निर्मित डीजल इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव्स का निर्यात किया

कंपनी को प्राप्त कार्यों में नोएडा से आगरा तक यमुना एक्सप्रेस-वे के लिए सलाहकार परामर्शी सेवाएं, पश्चिम बंगाल में हुगली नदी पर अत्याधुनिक अतिरिक्त डोज्ड केबल स्टे पुल, पटना व मुंगेर में गंगा पुल और बोगीबील में ब्रह्मपुत्र पुल विशेष उल्लेखनीय कार्य हैं।

बोगीबील पुल से ब्रह्मपुत्र के उत्तरी और दक्षिणी किनारों के बीच

संपर्क बढ़ा है। यह भारतीय रेल का सबसे लंबा रेल सह सड़क पुल है और एशिया का दूसरा सबसे लंबा रेल पुल है। राष्ट्र के लिए अत्यधिक आर्थिक और सामरिक महत्त्व के कारण इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया गया है। यह ऊपरी असम, अरुणाचल प्रदेश और उत्तर पूर्व भारत के अन्य दूरदराज के हिस्सों को जोड़ेगा। यह वर्तमान में अपर्याप्त, धीमी और असुरक्षित नौका सेवाओं पर निर्भर लगभग 5 मिलियन की आबादी के लिए, विशेषत: बाढ़ के दौरान, सहायक होगा। डिब्रूगढ़ से मालवाहक यात्रा अब 100 किमी से कम हो जाएगी, जिसके लिए पहले अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए 600 किमी से अधिक की दूरी तय करनी पड़ती थी। राइट्स ने पूर्व-व्यवहार्यता अध्ययन के चरण से लेकर परियोजना के विभिन्न चरणों में परामर्श सेवाएं प्रदान की हैं; जिसमें निर्माण के दौरान भू-तकनीकी जांच, विस्तृत इंजीनियरिंग अध्ययन, विस्तृत डिजाइन, नदी प्रशिक्षण और संरक्षण कार्य, डिजाइनर पर्यवेक्षण शामिल हैं और अब पुल के संचालन के दौरान संरचनात्मक स्थिति और निगरानी प्रणाली के कार्यों से जुड़ी रहेगी।

राइट्स ने भारत की 11 किमी सबसे लंबी पीर पंजाल रेलवे सुरंग के लिए विस्तृत डिजाइन और निर्माण पर्यवेक्षण कार्य किया है जिसमें एक न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग विधि अपनाई गई है। अब यह उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना के एक भाग के रूप में चालू है।

भारतीय रेल को उसके परिवहन नेटवर्क का सृजन एवं विस्तार करने में सहायता प्रदान करने के लिए राइट्स अपनी सेवाओं को आगे बढ़ाते हुए दक्षिण मध्य रेलवे के गूटी से धर्मावरम सेक्शन (90 किमी) का दोहरीकरण करने, दक्षिण मध्य रेलवे के अनूपपुर-पेंड्रा रोड सेक्शन (50 किमी) की तीसरी लाइन और उत्तर पश्चिम रेलवे के रींगस-जयपुर-सवाई माधोपुर सेक्शन (188 किमी) के कार्यों को कर रहा है।

राइट्स रेलवे कार्यशालाओं के उन्नयन/आधुनिकीकरण के लिए मशीनरी और संयंत्र के निर्माण, आपूर्ति, स्थापना और कमीशन के लिए कई प्रतिष्ठित टर्नकी कार्यों को कर रही है। प्रमुख परियोजनाओं में आरसीएफ-कपूरथला के लिए बज बज में फिएट बोगी फ्रेम निर्माण संयंत्र स्थापित करने, इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईएफसी), चेन्नै में एक फिएट बोगी फ्रेम निर्माण संयंत्र के लिए मशीनरी और उपकरण की स्थापना और कुल्टी पश्चिम बंगाल में एक वैगन निर्माण कारखाना, 50:50 के रूप में जेवीसी राइट्स और सेल के बीच 1200 वैगन/वार्षिक और न्यूनतम 300 वैगन/वार्षिक पुनर्वास के कार्य

अंतरराष्ट्रीय सीमा पर लोगों के लिए व्यापार एवं आवागमन के लिए सहज संपर्क, परिवहन और इंफ्रास्ट्रक्चर समाधान प्रदान करने के लिए पीएमसी परामर्शी राइट्स के माध्यम से एमईए द्वारा कार्यान्वित एकीकृत चेक पोस्ट (आईसीपी) बीरगंज, नेपाल

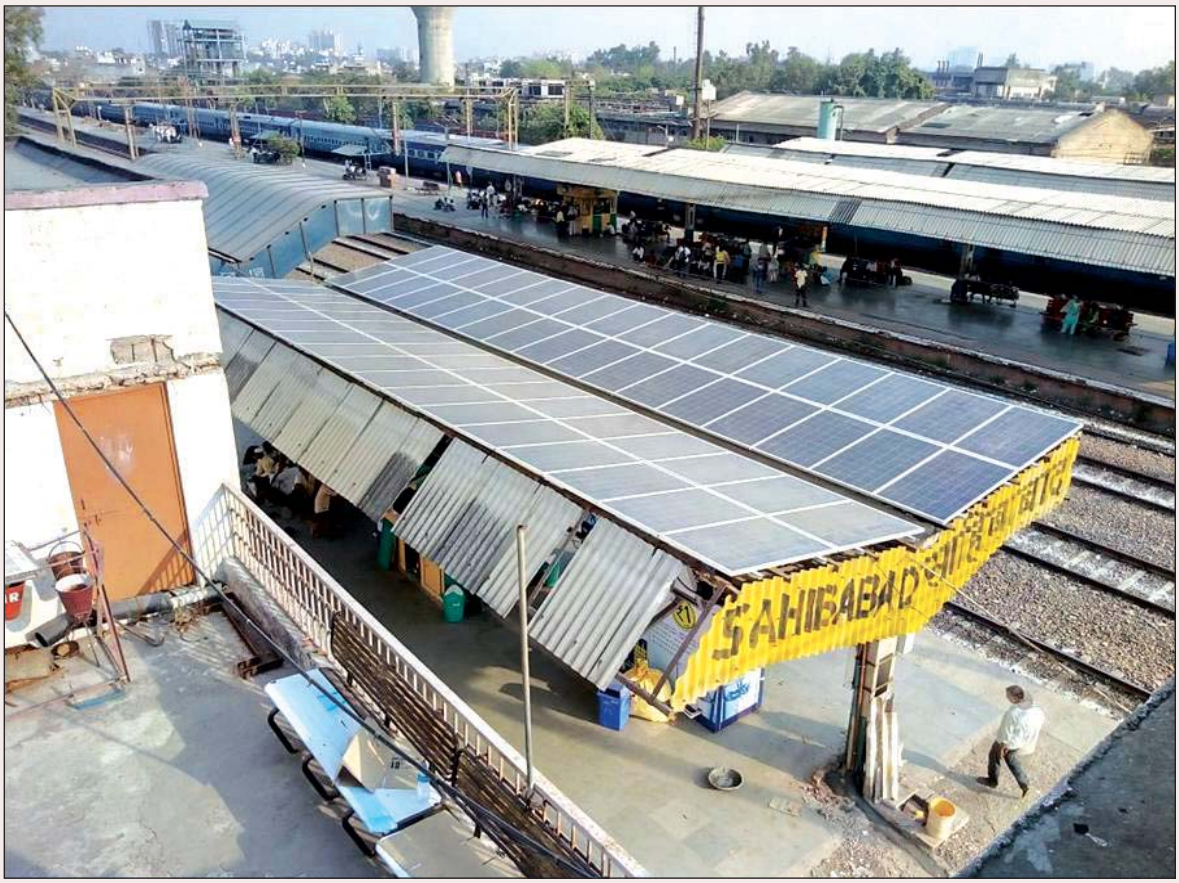

आरईएमसीएल की सीएसआर गतिविधि के तहत प्लेटफॉर्म नंबर 1 साहिबाबाद, गाजियाबाद में एस्बेस्टस छत के बजाय साहिबाबाद रेलवे स्टेशन पर शेल्टर की छत पर 16 किलोवाट के ग्रिड सोलर फोटोवोल्टिक बिजली संयंत्र की स्थापना की गई

शामिल हैं। कंपनी लोको लीजिंग भी प्रदान करती है जिससे उसके ग्राहकों को लोकोमोटिव मिल सके। अब तक, कंपनी के पास 46 लोकोमोटिव हैं। अगले 2-3 वर्षों के भीतर, इस संख्या को 60 लोकोमोटिव तक बढ़ाया जाएगा।

भारत और विदेशों में 100 से अधिक हवाई अड्डे के परामर्श कार्यों में शामिल, राइट्स, विमानपत्तन प्राधिकरण के साथ मिलकर भारत में ग्रीनफील्ड्स हवाई अड्डों का निर्माण करने में लगी हुई है। इसके अलावा, यह क्रमशः पाकिस्तान और बांग्लादेश के सीमावर्ती अटारी, अगरतला और पेट्रापोल में एकीकृत चेक पोस्ट की स्थापना करके व्यक्तियों, वाहनों और सामानों के सुगम सीमा-पार संचलन में सहायता कर रही है। ये भूमि सीमा पर समर्पित यात्री और कार्गो टर्मिनलों के साथ बहुउद्देशीय सुरक्षित जोन हैं।

राइट्स जिन बंदरगाहों और जल संसाधन परियोजनाओं में कार्य कर रही है उनमें आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल के साथ-साथ केन्या, म्यांमार, नेपाल, मॉरीशस, श्रीलंका और इंडोनेशिया में ग्रीन फील्ड पोर्ट स्थापित करना शामिल है।

विविधीकरण के रूप में, राइट्स ने नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को विकसित करने, प्रतिस्पर्धात्मक बिजली खरीद की सुविधा और ऊर्जा दक्षता परियोजनाओं का कार्य करने के लिए भारतीय रेल के साथ एक संयुक्त उद्यम कंपनी 'रेलवे ऊर्जा प्रबंधन कंपनी लिमिटेड' (आरईएमसीएल) बनाई है। इसका उद्देश्य भारतीय रेल के लिए पवन/सौर ऊर्जा प्राप्त करना तथा पॉवर एक्सचेंजों के माध्यम से प्रत्यक्ष बिजली खरीद/ट्रेडिंग के माध्यम से ऊर्जा लागत का अनुकूलन करना है। भारतीय रेल की कैप्टिव खपत के लिए राजस्थान के जैसलमेर में 26 मेगावाट का पवनचक्की फार्म स्थापित किया गया है, आरईएमसीएल ने लगभग 1000 मेगावाट बिजली की खरीद की भी शुरुआत की है, जिसके फलस्वरूप केवल पिछले 2-3 वर्षों की अल्प अवधि में भारतीय रेल को 2000 करोड़ रुपये से अधिक की बचत की हुई है।

राइट्स आगे बढ़ने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी विशाल क्षमता का सदुपयोग करना चाहेगा। संक्षेप में, राइट्स देश के परिवहन और बुनियादी ढांचे की जरूरतों विशेष रूप से उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों जैसे हैवी हॉल, उच्च गति रेल, मेट्रो रेल, लांग स्पैन डिलीवरी एवं टनल और गुणवत्ता सुनिश्चित करने और परियोजनाओं की समय पर डिलीवरी के लिए एक मात्र हल (वन-स्टॉप सॉल्यूशन) है। अपने अधिकारियों व कर्मचारियों की प्रतिभा और अपने कारोबार-मॉडल के लचीलेपन में दृढ़ विश्वास के बल पर, राइट्स आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है। ■

'प्रोजेक्ट उत्कृष्ट' के अन्तर्गत हावड़ा – यशवंतपुर दूरंतो एक्सप्रेस का उन्नयन

'प्रोजेक्ट रेक' के तहत उन्नयन के पश्चात् हावड़ा-यशवंतपुर दुरंतो एक्सप्रेस का आंतरिक एवं बाहरी दृश्य

भारतीय रेल ने अप्रैल, 2018 में मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में चलने वाले कोचों की स्थिति में सुधार करने हेतु 66 जोड़ी ट्रेनों के 140 रेकों के उन्नयन के लिए 'प्रोजेक्ट उत्कृष्ट' का शुभारंभ किया। 'प्रोजेक्ट उत्कृष्ट' के तहत 12245/12246 हावड़ा-यशवंतपुर दूरंतो एक्सप्रेस की पहली अपग्रेडेड रेक 1 फरवरी को हावड़ा से यशवंतपुर के लिए रवाना हुई। इस वित्तीय वर्ष के भीतर हावड़ा-यशवंतपुर दूरंतो एक्सप्रेस के शेष दो रेक का उन्नयन कार्य भी पूरा कर लिया जाएगा।

दक्षिण पूर्व रेलवे की 'प्रोजेक्ट उत्कृष्ट' के तहत अपग्रेड होने वाली यह दूसरी ट्रेन है। इससे पहले दिसंबर, 2018 में 22213/22214 शालीमार-पटना दूरंतो एक्सप्रेस के एक रेक का उन्नयन कार्य पूरा किया गया एवं 24 दिसंबर, 2018 को चालू कर दिया गया।

22891/22892 हावड़ा-रांची इंटरसिटी एक्सप्रेस के दो रेक को भी जल्द ही प्रोजेक्ट उत्कृष्ट के तहत अपग्रेड किया जाएगा। ■

राजधानी एक्सप्रेस के कोच होंगे झटकों से मुक्त

एलएचबी डिब्बों वाली ट्रेन जैसे राजधानी एक्सप्रेस के यात्रियों द्वारा यात्रा के दौरान झटकों के कारण होने वाली असुविधा के बारे में नियमित शिकायत मिलने के बाद भारतीय रेल ने इसकी विशेषज्ञ कमेटी से जांच करायी। कमेटी ने पाया कि यात्रा के दौरान कोचों के सेन्टर बफर कपल (सी.बी.सी.) में अधोमुखी झटके उत्पन्न हो रहे थे। जांच के बाद कमेटी ने ड्राफ्ट गियर के सिंगल पैक एवं फ्लोटिंग प्लेट ड्राफ्ट गियर सीबीसी को बैलेंस्ड ड्राफ्ट गियर सीबीसी से बदलने का सुझाव दिया। नयी तकनीक का प्रयोग करते हुए यात्रियों को झटकों से मुक्त आरामदेह यात्रा प्रदान करने के लिए भुवनेश्वर कोचिंग डिपो में राजधानी एक्सप्रेस में प्रयुक्त होने वाले सभी कोचों के पुराने सिंगल प्लेट/फ्लोटिंग प्लेट डिजाइन को हाई टेन्साइल टाइट लॉक सेन्टर बफर कपलर वाले बैलेन्स्ड ड्राफ्ट गियर से बदल दिया गया है। अब, भुवनेश्वर से जाने व यहां आने वाली सभी राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन आधुनिकतम कपलर से युक्त हो चुकी हैं, जिससे रेल यात्रियों को झटकों से मुक्त व निर्बाध सवारी का अनुभव होगा। ट्रेन में दो कोचों को जोड़ने के लिए कपलर का प्रयोग किया जाता है। इससे पहले

लिंके हॉफमैन बुश (एलएचबी) कोचों में प्रयोग किये जाने वाले कपलर के कारण यात्रा के दौरान रेल यात्रियों को कभी-कभी झटके महसूस होते थे। नयी तकनीक वाले सी.बी.सी. में उच्च क्षमता वाला शॉक अब्जॉर्वर लगा है, जिससे एल.एच.बी. कोचों में गति कम करने या गति बढ़ाने के दौरान झटकों की समस्या नहीं आती एवं यात्रियों का सफर आरामदेह बन जाता है। ■

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

उत्तर रेलवे

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस उत्तर रेलवे, प्रधान कार्यालय, बडौदा हाउस, नई दिल्ली में मनाया गया। इस अवसर पर उत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक, टी.पी. सिंह, अपर महाप्रबन्धक, सुश्री अर्चना जोशी एवं अनेक वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे।

उत्तर रेलवे महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए नियमित रूप से कार्यशालाओं और कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिससे हजारों महिलाओं को लाभ पहुंचा है। रेलवे अपनी महिला कर्मचारियों की जरूरतों को लेकर बहुत संवेदनशील है और कार्य स्थलों पर उनकी सुरक्षा और संरक्षा के लिए अनेक उपाय करती है। महिला कर्मचारियों को विभिन्न प्राधिकार प्राप्त हैं जिनके अंतर्गत उनको मातृत्व अवकाश, शिशु देख-भाल अवकाश और परिवार कल्याण को प्रोत्साहन देने के लिए

विशेष अवकाश दिए जाते हैं। मंडलों में कार्यालय परिसरों के भीतर क्रैच चलाए जा रहे हैं ताकि महिला कर्मचारी अपने शिशुओं की देख-भाल को लेकर निश्चिंत रहें। ■

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

8 मार्च, 2019 को अनिल कुमार, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर की उपस्थिति में लगभग 70 रेलवे महिला कर्मचारियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस रेलवे नार्थ इंस्टीट्यूट, बिलासपुर प्रांगण में मनाया गया।

रेलवे सुरक्षा बल के महानिरीक्षक-सह-प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त बिलासपुर की अध्यक्षता में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्ष द्वारा समाज में महिलाओं की भूमिका, योगदान एवं मान-सम्मान से संबंधित मुद्दों पर महिला कर्मचारियों को संबोधित किया गया। नारी सम्मान एवं उनके उत्थान पर जोर दिया गया। इस दौरान सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए अपनी-अपनी प्रतिबद्धता रखी गई। महिलाओं के अधिकारों पर अपने-अपने विचार रखे गये। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक द्वारा रेलवे सुरक्षा बल के निरीक्षक मधुबाला पात्र, उपनिरीक्षक दामिनी भारतीया, उपनिरीक्षक ऊषा बिसेन, सहायक उपनिरीक्षक मुन्नी बाई, आरक्षी/के. पाण्डेय एवं आरक्षी/ए. ज्योति राव को वर्ष-2018 में किये गये उत्कृष्ट कार्य के लिए नगद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। ■

पूर्व तट रेलवे

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पूर्व तट रेलवे के संबलपुर, खोरधा रोड एवं वाल्टियर मंडल में महिला रेल कर्मचारी, ठेका कर्मचारी व महिला यात्रियों के कल्याण हेतु समर्पित तरीके से मनाया गया। इसके तहत महिला सशक्तीकरण पर सेमिनार, महिला ठेका कर्मचारियों के अधिकार को लेकर जागरुकता, महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष रेलवे सुरक्षा जांच, कैंसर जागरुकता एवं अन्य आवश्यक जांच के साथ ही रक्ताल्पता की दवाओं के वितरण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आरपीएफ एवं टीटीइ की ओर से महिला सुरक्षा को लेकर विशेष जांच अभियान चलाया गया। रेलवे के चिकित्सकों की ओर से कैंसर जांच सहित महिला कर्मियों के लिए अन्य महत्त्वपूर्ण जांच का आयोजन किया गया। इसके अलावा महिला दिवस के अवसर पर खोरधा रोड मंडल के तहत भुवनेश्वर, खोरधा रोड, कटक, अनगुल,

पुरी, पलासा, तालचेर, पारादीप, भद्रक, जाजपुर क्योंझर रोड, संबलपुर मंडल के अंतर्गत संबलपुर, बलांगी, टिटिलागढ़ एवं कंटाबान्जी तथा वाल्टियर मंडल के तहत विशाखापट्नम, विजयनगरम एवं रायगड़ा स्टेशनों पर भी विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ■

उत्तर मध्य रेलवे

8 मार्च, 2019 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय स्थित मंडल सभागार में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन इलाहाबाद मंडल की अध्यक्षा श्रीमती अंजू अमिताभ, उपाध्यक्षा श्रीमती राखी द्विवेदी, राखी गुप्ता एवं अन्य सदस्याएं तथा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में कार्यरत महिला कर्मचारियों ने भाग लिया।

श्रीमती अंजू अमिताभ ने अपने सम्बोधन में कहा कि महिलाएं आज किसी क्षेत्र में पीछे नहीं है आज महिलाएं पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलकर खड़ी हैं जमीन से लेकर आसमान तक कोई क्षेत्र महिलाओं से अछूता नहीं है और कहा कि पुरुषों को महिलाओं के प्रति सदैव सकारात्मक सोच रखनी चाहिए तथा महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि ही महिला सशक्तिकरण है। मंडल में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 16 महिला कर्मचारियों को सर्टिफिकेट तथा नकद राशि प्रदान कर पुरष्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त 80% से अधिक अंक प्राप्त करने वाली हाई स्कूल की 20 छात्राओं को तथा इंटर मीडिएट की 17 छात्राओं को नकद तथा प्रशस्ति पत्र एवं उनकी माताओं को भी गिफ्ट प्रदान किया गया। साथ ही साथ निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 13 बच्चों को तथा पेंटिंग प्रतियोगिता में 12 बच्चों को लंच बॉक्स देकर पुरस्कृत किया गया। ■

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना (चिरेका) प्रशासनिक भवन, बैठक कक्ष में महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रवीण कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक, चिरेका एवं श्रीमती सुनीता मिश्रा, अध्यक्षा, चिरेका, महिला कल्याण संगठन एवं संगठन की अन्य सदस्याएं उपस्थित थीं।

डॉ. (श्रीमती) टुलू चक्रवर्ती, सीनियर डी.एम.ओ, के.जी. अस्पताल, चित्तरंजन सह आयोजक सचिव सहित इस अवसर पर चिरेका महिला कल्याण संगठन की अन्य सदस्यायों के साथ-साथ चिरेका के मुख्य विभागाध्यक्ष, वरीय अधिकारीगण तथा चिरेका की महिला कर्मचारीगण उपस्थित थीं।

प्रवीण कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक, चिरेका ने अपने वक्तव्य में महिला दिवस के आयोजन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। साथ

ही चिरेका के विकास में महिला कर्मचारियों के योगदान की भी सराहना की। इसके अलावा इस कार्यक्रम में मौजूद महिला कर्मचारियों ने अपने-अपने विचार प्रकट करते हुए अपने अनुभव और महिला कर्मचारियों के हित को लेकर बातें रखी। ■

आरडीएसओ

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आरडीएसओ कैम्पस में 7 व 8 मार्च, 2019 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस वर्ष का विषय 'गूँज' था। अशोक कुमार मिश्रा, अपर महानिदेशक ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। आरडीएसओ के कई विशिष्ट अधिकारियों, कार्यकारी निदेशकों, निदेशकों एवं कर्मचारियों ने समारोह में भाग लिया। लगभग 200 महिला कर्मचारियों एवं उनके परिवारजन ने समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर हिन्दी फीचर फिल्म 'स्त्री' भी प्रदर्शित की गई। ■

मध्य रेलवे

मध्य रेल महिला कल्याण संगठन (सीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ) ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। मध्य रेल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती ममता शर्मा ने 13 मार्च, 2019 को एक समारोह में माटुंगा रेलवे स्टेशन के सभी महिला कर्मचारियों को सिल्वर कॉइन देकर सम्मानित किया।

उन्होंने वर्ष के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सभी मंडलों और मुख्यालय के उत्कृष्ट महिला रेलवे कर्मचारियों को एक प्रमाण पत्र और 5000 रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया।

सीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ की पदाधिकारियों ने झुग्गी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं और लड़कियों को 1000 सेनेटरी नैपकिन पैकेट मुफ्त में वितरित किए। श्रीमती अनुपमा बहल, सचिव, मध्य रेल महिला कल्याण संगठन, कार्यकारी सदस्य और अन्य पदाधिकारी भी सम्मान कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित थे। ■

पश्चिम रेलवे

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा 13 मार्च, 2019 को मुंबई के कोलाबा स्थित बधवार पार्क की पश्चिम रेलवे अधिकारी कॉलोनी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे की 46 उत्कृष्ट महिला कर्मियों को पुरस्कृत करने हेतु एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इन महिला कर्मियों को न केवल कार्यालय में उनकी समर्पित सेवा के लिए, बल्कि समाज से अलग उनकी पहचान बनाने एवं विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता हेतु ये प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किये गये।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी रविंद्र भाकर के अनुसार पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना गुप्ता ने पुरस्कृत महिला कर्मियों के साथ-साथ सर्व सामान्य महिलाओं को उनके जीवन के दो अंगों अर्थात घर एवं कार्यालय के बीच समझौता किये बिना इनमें समुचित सामंजस्य बनाने हेतु उनकी प्रतिबद्धता की सराहना की। श्रीमती गुप्ता ने कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं को इस आपाधापी भरे जीवन में सफल जीवन जीने हेतु कई प्रकार की सलाह दी तथा उन्हें कहा कि वे बढ़ते दबाव से परेशान होकर कभी भी आत्मग्लानि न महसूस करें, बल्कि ऐसी स्थिति का डटकर सामना करें।

इस अवसर पर श्रीमती गुप्ता ने निबंध प्रतियोगिता की विजेताओं को भी पुरस्कृत भी किया। ■

राजकोट मंडल

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, राजकोट की अध्यक्षा श्रीमती भारती निनावे तथा अन्य सदस्यों द्वारा राजकोट स्थित रुखडियापरा विस्तार की महिलाओं के बीच सेनिटरी नैपकिन का निशुल्क वितरण किया गया। श्रीमती निनावे ने स्थानीय बस्तियों में जाकर स्वच्छता के बारे में महिलाओं को जागरूक किया तथा उन्हें कम कीमत वाली सेनिटरी नैपकिन के बारे में जानकारी दी। ■

कॉमनवेल्थ खेलों में कांस्य पदक विजेता किरण सहित 55 खिलाड़ी सम्मानित

उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक राजेश तिवारी द्वारा उत्तर पश्चिम रेलवे पर कार्यरत खिलाड़ियों, जिन्होंने अन्तरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त किये हैं, को खेलकूद संघ की वार्षिक बैठक में पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इसमें उत्तर पश्चिम रेलवे के 56 खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। अप्रैल, 2018 में ऑस्ट्रेलिया में आयोजित कॉमनवेल्थ खेलों में 72 किलोवर्ग महिला कुश्ती प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक विजेता किरण को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

एशियन गेम्स जो कि इंडोनेशिया में आयोजित हुए थे उसमें उत्तर पश्चिम रेलवे के 5 खिलाड़ियों किरण, पवित्र, मनोहर, सोनिया व संदीप कुमारी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

उत्तर पश्चिम रेलवे के खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से वर्ष 2018-19 में अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा अखिल भारतीय रेल स्तर पर 82 पदक प्राप्त किये हैं। इससे पूर्व वर्ष 2017-18 में यह पदक संख्या 71 थी। इस वर्ष उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा 23 खेलों में भारतीय रेल स्तर पर भागीदारी की गई, साइक्लिंग व कुश्ती टीम ने सम्पूर्ण भारतीय रेल स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

राजेश तिवारी, महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे ने अपने सम्बोधन में खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हमें हमारे खिलाड़ियों पर गर्व है, जिन्होंने देश व रेलवे को गौरवान्वित किया है और भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए शुभकामनाएं प्रदान कीं।

इस अवसर वीरेन्द्र कुमार, अध्यक्ष, खेलकूद संघ, सुधीर गुप्ता, सचिव-खेलकूद संघ सहित सभी विभागाध्यक्ष, खेलकूद संघ के पदाधिकारी, खेल प्रशिक्षक तथा खिलाड़ी उपस्थित थे। ■

मुंबई में आयोजित वार्षिक ऑफिसर्स स्पोर्ट्स मीट में पश्चिम रेल मुख्यालय की टीम ने जीता खिताब

41वीं पश्चिम रेलवे वार्षिक ऑफिसर्स स्पोर्ट्स मीट का आयोजन 13 एवं 14 अप्रैल, 2019 को पश्चिम रेलवे खेलकूद संगठन के तत्वावधान में मुंबई में किया गया। इस स्पोर्ट्स मीट का उद्घाटन 13 अप्रैल, 2019 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता द्वारा किया गया। 13 एवं 14 अप्रैल को आयोजित इस खेल महोत्सव में प्रधान कार्यालय, सभी 6 मंडलों एवं वर्कशॉप इकाइयों के लगभग 350 अधिकारियों एवं उनके परिजनों ने खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। इस स्पोर्ट्स मीट में बैडमिंटन, टेनिस, टेबल टेनिस, स्क्वैश, कैरम, शतरंज, बिलियर्ड्स, स्नूकर, वॉली बॉल, तैराकी एवं बॉक्स क्रिकेट प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। 'टग ऑफ वार' एवं 'रन फॉर फन' जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किये गये थे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में एकल एवं सामूहिक नृत्य, गायन तथा वाद्य यंत्र बजाने जैसे कौशल का प्रदर्शन किया गया। महिला प्रतिभागियों के लिए इस मीट में विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये थे, जिनमें सलाद डेकोरेशन, मिनिएचर फ्लावर अरेंजमेंट, हेयर स्टायलिंग, गिफ्ट रैपिंग, रंगोली एवं मेहंदी लगाने जैसी प्रतिस्पर्धाएं शामिल थीं। इस स्पोर्ट्स प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को मेडल, प्रमाणपत्र एवं ट्रॉफी प्रदान की गई। ओवरऑल चैम्पियनशिप का खिताब प्रधान कार्यालय की टीम ने जीता।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता एवं पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना गुप्ता द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये। ■

रेलवे की भारोत्तोलक झिली को एशियन चैम्पियनशिप में रजत पदक

पूर्व तट रेलवे की कर्मचारी भारोत्तोलक झिली दालबेहरा ने एशियन चैम्पियनशिप में रजत पदक हासिल किया। प्रतियोगिता का आयोजन 20 से 28 अप्रैल तक निंग्बो, चीन में किया गया था। इससे पहले वर्ष 2018 में ताशकंद में आयोजित जूनियर वर्ल्ड चैम्पियनशिप में झिली ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक हासिल किया था।

झिली ने ऑस्ट्रेलिया में आयोजित जूनियर कॉमनवेल्थ चैम्पियनशिप-2017 में स्वर्ण पदक जीता था, जबकि पेनांग, मलेशिया में 2016 में आयोजित कॉमनवेल्थ चैम्पियनशिप में इन्होंने कांस्य पदक हासिल किया था।

इसके अलावा झिली ने 2018 में विशाखापट्टनम में जूनियर नेशनल चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक, 2016 में भुवनेश्वर में आयोजित नेशनल जूनियर चैम्पियनशिप में कांस्य पदक व 2017 में नागरकोइल, तमिलनाडु में आयोजित सीनियर नेशनल चैम्पियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया था। ■

महाप्रबंधक उत्तर रेलवे ने विजयी पुरुष क्रिकेट टीम को बधाई दी

डीएमडब्ल्यू, पटियाला में आयोजित अंतर रेलवे क्रिकेट चैम्पियनशिप (पुरुष) में उत्तर रेलवे ने पश्चिम रेलवे को हरा कर चैम्पियनशिप जीती। 22 अप्रैल, 2019 को उत्तर रेलवे मुख्यालय कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, टी.पी. सिंह ने पुरुष क्रिकेट टीम को बधाई दी। उत्तर रेलवे फाइनल में पश्चिम रेलवे को 143 रनों के बड़े अंतर से हरा कर पहली बार चैम्पियन बनी।

विजयी टीम के सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री सिंह ने टीम के सदस्यों को उनके उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उन्हें भविष्य में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साहित किया। ■

33वीं अखिल भारतीय रेल बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप में दक्षिण पूर्व रेलवे चैम्पियन

दक्षिण पूर्व रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा 22 से 24 फरवरी, 2019 तक खड़गपुर में आयोजित 33वीं अखिल भारतीय रेल बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप में दक्षिण पूर्व रेलवे चैम्पियन बनी। द्वितीय और तृतीय स्थान क्रमशः मध्य रेल और दक्षिण रेलवे ने हासिल किए।

दक्षिण पूर्व रेलवे अखिल भारतीय रेल बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप में पिछले 6 वर्षों से लगातार प्रथम स्थान हासिल कर रही है। दक्षिण पूर्व रेलवे की टीम के गोल्ड मेडल विजेता जे.जे. चक्रवर्ती, अश्विन शेट्टी, एन. सरबो सिंह और जावेद अली खान थे। दक्षिण पूर्व रेलवे के.के. एन सरबो सिंह चैम्पियन ऑफ चैम्पियंस बने।

टूर्नामेंट में रेलवे बोर्ड सहित भाग लेनेवाली रेलों में दक्षिण रेलवे, दक्षिण पश्चिम रेलवे, इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, मध्य रेलवे, पश्चिम रेलवे, उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे, पश्चिम मध्य रेलवे, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे और दक्षिण पूर्व रेलवे के 93 बॉडीबिल्डरों ने भाग लिया था।

दक्षिण पूर्व रेलवे के अपर महाप्रबंधक अनुपम शर्मा ने विजेता दक्षिण पूर्व रेलवे और अन्य टीमों को पुरस्कार दिए और आनेवाले वर्षों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। के.आर.के. रेड्डी, मंडल रेल प्रबंधक, खड़गपुर और खेल प्रेमियों के साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। ■

दिल्ली मंडल के जींद–शकूरबस्ती–नई दिल्ली रेल खंड का निरीक्षण

टी. पी. सिंह महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे ने जींद–शकूरबस्ती–नई दिल्ली रेल सेक्शन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबन्धक, दिल्ली आर.एन. सिंह तथा उत्तर रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ रेल अधिकारी भी उपस्थित थे। टी.पी. सिंह ने जींद, जुलाना, रोहतक स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन परिक्षेत्र, यात्री सुविधाओं, बुकिंग कार्यालय, हेल्थ यूनिट आदि का निरीक्षण किया। जुलाना पर महाप्रबंधक ने स्टेशन परिसर एवं यार्ड का निरीक्षण किया। उन्होंने नव विकसित मॉड्यूलर टूल बॉक्स तथा गेंग शेल्टर का उद्घाटन किया एवं रेलपथ अनुरक्षण कर्मचारियों के साथ जुलाना–रोहतक रेल सेक्शन पर घुमाव (कर्व) का निरीक्षण भी किया। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचने पर महाप्रबंधक ने कलात्मक रूप से चित्रित, नवीनीकृत एवम् सौंदर्यीकृत परिसर

एवम् हाल ही में नवीनीकृत स्टेशन बिल्डिंग के मुखभाग का निरीक्षण किया। ■

महाप्रबंधक ने लखनऊ स्थित वर्कशॉप का निरीक्षण किया

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक टी.पी. सिंह ने लखनऊ स्थित उत्तर रेलवे के चार महत्त्वपूर्ण कारखानों यानि आलमबाग वर्कशाप, ब्रिज वर्कशाप, सुपरवाइजर्स ट्रेनिंग सेंटर तथा लोको वर्कशॉप चारबाग का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उनके साथ कारखानों के प्रमुख विभागध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। मुख्य कारखाना प्रबंधक भी इस मौके पर उपस्थित थे। महाप्रबंधक ने ट्रिमिंग शॉप, पेंट शॉप, आर.एम. पी.यू. सेक्शन, पी.ओ.एच.ई.डी. कोच, सोलर पार्क स्थित स्क्रैप/आर्ट, नवीनीकृत इलेक्ट्रॉनिक लैब, नवीनीकृत मशीन शॉप, प्रशासनिक कार्यालय और नवीनीकृत हेल्थ यूनिट इत्यादि का निरीक्षण किया।

महाप्रबंधक ने यूनियनों के प्रतिनिधियों से भी बातचीत की और उनके ज्ञापन लेने के बाद यह आश्वासन दिया कि उनकी शिकायतों पर नियमित रूप से कार्रवाई की जाती है। ■

महाप्रबंधक द्वारा प्रयाग, प्रतापगढ़, अमेठी और रायबरेली स्टेशनों का निरीक्षण

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक टी.पी. सिंह ने प्रयाग स्टेशन, लोको पायलट रनिंग रूम, सर्कुलेटिंग एरिया, रेल सुरक्षा बल बैरक, रेल आवास आदि का निरीक्षण किया और यात्रियों से बातचीत की। उनके साथ उत्तर रेलवे के प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, अरून अरोरा, प्रमुख मुख्य इंजीनियर, आर.सी. ठाकुर, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी, सुश्री कुसुम सिंह, प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक, सुश्री मणी आनंद, प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर, एस. के. सिंह, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक, राजीव सक्सेना, मंडल रेल प्रबन्धक, लखनऊ, सतीश कुमार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। महाप्रबंधक द्वारा प्रतापगढ़ स्टेशन का निरीक्षण भी किया गया। उन्होंने प्रतापगढ़ में बड़े पुल संख्या 320 का निरीक्षण किया और फाफामऊ–प्रतापगढ़ रेल सेक्शन पर हुए स्पीड ट्रायल में भी भाग लिया। उन्होंने अमेठी स्टेशन की ओर जाने से पहले जगेसरगंज–अन्तूत के बीच घुमाव संख्या 61 पर टर्नआउटों और रेलपथ ढांचों का निरीक्षण किया। महाप्रबंधक ने अमेठी और तल खजूरी के बीच समपार संख्या 103 का

निरीक्षण किया और सड़क उपयोगकर्त्ताओं से बातचीत की। अमेठी स्टेशन पर, महाप्रबंधक ने स्टेशन परिसर का निरीक्षण किया और स्मॉल ट्रैक मशीनों, जीपीएस ट्रैकिंग सिस्टम, पुरानी ड्राइंग के लिए डेटाबेस सिस्टम को देखने के साथ–साथ प्वाइंट नंबर 41 बी, बानी–जायस खंड के बीच पुल संख्या 484 का निरीक्षण किया। महाप्रबंधक ने रायबरेली स्टेशन परिसर और रायबरेली में ओएचई डिपो का भी निरीक्षण किया। ■

महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे द्वारा झाँसी–महोबा खंड का वार्षिक निरीक्षण

8 मार्च, 2019 को उत्तर मध्य रेलवे के झांसी मंडल का वार्षिक निरीक्षण महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी द्वारा किया गया। इस दौरान मंडल के झांसी–महोबा खंड का निरीक्षण किया गया। महाप्रबंधक ने आरपीएफ थाना का निरीक्षण किया। तदुपरांत स्टेशन पर मौजूद यात्री सुविधाओं के साथ–साथ अन्य सुविधाओं का जायजा लिया एवं इन्हें और बेहतर करने से सम्बंधित निर्देश दिये। झाँसी स्टेशन से प्रारंभ होकर बरुवासगर सहित अन्य तीन स्टेशन मऊरानीपुर, हरपालपुर एवं महोबा का गहन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने झाँसी से महोबा ट्रैक पैरामीटर की सघनता से चेकिंग की। उन्होंने समपार फाटकों पर सड़क की सतह की स्थिति पर

भी ध्यान दिया और साथ ही ट्रैक के अनुरक्षण से जुड़े उपकरणों का भी अवलोकन किया। निरीक्षण के अंत में महाप्रबंधक ने झांसी स्टेशन पर प्रेस प्रतिनिधियों से भी वार्ता की। इस दौरान बोलते हुये चौधरी ने झांसी– मानिकपुर एवं भीमसेन–खैरार खण्डों के दोहरीकरण और विद्युतीकरण परियोजना पर शीघ्र कार्य प्रारम्भ होने की जानकारी दी।

इसके पश्चात महाप्रबंधक ने नवनिर्मित रनिंग रूम का भी उद्घाटन किया। इसमें 32 वातानुकूलित कमरे गार्ड व लोको पायलट हेतु बनाये गए हैं। इस दौरान रेल संरक्षा आयुक्त, मंडल रेल प्रबंधक सहित मुख्यालय के सभी प्रमुख विभागध्यक्ष एवं मुख्य जनसंपर्क अधिकारी गौरव कृष्ण बंसल उपस्थित रहे। ■

इलाहाबाद–पंडित दीन दयाल उपाध्याय खंड का निरीक्षण

27 मार्च, 2019 को महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, राजीव चौधरी ने मंडल रेल प्रबंधक इलाहाबाद तथा मुख्यालय एवं मंडल के अन्य अधिकारियों के साथ इलाहाबाद–पंडित दीन दयाल उपाध्याय खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण तथा स्टेशनों एवं समपार फाटकों का गहन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नैनी ब्रिज का निरीक्षण किया तत्पश्चात् करछना–भीरपुर के मध्य समपार सं 29बी का निरीक्षण किया एवं भीरपुर–मेजा रोड के मध्य पुल सं 5 (टोंस नदी पर) का निरीक्षण किया। मेजारोड–गैपुरा के मध्य स्पीड रन का परीक्षण किया। गैपुरा स्टेशन पर

नवनिर्मित टॉयलेट का उद्घाटन किया, गैपुरा–बिरोही के मध्य कर्व सं 8। का निरीक्षण किया एवं विन्ध्याचल स्टेशन पर स्वचालित सीढ़ी, सीसीटीवी कंट्रोल रूम का उद्घाटन किया एवं विन्ध्याचल स्टेशन एवं सरकुलेटिंग एरिया का निरीक्षण किया। तत्पश्चात मिर्जापुर यार्ड, स्टेशन, कॉलोनी एवं हॉस्पिटल तथा ओएचई डिपो का निरीक्षण किया । निरीक्षण के दौरान मिर्जापुर रेलवे स्टेशन पर प्रेस कांफ्रेंस का भी आयोजन किया गया एवं तेजस (दुर्घटना राहत वाहन) का शुभारम्भ किया गया। मिर्जापुर–डगमगपुर के मध्य स्पीड ट्रायल किया गया। ■

महाप्रबंधक की प्रमुख मालभाड़ा ग्राहकों के साथ बैठक

उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में महाप्रबंधक राजीव चौधरी की अध्यक्षता में रेलवे के प्रमुख मालभाड़ा ग्राहकों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। उन्होंने ग्राहकों के लिए सिंगल विण्डो सिस्टम की आवश्यकता जताई। महाप्रबंधक ने अनलोडिंग की प्रक्रिया को सुचारू बनाते हुए रेकों के रिलीज में विलम्ब से बचने की सलाह दी। श्री चौधरी ने निर्देशित किया कि संरक्षा के सभी निर्धारित मानकों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाये और इसके तहत सभी वैगनों के दरवाजों को उचित प्रकार से बंद करने के साथ ही लादे गये माल को उच्च गुणवत्ता वाले कवरों से ढका जाये। उन्होंने लोडरों के मध्य यह विश्वास

कि उनका माल सही समय से पहुँचेगा को बनाने के उद्देश्य से समय सारिणी के अनुरूप मालगाड़ी चलाने की आवश्यकता जताई। बैठक में रेल उपभोक्ता: आईओसी/बाद, एचपीसीएल, रसूलपुर, गोगामऊ, एमजेएसी, चुनार, डीसीपीजी, चुनार, कॉनकॉर, नोएडा/कानपुर, केएलपीएल, पनकी, एकआरआईएल, खुर्जा, केएफसीएल, पनकी, पीसीआई, ग्वालियर आदि के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपर महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे अरुण मलिक एवं अन्य प्रमुख विभागाध्यक्षों ने भी बैठक को संबोधित किया। बैठक में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोडिंग की विस्तृत जानकारी दी गई। ■

वॉशेबल एप्रॉन हेतु ब्लास्ट रहित हाई स्पीड ट्रैक' विषय पर एक तकनीकी प्रस्तुतिकरण का आयोजन

15 अप्रैल को उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में महाप्रबंधक राजीव चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित एक बैठक के दौरान 'वॉशेबल एप्रॉन हेतु ब्लास्ट रहित हाई स्पीड ट्रैक' विषय पर एक तकनीकी प्रस्तुतिकरण किया गया। इस प्रस्तुतिकरण के दौरान ट्रैक अनुरक्षण के दौरान आने वाले विभिन्न विषयों के संभावित समाधानों पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक ने परिचालन की गति बढ़ाने के साथ ही संरक्षा सुनिश्चित करने में आधुनिकतम तकनीक की आवश्यकता पर बल दिया। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि, तकनीक के माध्यम से ही अधिकांश समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। श्री चौधरी ने आगे कहा कि वॉशेबल एप्रॉन हेतु ब्लास्ट रहित हाई स्पीड ट्रैक की यह नई तकनीक, हमारे ट्रंक रूट जिन पर गति बढ़ाकर 160 किमी./घंटा की जानी है, पर रेल परिचालन को तेज करने में बहुत फायदेमंद सिद्ध होगी। बैठक के दौरान प्लेटफॉर्म लाइनों पर 160 किमी./घंटा की उच्च गति से ट्रेन परिचालन हेतु 'क्यूल ट्रैक कॉन्सेप्ट' पर आधारित वॉशेबल एप्रॉन प्रणाली पर विस्तार से चर्चा की गई। ■

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न

उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय में महाप्रबंधक राजीव चौधरी की अध्यक्षता में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई।

बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक ने कहा कि अपने सरकारी कार्यों में राजभाषा का प्रयोग-प्रसार हमारी निष्ठा और तत्परता की एक बड़ी कसौटी है। सरकार की समग्र राजभाषा नीति का कार्यान्वयन संवैधानिक दायित्वों से जुड़ा हुआ है इसलिए राजभाषा के लक्ष्यों को पूरा करना हमारा कानूनी एवं नैतिक कर्तव्य है। राजभाषा हिन्दी को पूरी तरह लागू करने के लिए राजभाषा के विभिन्न वैधानिक प्रावधानों और नियमों के अनुसार निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। बैठक के प्रारंभ में मुख्यालय की तिमाही राजभाषा पत्रिका 'रेल संगम' का महाप्रबंधक राजीव चौधरी द्वारा विमोचन किया गया। बैठक में सभी प्रधान विभागाध्यक्ष, मंडलों के अपर मंडल रेल प्रबंधक, कारखानों के वरिष्ठ अधिकारी एवं अन्य सदस्य व अधिकारी उपस्थित थे। सभी अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यालयों में हो रही राजभाषा प्रगति से महाप्रबंधक को अवगत कराया। बैठक का संचालन वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी चन्द्र भूषण पाण्डेय द्वारा किया गया। ■

सूबेदारगंज में नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन

12 अप्रैल को प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक कार्यालय परिसर में केंद्रीय चिकित्सालय उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा मधुमेह से पीड़ित उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का नेत्र परीक्षण किया गया। शिविर में, डॉ. प्रकाश मुर्मू, अपर मुख्य चिकित्सा निदेशक (टी.ए.) एवं उत्तर मध्य रेलवे के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों का नेत्र परीक्षण किया गया। ■

महालक्ष्मी स्थित ईएमयू कारखाने का निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता ने 29 मार्च, 2019 को मुंबई के महालक्ष्मी स्थित ईएमयू कारखाने का सघन निरीक्षण किया। श्री गुप्ता ने प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर अशेष अग्रवाल, मंडल रेल प्रबंधक, मुंबई सेंट्रल सुनील कुमार तथा पश्चिम रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। श्री गुप्ता ने शाकू कपलर सेक्शन, ट्रैक्शन मोटर शॉप, बोगी लिफ्टिंग शॉप, कम्प्यूटरीकृत वीसीबी टेस्टिंग सिस्टम, पीएलसी आधारित ब्रेक इक्वीपोलेंट्स टेस्टिंग सुविधाओं का निरीक्षण किया। श्री गुप्ता ने निरीक्षण के बाद शॉप फ्लोर में काम करने वाले स्टाफ के लिए इंडस्ट्रियल आरओ वॉटर प्लांट का उद्घाटन किया। उन्होंने ट्रैवर्सर लेवल रेजिंग तथा ड्रेनेज के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की तथा कार्य को जल्द पूर्ण करने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक निर्देश दिये।

महालक्ष्मी कारखाने के मुख्य कारखाना प्रबंधक एस.के. वर्मा ने कारखाने द्वारा अर्जित विभिन्न उपलब्धियों पर आधारित प्रेजेंटेशन दिया। श्री गुप्ता ने डिब्बों की पीओएच गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए कारखाने के गम्भीर प्रयासों की सराहना की तथा इस उत्कृष्ट कार्य के लिए कर्मचारियों को पुरस्कृत किया। ■

पश्चिम रेलवे ने मिशन जीरो स्क्रैप के अंतर्गत नया इतिहास रचा

पश्चिम रेलवे अपने सभी प्रयासों में हमेशा अग्रणी रही है तथा दिये गये किसी भी टास्क में पश्चिम रेलवे का अग्रणी रहने का सफर जारी है। इसी क्रम को जारी रखते हुए जीरो स्क्रैप को पाने के मिशन के अंतर्गत पश्चिम रेलवे ने अभी तक 517.41 करोड़ रु. के भंगार की बिक्री कर नया इतिहास रचा है तथा वर्ष 2011-12 में उत्तर रेलवे के इससे पूर्व के 403 करोड़ रु. के स्क्रैप की बिक्री के उच्चतम कीर्तिमान को तोड़ दिया है। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता तथा प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक जे. पी. पाण्डेय के निर्देशन में पश्चिम रेलवे की सामग्री प्रबंधन टीम ने मिशन जीरो स्क्रैप के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के क्षेत्राधिकार में स्क्रैप आइडेंटिफिकेशन, मोबिलाइजेशन तथा विभिन्न रेलवे परिसरों में पड़े हुए स्क्रैप की बिक्री के लिए सघन अभियान

चलाया। इसके लिए उच्चस्तरीय टास्क फोर्स कमिटी बनाई गई तथा नियमित बैठकों का आयोजन, निरीक्षण तथा स्क्रैप डिस्पोजल के लिए अभिनव तरीकों का प्रयोग किया गया। मार्च, 2019 में सघन निरीक्षण के दौरान रेल मंत्रालय के रेलवे स्टोर्स के तत्कालीन महानिदेशक वी.पी. पाठक ने प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक तथा अन्य भंडार विभाग के अधिकारियों सहित सभी ऑक्शन कंडक्टिंग ऑफिसरों के साथ ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्रों को आयोजित किया तथा पश्चिम रेलवे पर जीरो स्क्रैप के लक्ष्य को पाने के लिए योजना बनाने की सलाह दी थी। श्री पाठक ने पश्चिम रेलवे को बधाई दी तथा उन्होंने कहा कि पश्चिम रेलवे ने स्क्रैप डिस्पोजल के क्षेत्र में उत्कृष्टता की नई मिसाल पेश की है तथा 500 करोड़ रु. के लक्ष्य को पाना आसान काम नहीं है। ■

महाप्रबंधक द्वारा लोअर परेल स्थित कैरेज रिपेयर कारखाने का निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता ने 28 मार्च, 2019 को मुंबई के लोअर परेल स्थित कैरिज एवं वैगन रिपेयर कारखाने का सघन निरीक्षण किया। श्री गुप्ता ने बोगी सेक्शन, व्हील सेक्शन, रोलर बैरिडग सेक्शन तथा रिनोवेटेड इयरब्रेक सेक्शन का निरीक्षण किया, जिसके अंतर्गत कम्प्यूटरीकृत डीवी टेस्टिंग तथा ब्रेक सिलेंडर टेस्टिंग रिग की सुविधा है। उन्होंने एलएचबी के पीओएच की क्षमता में वृद्धि की

प्रगति की समीक्षा भी की तथा कार्य को पूर्ण करने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक निर्देश दिये। ए.के. गुप्ता ने वडोदरा स्थित नेशनल एकेडमी ऑफ इंडियन रेलवेज के लिए एसी ट्रेनिंग कोच के कंवर्जन के प्रयासों की सराहना की। बाद में श्री गुप्ता ने लेडीज लॉन्ज का उद्घाटन किया। लोअर परेल कारखाने के मुख्य कारखाना प्रबंधक अखिलेश कुमार ने कारखाने द्वारा अर्जित विभिन्न उपलब्धियों पर आधारित प्रेजेंटेशन दिया। ■

मध्य रेल में मनाया गया विश्व विरासत दिवस

स्टीम लोको और एक हेरिटेज कोच के जीवंत-आकार के मॉडल का अनावरण 18 मार्च, 2019 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई में प्लेटफॉर्म 14 से 18 की ओर यात्री वॉकवे की गैलरी में मध्य रेल के महाप्रबंधक देवेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा किया गया।

जीवंत-आकार का मॉडल पूरी तरह से कार्डबोर्ड और नालीदार कागज से बना हुआ है और इन्हें स्पेक्ट्रम स्कैन प्राइवेट लिमिटेड के सौजन्य से स्थापित किया गया है।

मॉडल का उपयोग सीआर (पूर्ववर्ती ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे) के कई हिस्सों को सचित्र रूप से प्रदर्शित करने के लिए किया गया है - 16 अप्रैल, 1853 को भारत में पहली यात्री ट्रेन, पहला इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन, पहला सबर्बन, पहला डीजल और इलेक्ट्रिक मेंटेनेंस शेड, पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संचालित पहला स्टेशन, यहां प्रदर्शित किया गया है। ये मॉडल सीएसएमटी से गुजरने वाले यात्रियों और रेल ग्राहकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र हैं। एक लाइव लोको विशिल की स्थापना और प्रदर्शित कोच मॉडल में एक सेल्फी बिंदु आगंतुक के आकर्षण को और बढ़ा देता है। लोकोमोटिव मॉडल का प्रदर्शन और अनावरण, मध्य रेल पर पहली बार इसका प्रदर्शन, 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस पर मध्य रेल द्वारा विरासत से संबंधित गतिविधियों का हिस्सा थे। ■

पूर्व तट रेलकर्मियों के बच्चों के लिए हैदराबाद की दर्शन यात्रा

पूर्व तट रेलवे क्षेत्राधिकार के विभिन्न हिस्सों में काम कर रहे रेलकर्मियों के बच्चों के लिए हैदराबाद की एक विशेष दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्र में रेलकर्मियों के कुल 60 बच्चों ने हिस्सा लिया। सुधीर कुमार, अपर महाप्रबंधक, पूर्व तट रेलवे ने प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी पी.सी. नायक की उपस्थिति में सभी बच्चों को शुभकामनाएं दी व उन्हें इस यात्रा पर रवाना किया। इस यात्रा का उद्देश्य रेलकर्मियों के बच्चों को महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी देते हुए रामोजी फिल्म सिटी का परिदर्शन कराना है। बच्चों को हवाई यात्रा का अनुभव कराने के लिए

दल के सभी प्रतिभागियों के लिए एक ओर से हवाई यात्रा की भी व्यवस्था की गयी है। ■

पूर्व तट रेलवे में पहली बार प्रायोगिक तौर पर चली 2000 मीटर लंबी ट्रेन

पूर्व तट रेलवे की ओर से कम मानव-शक्ति का उपयोग तथा उपलब्ध मार्ग का किफायती उपयोग करते हुए प्रायोगिक तौर पर पहली बार एक साथ तीन ट्रेनों के रेक को जोड़कर चलाया गया। इस पूरी ट्रेन की लंबाई लगभग 2000 मीटर थी। इस पूरी ट्रेन में 147 वैगन, 3 ब्रेक/गार्ड वैन एवं चार इंजन लगाये गये। प्रायोगिक तौर पर इस ट्रेन का परिचालन संबलपुर मंडल के गोड़भगा एवं बलांगीर स्टेशनों के बीच किया गया। इनमें से रेक के पहले हिस्से में 45 कंटेनर लदे वैगन थे व शेष दूसरे तथा तीसरे रेक में 51 एलुमिना के खाली कंटेनर शामिल थे। इन सभी को एक साथ विशाखापट्टनम

बंदरगाह के लिए रवाना किया गया। इस ट्रेन को 147 वैगनों के साथ एक बार में चलाने से एक ओर जहाँ कम मानव शक्ति का उपयोग किया गया वहीं इसके परिचालन के लिए सिग्नल एवं समपार फाटकों को बंद करने का काम भी केवल एक बार ही किया गया। ■

पूर्व तट रेलवे कर्मी अंतर-रेलवे चित्रकला प्रतियोगिता में अव्वल

पूर्व तट रेलवे मुख्यालय के कर्मचारी श्याम सुंदर अचारी एक बार फिर से अंतर-रेलवे चित्रकला प्रतियोगिता में अव्वल आये हैं। प्रतियोगिता का आयोजन रेलवे बोर्ड द्वारा गुवाहाटी में 24 मार्च, 2019 को किया गया था। प्रतियोगिता में देश भर से 24 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया था। ज्ञात हो कि वर्ष 2018 में श्री अचारी द्वारा बनायी गयी पेन्टिंग को देश भर में प्रथम स्थान मिला था। इस वर्ष भी प्रतियोगिता में श्री अचारी की पेन्टिंग को सभी ने पसंद किया। 'रेल, नदियां व पहाड़' विषय पर आयोजित इस पेन्टिंग प्रतियोगिता में श्री अचारी ने तीनों का समावेश करते हुए सर्वश्रेष्ठ पेन्टिंग बनायी। गत वर्ष श्री अचारी ने 'बदलती रेलवे' विषय पर अपनी पेन्टिंग में आजादी पूर्व की रेलवे के साथ बुलेट ट्रेन तकनीक को दर्शाया था, जिसे प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ पेन्टिंग घोषित की गयी थी। ओडिशा के गंजाम जिले के पलाखेमुंडी निवासी श्री अचारी पूर्व तट रेलवे में वर्ष 2008 से कार्यरत हैं। ■

गर्मी के मौसम से निबटने के लिए पूर्व तट रेलवे की विशेष तैयारी

पूर्व तट रेलवे की ओर से अपने क्षेत्राधिकार में गर्मी के मौसम के दौरान होने वाली परेशानियों से निबटने के लिए पूरी तैयारी कर ली है। गर्मी के मौसम में ट्रेन संचालन और संरक्षा संबंधी उपायों के लिए रेलवे में पहले से ही एक समुचित एवं निर्धारित प्रक्रिया उपस्थित है। इसके लिए सभी मंडलों को आवश्यक दिशा- निर्देश भी दिए गए हैं। जल वितरण साधनों, नल आदि के समुचित तरीके से काम करने के संबंध में सभी को निर्देश दिये जा चुके हैं। जल व्यवस्था में लगे पानी के पंपों की कार्यकारी स्थिति भी सुनिश्चित करने को कहा गया है। बड़े स्टेशनों के प्रतीक्षा हॉल में पानी की समुचित व्यवस्था पर भी ध्यान देने को कहा गया है।

पूर्व तट रेलवे के संरक्षा विभाग ने सभी रेलकर्मियों को नियमित ट्रैक रख-रखाव की कड़ी निगरानी रखने और रेल बकलिंग से बचाने के लिए फिटिंग के साथ बैलास्ट प्रोफाइल पर नजर रखने को कहा गया है। डिब्बों में बिजली के उपकरणों की भी नियमित जांच के लिए कर्मचारियों को निर्देश दिया गया है।

पूर्व तट रेलवे के सभी तीन मंडल जैसे खोरधा रोड, संबलपुर एवं वाल्टियर में उच्च स्तर की सतर्कता बरतने का निर्देश दिया गया है। तय सीमा से अधिक स्तर तक पटरियों के तापमान बढ़ने पर नजर रखने के लिए हॉट वेदर पेट्रोलिंग पर विशेष जोर देते हुए ट्रैकमैन को रेल थर्मोमीटर का उपयोग करने एवं सदा ही सतर्क रहने की सलाह दी गयी है।

स्टेशनों, ट्रेनों एवं संवेदनशील स्थलों पर समुचित संख्या में अग्निशामक यंत्रों की सुनिश्चितता के साथ ही शीघ्रातिशीघ्र उपलब्धता के लिए राज्य अग्निशमन विभाग के साथ परस्पर समन्वय स्थापित किया जा रहा है। ■

महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की अध्यक्षता में जोनल पीएनएम बैठक का आयोजन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय बिलासपुर में 20 फरवरी, 2019 को जोनल स्तर पर पीएनएम (परमानेंट नेगोशियेशन मैकेनिजम मीटिंग) बैठक संपन्न हुई। पीएनएम बैठक का उद्देश्य रेलवे संगठन की मान्यता प्राप्त यूनियनों एवं एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों एवं प्रबंधन के मध्य विचार विमर्शों के द्वारा संगठन की उत्पादकता एवं कार्यप्रणाली में गुणात्मक सुधार लाना होता है। इस पीएनएम बैठक की अध्यक्षता सुनील सिंह सोइन, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने की। इस बैठक में अपर महाप्रबंधक अनिल कुमार एवं समस्त प्रमुख विभागाध्यक्षों के साथ-साथ दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे मेन्स कांग्रेस के महासचिव के.एस. मूर्ति तथा अध्यक्ष तपन चटर्जी एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे मेन्स कांग्रेस यूनियन के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। ■

संरक्षा आयुक्त रेलवे, कोलकाता का दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे दौरा

ए.के. राय, आयुक्त रेलवे, कोलकाता 6 दिवसीय दौरे पर 13 मार्च, 2019 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर पहुंचे। इस अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे मुख्यालय स्थित महाप्रबंधक सभागार में संरक्षा आयुक्त रेलवे के साथ सुनील सिंह सोइन, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे एवं सभी विभागों के विभाग प्रमुखों के बीच संरक्षा से संबंधित बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में संरक्षा से संबंधित अनेक मुद्दों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी। इस दौरान संरक्षा आयुक्त ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि रेल संरक्षा से जुड़े किसी भी कार्य को करने से पूर्व सभी सर्वसंबंधित आवश्यक सावधानियों को सुनिश्चित करें। किसी भी नई परियोजना को शुरू करने के साथ ही कार्य निष्पादन हेतु उपर्युक्त मानव संसाधन की भी व्यवस्था करें ताकि परियोजना को समय पर मूर्त रूप दिया जा सके। नई रेल साईडिंग शुरू करने से पहले उसमें जुड़े संरक्षा के सभी पहलुओं का चेकलिस्ट के माध्यम से आंकलन

करें। साईडिंग में होने वाली किसी भी प्रकार की डिरेलमेंट आदि से बचाव हेतु साईडिंग के रखरखाव आदि के लिए लगातार निरीक्षण करें। इसके पश्चात ए.के. राय, संरक्षा आयुक्त रेलवे ने अधिकारियों से नागपुर रेल मंडल के अंतर्गत जबलपुर-गोंदिया एवं इतवारी-केलोद-छिंदवाड़ा रेल खंड पर किए जा रहे आमान परिवर्तन कार्य एवं रेल विद्युतीकरण कार्य पर भी चर्चा की। ■

रेलवे भर्ती बोर्ड, बिलासपुर में 'मुक्तिबोध पुस्तकालय एवं वाचनालय' का उद्घाटन

रेलवे भर्ती बोर्ड, बिलासपुर में रेलवे भर्ती बोर्ड राजभाषा कार्यान्वन समिति, बिलासपुर की 31वीं बैठक के आयोजन के अवसर पर मुक्तिबोध पुस्तकालय एवं वाचनालय का उद्घाटन मुख्य अतिथि सुखबीर सिंह, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता रेलवे भर्ती बोर्ड, बिलासपुर के अध्यक्ष दीपक कुमार गुप्ता ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में एम. बाबू अब्दुल कादिर, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी (मां. सं.वि.), दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर उपस्थित रहे। ■

हेरिटेज वॉक का आयोजन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मोतीबाग नागपुर में स्थित छोटी लाइन रेल संग्रहालय में नैरोगेज रेल प्रणाली से संबन्धित मॉडल, पूर्व में सेवायुक्त लोको, कोच, वैगन आदि सभी के बारे में आम जनता तक जानकारी पहुंचाने हेतु 7 फरवरी, 2019 को सुबह 8-00 बजे हेरिटेज वॉक का आयोजन किया गया, जो मोतीबाग खेल मैदान से शुरू हो कर रेल म्यूजियम कड़वी चौक-मोतीबाग में समाप्त हुआ। इस अवसर पर मंडल के सभी शाखा अधिकारीगण, कर्मचारी, रेलवे नागरी सुरक्षा के स्वयंसेवक तथा रेलकर्मियों के परिवारजन सहित लगभग 200 की संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। हेरिटेज वाक के दौरान बैनर, तख्तियां तथा हेरिटेज स्लोगन 'हमारी रेल-हमारी धरोहर', 'भूतकाल की धरोहर को बचाएं-भविष्य के लिए' आदि के माध्यम से हेरिटेज संग्रहण और संवर्धन के बारे में प्रचार किया गया। नैरोगेज रेल हेरिटेज पर आधारित 45 मिनट अवधि की डाक्यूमेंट्री फिल्म 9 व 10 फरवरी को रेल म्यूजियम मोतीबाग के ऑडिटोरियम में पर्यटकों को दिखायी गयी। स्कूली छात्रों सहित आम लोगों में रेल हेरिटेज आधारित ज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु 16 फरवरी को नैरो गेज रेल म्यूजियम मोतीबाग में

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कक्षा 1 से 9वीं तक के छात्रों हेतु तीन अलग-अलग वर्गों में चित्रांकन एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 12 स्कूलों के 360 छात्रों ने हिस्सा लिया। सभी तीन वर्गों में इनाम हेतु प्रत्येक वर्ग में श्रेष्ठ 3 छात्रों को और अन्य 2 छात्रों को सांत्वना पुरस्कार हेतु चयनित किया गया। हेरिटेज कार्यक्रम के तहत मंडल में रखे स्टीम इंजनों तथा नैरोगेज रेल म्यूजियम मोतीबाग बिल्डिंग को एलईडी लाइट से सजाया गया। ■

जयपुर स्टेशन को 5-एस सर्टिफिकेट

उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर मंडल के जयपुर जंक्शन स्टेशन को 5 अप्रैल को श्रेष्ठ कार्यालय प्रबंधन के लिए 5-एस सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। जयपुर जंक्शन स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों को बेहतर रूप से व्यवस्थित करने हेतु 5-एस कॉन्सेप्ट सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के फलस्वरूप क्वालिटी फोरम ऑफ इंडिया, मुख्यालय हैदराबाद के द्वारा 5-एस सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया है। 5 अप्रैल, 2019 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती सौम्या माथुर, आर.एस. मीना (एडीआरएम-इन्फ्रा, आर.पी. मीना (एडीआरएम - ऑपरेशन्स), जय प्रकाश (स्टेशन निदेशक-जयपुर) ने क्यूसीएफआई प्रतिनिधि आर. श्रीनिवासन से 5-एस प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

इस अवसर पर सभी शाखा अधिकारियों के साथ जयपुर जंक्शन स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारी एवं क्यूसीएफआई के प्रतिनिधि उपस्थित थे। 5-एस एक कार्यस्थल आर्गेनाईजेशन का तरीका है, जिसमें जापानी सूची के पांच शब्द: सियरी, सेटॉन, सेसो, सिकेत्सु एवं शित्सुके का उपयोग किया जाता है। हिन्दी में इन शब्दों को क्रमवार छंटाई या वर्गीकरण, सुव्यवस्थित, सफाई, मानकीकरण और अनुशासन के रूप में अनुवादित किया गया है। ■

उत्तर पश्चिम रेलवे ने स्क्रैप बेचकर 197.47 करोड़ रुपये अर्जित किया

उत्तर पश्चिम रेलवे ने इस वित्तीय वर्ष 2018-19 में बेकार पड़ी सामग्री को बेचकर 197.47 करोड़ रुपये की आय अर्जित की, जो कि इस वर्ष के लक्ष्य 190 करोड़ रुपये से अधिक रही। इस वर्ष के आरम्भ में यह आय 135 करोड़ रुपये अनुमानित थी। पिछले वर्ष 2017-18 के मुकाबले इस वर्ष स्क्रैप बेचकर 14.56 प्रतिशत अधिक आय हुई। फील्ड यूनिट्स से पुराने कबाड़ को हटाने तथा बेचने के लिए एक विशेष अभियान चलाया गया। इस वर्ष उत्तर पश्चिम रेलवे चारों मंडलों तथा निर्माण संगठन ने 40,000 मीट्रिक टन कबाड़ को हटाया जिससे उत्तर पश्चिम रेलवे को इसे बेचकर अतिरिक्त आय हुई। इस बार कबाड़ का पिछले वर्ष की तुलना में 6.87% अधिक दर पर विक्रय किया गया है। इस अभियान से एक ओर जहाँ रेलवे परिसर की स्वच्छता में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर रेलवे की सुरक्षा में भी वृद्धि हुई है। ■

शेष - (रेलों के अंचल से) - 42

मेरा जीवन
ही
मेरा सन्देश है
MY LIFE
IS
MY MESSAGE

The Journey from
MOHANDAS to MAHATMA
35B

राष्ट्रीय रेल संग्रहालय में महात्मा गांधी पर प्रदर्शनी का आयोजन

राष्ट्रीय रेल संग्रहालय 6 अप्रैल से 7 जून तक महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी 'मोहनदास से महात्मा तक का सफ़र' (ए जर्नी फ्रॉम मोहनदास टू महात्मा') का आयोजन कर रहा है। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महात्मा गांधी और रेलवे के योगदान के प्रति लोगों को जागरुक करना है।

प्रदर्शनी को 6 अप्रैल से शुरू करने की एक खास वजह यह है कि इसी दिन गांधीजी ने दांडी यात्रा के पश्चात सार्वजनिक रूप से नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया था, इसी प्रकार 7 जून का भी उनके जीवन में विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसी दिन 1893 की रात्रि को दक्षिण अफ्रीका के पीटरमेरित्जबर्ग स्टेशन पर युवा वकील मोहनदास को एक श्वेत ने रंगभेद के कारण प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर उतार दिया था। इसी के बाद मोहनदास के महात्मा बनने का सफर शुरू हुआ था। इस प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण यह है कि इसे एक रेल के डिब्बे के अंदर लगाई गई है, जिसे तृतीय श्रेणी के डिब्बे के रूप में परिवर्तित किया गया है, जिसमें गांधीजी यात्रा किया करते थे।

प्रदर्शनी में गांधीजी की रेल यात्रा के दौरान ली गई फोटो को दर्शाया गया है। इसके अलावा प्रदर्शनी में एक धरोहर टेलीफोन रखा हुआ है, जिसमें गांधीजी के आध्यात्मिक संदेश सुनाई पड़ते हैं। यहां गांधीजी की प्रतिकृतियां भी रखी गई हैं, जिसमें स्लीपर्स (लकड़ी एवं चमड़े की दोनों) लालटेन, राहेल (किताब), लकड़ी की थाली, पाथी चरखा – चरखे का पूरा सेट, जेब घड़ी, गांधीजी के सिद्धांतों को दर्शाते हुए तीन बंदर, आदि शामिल हैं। सेल्फी स्पॉट के रूप में बनाई गई एक जगह पर गांधीजी की एक मूर्ति भी रखी गई है। स्वदेशी का प्रतीक चरखे से सूत कातते हुए गांधीजी की एक और मूर्ति दर्शाई गई है।

1927 में उनकी बोट मेल की यात्रा को भी यहां दर्शाया गया है। यहां एक ऑडियो-विजुअल भी लगातार चलता रहता है, जिसमें गांधी से जुड़ी क्लिपिंग दिखाई जा रही हैं। डिब्बे के अंत में 11 फरवरी, 1948 को गांधीजी की नई दिल्ली से इलाहाबाद की अंतिम यात्रा को दर्शाता हुआ एक डिब्बा है, जिसमें गांधीजी की अस्थियों एवं राख की प्रतिकृति को ले जाते हुए दिखाया गया है। लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए स्वच्छता शपथ भी दर्शाई गई है। यहां उन गाड़ियों की सूची भी है, जिनका नाम गांधीजी के जीवन-सिद्धांतों पर आधारित है। रेल संग्रहालय ने एक विचार सत्र 'चेंज 150' भी रखा है, जिसमें समाज में परिवर्तन लाने के लिए आपके विचार सादर आमंत्रित हैं। इस पुनीत कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, राष्ट्रीय रेल संग्रहालय का सहयोग कर रहा है। ■

सुनहरे इतिहास को समेटे भावनगर रेल संग्रहालय

11 मार्च, 2019 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अनिल कुमार गुप्ता द्वारा भावनगर मंडल की धरोहरों से सुसज्जित रेल संग्रहालय राष्ट्र को समर्पित किया गया।

मंडल कार्यालय के सामने स्थित इस संग्रहालय में नैरोगेज का स्टीम इंजन, नैरोगेज डीजल हाईड्रालिक रेल इंजन और एक मीटर गेज स्टीम क्रेन शामिल है, जिन्होंने भावनगर मंडल पर अपनी सेवायें प्रदान की हैं।

संग्रहालय में प्रवेश करते ही स्टेशन मास्टर कक्ष आता है, जिसमें आप गाड़ियों के संचालन की प्रणाली देख सकते हैं, यहां नील बाल टोकन ब्लाक प्रणाली देखने को मिल जाती है, जिससे पहले गाड़ियों का संचालन किया जाता था। इंजीनियरिंग, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल तथा वाणिज्य विभागों के अलग-अलग कक्ष स्थापित किये गये हैं। इनसे संबंधित अनूठे उपकरण रोचक ढंग से प्रदर्शित किये गये हैं।

संग्रहालय में पुरानी टिकट प्रणाली, टिकट ट्यूब डेटिंग मशीन, कलात्मक लकड़ी का फर्नीचर व दर्पण, ऐतिहासिक कुली बैज, भावनगर स्टेट रेलवे का लोगो, पुराने लैंप पोस्ट गार्ड लाईट, हाथ बत्ती एवं ऐतिहासिक वस्तुयें भी रखी गई हैं।

सिगनल एवं टेलीकॉम उपकरणों में सेमाफोर मैकेनिकल सिगनल उपकरण व मॉस टेलीग्राफ उपकरण सम्मिलित हैं। इसके अलावा पुरानी इमारतों की इंजीनियरिंग ड्राइंग भी दर्शाई गई हैं।

संग्रहालय में एक और प्रयोग किया गया है, जिसमें भावनगर का इतिहास, मण्डल का नक्शा, महत्त्वपूर्ण फोटो, आदि को एक वाटरप्रूफ कैप्सूल में रखकर संग्रहालय के प्रांगण में गाड़ दिया गया है, जिसे 26 मार्च, 2044 को खोला जाएगा।

उल्लेखनीय है कि तत्कालीन मंडल रेल प्रबंधक सुश्री रूपा श्रीनिवासन के विशेष प्रयासों से भावनगर का सुनहरा इतिहास एक जगह पर संकलित किया जा सका है। ■

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन

रतलाम मंडल के सुजालपुर एवं मक्सी रेलवे स्टेशन

महात्मा गांधी के जन्मस्थल पोरबंदर के रेलवे स्टेशन का दृश्य

जोका–एस्प्लानेड मेट्रो परियोजना का निरीक्षण

पी. सी. शर्मा, महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे ने 13 मार्च को आरवीएनएल के अधिकारियों के साथ ऑन–गोइंग जोका–एस्प्लेनेड मेट्रो परियोजना के कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया।

इस निरीक्षण के दौरान उन्होंने जोका स्टेशन, जोका मेंटेनेंस डिपो और मेजरहाट स्टेशन की साइट का दौरा किया। उन्होंने अब तक के काम की प्रगति की समीक्षा करने के लिए आरवीएनएल के अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की।

श्री शर्मा ने सभी संबंधितों को निर्देश दिया कि वे इस परियोजना को जल्द पूरा करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं। ■

चेन्नै में अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै द्वारा दक्षिण रेलवे, मुख्यालय में 27 मार्च को अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक आर.के कुलश्रेष्ठ ने की।

श्रीमती मानसी कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष, दक्षिण रेलवे महिला कल्याण संगठन, इस कवि सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

समिति के अध्यक्ष एवं दक्षिण रेलवे के महाप्रबंधक ने इस अवसर पर ए. श्रीनिवासन राजभाषा अधिकारी, दक्षिण रेलवे द्वारा तमिल में अनुदित डॉ. मुकेश गौतम के तीन कविता संग्रह, 'सच्चाईयों का रूबरू', 'लगातार कविताएं', और 'प्रेम के समर्थक हैं पेड़' का डॉ. ए. श्रीनिवासन द्वारा तमिल में अनुदित पुस्तकों, 'सोलवदेल्लाम उण्मै', 'तोडर

कवितैकळ', एवं 'आदलाल कादल सेय्वीर ... मरंगलै' का विमोचन किया। ■

रांची एवं दीघा स्टेशन का इको स्मार्ट स्टेशन के रूप में विकास

दक्षिण पूर्व रेलवे झारखंड में रांची एवं पश्चिम बंगाल में दीघा स्टेशन को इस जोन के इको स्मार्ट स्टेशन के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया है। दक्षिण पूर्व रेलवे के सार्वजनिक वेब पेज पर इको स्मार्ट स्टेशनों के लिए सुझाव और शिकायत के लिए एक ई मेल ecosmart.stn@ser.railnet.gov.in भी बनाया गया है। इको स्मार्ट स्टेशन के रूप में रांची एवं दीघा के विकास के संबंध में निम्नलिखित उपाय किए जा रहे हैं:

- स्टेशन की सीमा के भीतर ट्रैक सहित स्टेशनों पर प्लास्टिक और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम–2016 का अनुपालन
- ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत का विकास
- बॉटल क्रशिंग मशीन की स्थापना
- कचरे का निर्वहन
- इको फ्रेंडली शौचालय का विकास

- प्लास्टिक कैरी बैग पर प्रतिबंध
- स्टेशन परिसर में कृंतक एवं कीट नियंत्रण का प्रबंध
- अपशिष्ट जल/मल शोधन, जल पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग
- वन विभाग की मदद से वनीकरण एवं वृक्षारोपण
- पानी एवं ऊर्जा लेखा परीक्षा आदि। ■

महाप्रबंधक द्वारा सिगनल कारखाना, गोरखपुर छावनी का निरीक्षण

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक राजीव अग्रवाल ने 5 अप्रैल को सिगनल कारखाना, गोरखपुर छावनी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्रमुख मुख्य इंजीनियर पी.डी. शर्मा, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर श्रीकान्त सिंह, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर बेचू राय, प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर ए.के. पाण्डेय, प्रमुख वित्त सलाहकार एन.पी. पाण्डेय, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी एल.बी. राय, मुख्य सामग्री प्रबंधक ए.के. गुप्ता तथा मुख्य कारखाना प्रबंधक/सिगनल कारखाना जी.पी.एस. नारायण सहित वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे।

महाप्रबंधक ने रिले एवं पैनल कक्ष के निरीक्षण के दौरान नवीनीकृत रिले शाप का उद्घाटन किया। उन्होंने ट्रैक रिले असेम्बली सेक्शन, एकीकृत रिले उत्पाद एवं परीक्षण सेक्शन, इनड्योरेन्स टेस्ट लैब तथा रिले टेस्टिंग सेक्शन का निरीक्षण किया तथा वहां की कार्यप्रणाली के बारे में अधिकारियों से चर्चा की। महाप्रबंधक श्री अग्रवाल ने इलेक्ट्रिक लिफ्टिंग बैरियर गेट के प्रदर्शन को देखा तथा उसकी सराहना की। उन्होंने विद्युत प्वाइंट मशीन की कार्य प्रणाली देखने के बाद सामान्य कक्ष एवं यंत्र कक्ष के विभिन्न खंडों का निरीक्षण भी किया। निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने कारखाना परिसर में शीतल पेयजल स्थल का उद्घाटन किया तथा श्रमिक वाटिका में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वृक्षारोपण भी किया।

कारखाने की कार्य प्रणाली में और अधिक सुधार हेतु अनेक व्यवहारिक सुझाव देते हुए श्री अग्रवाल ने एनर्जी ऑडिट के लिए हर सेक्शन में एनर्जी मीटर लगवाये जाने का सुझाव दिया। बैठक के दौरान महाप्रबंधक को सिगनल कारखाना की गतिविधियों, उत्पादो एवं उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन के माध्यम से दी गई। ■

गुवाहाटी रेलवे स्टेशन को आईएसओ 14001: 2015 प्रमाणपत्र मिला

गुवाहाटी रेलवे स्टेशन को पर्यावरण प्रबंधन पद्धति के क्रियान्वयन के लिए आइएसओ-14001:2015 प्रमाणन प्राप्त हुआ है। गुवाहाटी रेलवे स्टेशन इस उपलब्धि को हासिल कर भारतीय रेल का पहला स्टेशन बन गया है। गुवाहाटी रेलवे स्टेशन ने इसके लिए राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के निर्देश का पालन करते हुए गुवाहाटी रेलवे स्टेशन में उच्च श्रेणी आरक्षित (वीआईपी) लांज, प्रतीक्षा गृह, वातानुकूलित और गैर वातानुकूलित विश्राम गृह, रिफ्रेसिंग क्षेत्र, फूड कोर्टस और सेनिटेशन के साथ पूरे स्टेशन परिसर में स्वच्छ और हरा-भरा माहौल यात्रियों को उपलब्ध कराया है, जिसके लिए उसे आईएसओ-14001:2015 प्रमाण-पत्र दिया गया। ■

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के रेलकर्मियों का सिंगापुर-मलेशिया दौरा

31 मार्च को पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कार्मिक विभाग द्वारा 61 रेलकर्मियों कों सिंगापुर एवं मलेशिया में एक हफ्ते के लिए भेजा गया।

रेल डिब्बा कारखाना में जनरल इंजीनियरिंग पर एक दिवसीय सेफ्टी ट्रेनिंग प्रोग्राम

रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला के टेक्निकल ट्रेनिंग सेंटर, डायरेक्टर ऑफ फैक्ट्रीज, चंडीगढ़ और पंजाब इंडस्ट्रियल सेफ्टी कौंसिल चंडीगढ़ द्वारा संयुक्त रूप से जनरल इंजीनियरिंग पर एक दिवसीय सेफ्टी ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आरसीएफ के लगभग 60 तकनीशियन एवं सुपरवाईजरों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में सीएस लाम्बा, डिप्टी चीफ मैकेनिकल इंजीनियर(एम) ने आर.के. मंगला, प्रिंसिपल चीफ मैकेनिकल इंजीनियर, जीतेन्द्र सिंह, चीफ प्लांट इंजीनियर तथा फैक्ट्री मैनेजर आरसीएफ, गुरजंट सिंह, असिस्टेंट डायरेक्टर (फैक्ट्रीज) फगवाड़ा भी उपस्थित थे। ■

इरकॉन को बेस्ट प्रफेशनली मैनेज्ड कंपनी समेत 3 सीआईडीसी विश्वकर्मा अवार्ड

इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड को 11वें सीआईडीसी विश्वकर्मा अवार्ड समारोह में तीन विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया है। इरकॉन को बेस्ट प्रफेशनली मैनेज्ड कंपनी (रु. 1000 हजार करोड़ से ज्यादा टर्नओवर वाली कंपनियों की श्रेणी में), बेस्ट कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट (शिवपुरी-गुना हाइवे प्रोजेक्ट के लिए) तथा सोशल डिवेलपमंट एंड इम्पैक्ट (छत्तीसगढ़ में किए गए सीएसआर कार्यों के लिए) प्रदान किया गया है। एस.के. चौधरी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरकॉन, दीपक सबलोक, निदेशक, परियोजना तथा एम.के. सिंह, निदेशक, वित्त, ने 7 मार्च, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह के दौरान ये अवार्ड प्राप्त किए। ■

इरकॉन ने सीएसआर के अंतर्गत प्रदान की एंबुलेंस

अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को एक बार फिर निभाते हुए इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड ने फलोदी, जोधपुर (राजस्थान) के राजकीय अस्पताल को एक एंबुलेंस प्रदान की। इरकॉन अधिकारियों ने 30 मार्च, 2019 को एंबुलेंस की चाबी अस्पताल प्रशासन को दी। यह एयर कंडीशंड एंबुलेंस नेब्युलाइजर, बीपी मशीन, ग्लुकोमीटर, सक्सन मशीन और ऑक्सीजन सिलेंडर आदि मेडिकल सुविधाओं से लैस है। इस एंबुलेंस की मदद से क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी और स्थानीय लोगों को इसका लाभ मिलेगा। इरकॉन ने हाल ही में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 पर बीकानेर-फलोदी सेक्शन का निर्माण बीओटी (टोल) आधार पर किया है। ■

महालक्ष्मी ईएमयू वर्कशॉप में ऑयल कलेक्शन सिस्टम की शुरुआत

पश्चिम रेलवे के महालक्ष्मी ईएमयू वर्कशॉप द्वारा एक इनहाउस और पर्यावरण अनुकूल ऑयल कलेक्शन, फिल्ट्रेशन एवं डिस्पेंसेशन सिस्टम विकसित किया गया है, जो ईएमयू कोचेज की बोगियों में भरे जाने वाले लूब्रेक्स-100 ऑयल को एकत्रित करने के अलावा इसके फिल्ट्रेशन एवं डिस्पेंसेशन में सहायक होगा। इस सिस्टम का उद्घाटन पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ए.के. गुप्ता द्वारा प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री अशेष अग्रवाल की उपस्थिति में 29 मार्च, 2019 को ईएमयू कारखाने के निरीक्षण के दौरान किया गया। इस प्रणाली से फर्श पर ऑयल बिखरने की समस्या से बचा जा सकता है। इस हरित पहल के क्रियान्वयन के फलस्वरूप

पश्चिम रेलवे के महालक्ष्मी ईएमयू वर्कशॉप में नवस्थापित पर्यावरण अनुकूल ऑयल कलेक्शन सिस्टम के दृश्य।

ऑयल की खपत में उल्लेखनीय कमी आयेगी, जिससे सालाना 17 लाख रु. की बचत होगी। ■

पश्चिम रेलवे में हरित पर्यावरण हेतु विशेष कार्यक्रमों का आयोजन

पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों पर विश्व पृथ्वी दिवस अत्यंत उत्साह एवं योजनाबद्ध तरीके से मनाया गया। सभी महत्त्वपूर्ण स्टेशनों सहित सभी मंडल कार्यालयों में मंडल रेल प्रबंधक एवं शाखा अधिकारियों द्वारा तथा सभी यांत्रिक कैरिज एवं वैगन डिपो, डीजल शेड तथा वर्कशॉप में वृक्षारोपण किया गया। अहमदाबाद स्टेशन पर 'एक पौधा भेंट करें' नामक एक विशेष अभियान चलाया गया तथा एनजीओ 'दृष्टि फाउंडेशन' के सहयोग से 1000 से अधिक यात्रियों को पौधे भेंट किये गये, जिन्हें वे अपने इच्छित स्थल पर लगा सकते हैं। मुंबई सेंट्रल, बांद्रा टर्मिनस, वलसाड, वडोदरा, रतलाम, इंदौर, अहमदाबाद तथा गांधीधाम स्टेशनों पर ट्रेनों में बायो टॉयलेट के इस्तेमाल के दौरान यात्री 'क्या करें, क्या न करें' के प्रति जागरूकता लाने हेतु एक अभियान चलाया गया। इस अभियान में बॉयो टॉयलेट के मॉडल प्रदर्शित किये गये तथा यह बताया गया कि बॉयो टॉयलेट किस प्रकार कार्य करती है एवं पर्यावरण के लिए यह कैसे हितकारी है। यात्रियों के बीच 'क्या करें, क्या न करें' के हैंडआउट वितरित किये गये। पश्चिम रेलवे के सभी स्टेशनों पर शिक्षाप्रद बैनर एवं पोस्टर लगाये गये। इसी प्रकार जल की बर्बादी रोकने एवं इसके संरक्षण हेतु

मंडल रेल प्रबंधक, राजकोट, पी.बी. निनावे ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ साइकिल रैली में भाग लिया (बाएं)। इंदौर स्टेशन पर 'पानी बचाओ' रैली का दृश्य (दाएं)

अहमदाबाद, इंदौर, रतलाम, आणंद, वडोदरा, नडियाड, अंकलेश्वर तथा भरुच आदि स्टेशनों पर विशेष अभियान के तहत 'जल बचायें' रैलियाँ निकाली गईं। ट्रेनों के पुश कॉक, फ्लश वॉल्व तथा अन्य वॉटरिडग लाइन एवं स्टोरेज टैंक से जल का शून्य रिसाव सुनिश्चित करने हेतु सभी कोचिंग डिपो में एक विशेष अभियान चलाया गया। स्टेशनों एवं रेलवे कार्यालयों में भी जल की बर्बादी रोकने हेतु इस प्रकार के अभियान चलाये गये। मंडल रेल प्रबंधक, राजकोट, पी.बी. निनावे द्वारा रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ राजकोट साइकिलिंग क्लब की सहभागिता में एक हरित एवं स्वच्छ यातायात माध्यम अभियान की शुरुआत की गई, जिसमें 105 साइकिल चालकों ने भाग लेकर प्रदूषण रहित माध्यमों के फायदे का संदेश दिया। विविध अभियानों, नुक्कड़ नाटकों, बैनर द्वारा विभिन्न महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर लोगों एवं रेलवे कर्मचारियों को प्लास्टिक बैग के इस्तेमाल न करने के प्रति जागरूक किया गया एवं पर्यावरण के लिए इसके दुष्प्रभाव की जानकारी दी गई। पश्चिम रेलवे के सभी स्टॉल एवं भोजनालय प्लास्टिक के इस्तेमाल न करने के अभियान को सफल बना रहे हैं। ■

अहमदाबाद स्टेशन पर यात्रियों को पौधे भेंट करने (बाएं) एवं रतलाम स्टेशन पर बॉयो टॉयलेट का प्रदर्शन कर लोगों को जागरूक करने का दृश्य (दाएं)

कामाख्या स्टेशन पर यात्री सुविधाओं में उल्लेखनीय सुधार

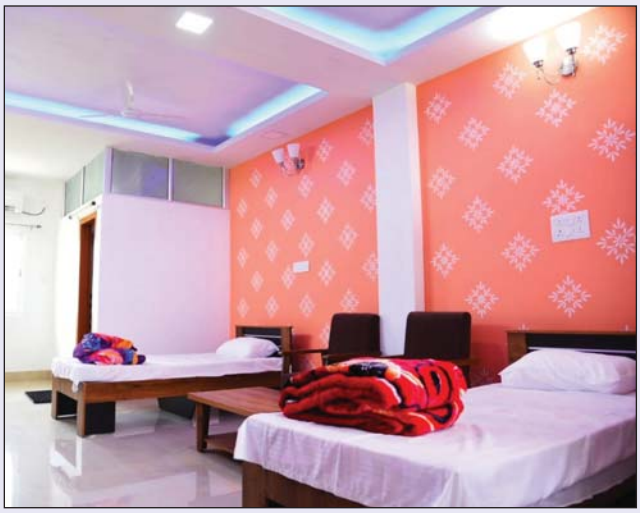

कामाख्या रेलवे स्टेशन दिन-प्रतिदिन पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण रेलवे स्टेशन बनता जा रहा है। अब इस स्टेशन से ज्यादातर लंबी दूरी की ट्रेनें यात्रा शुरू कर रही हैं। फलस्वरुप, यात्रियों के लिए और सुविधाओं के प्रावधान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकास के कई कार्य किए गए हैं। कुछ हद तक जरुरतों को पूरा करने के लिए पू.सी. रेलवे ने हाल ही में यात्रियों के लिए ज्यादा से ज्यादा सुविधाओं का संयोजन कर कामाख्या रेलवे स्टेशन पर उपलब्ध सुविधाओं में सुधार किया है।

हाल ही में उपलब्ध कराई गई सुविधाओं में निम्नलिखित शामिल हैं :- यात्रियों के लिए मुफ्त वाईफाई, एसी, टीवी इत्यादि की सुविधा के साथ 10 विश्राम कक्षों का निर्माण किया गया है। पुरुष यात्रियों के लिए मुफ्त वाईफाई, एसी, टीवी इत्यादि की सुविधा के साथ एक 10 बिस्तरों वाले डॉरमिटोरी का प्रावधान किया गया है। महिला यात्रियों के लिए मुफ्त वाईफाई, एसी, टीवी इत्यादि की सुविधा के साथ एक 10 बिस्तरों वाले डॉरमिटोरी का प्रावधान किया गया है। डिजिटल डिसप्ले सिस्टम, मोबाईल चार्जिंग प्वाइंटों, एसी, मुफ्त वाईफाई, महिलाओं / पुरुषों के लिए अलग-अलग वॉशरुम, पेय जल, टीवी एवं फीडबैक प्रणाली के साथ 120 यात्रियों को ठहराने की क्षमता वाले एक प्रतीक्षालय का निर्माण किया गया। प्लेटफॉर्मों पर बैठने की अतिरिक्त व्यवस्था की गई है।

एक कैफेटेरिया का प्रावधान किया गया है। स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय कलाकारों की वॉल पेंटिंग लगाई गई हैं। सामान घर का निर्माण तथा पानी के बूथों, शौचालयों, क्लॉक रुम और 150 वर्ग मीटर का एक प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय का भी (पुराने साधारण प्रतीक्षालय से) नवीकरण कार्य जारी है। कामाख्या स्टेशन से ट्रेन से सफर करनेवाले यात्रीगण अब इन उन्नत श्रेणी की सुविधाओं का लाभ उठा पाएंगे। ■

अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर एक्सेक्यूटिव लाउंज की सुविधा

यात्री अब अहमदाबाद स्टेशन पर भी एक्सेक्यूटिव लाउंज का लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए यात्री को दो घंटे के 150 रुपये देने होंगे।

एक्सेक्यूटिव लाउंज में वाई-फाई, लाइव केबल टीवी, चाय / कॉफी, पत्रिकाओं जैसी मानार्थ सेवाएं शामिल हैं।

इस लाउंज में कई प्रीमियम मूल्य वर्धित सेवाएँ, अर्थात यात्री 150 रुपये में वॉश एंड चेंज सेवाओं (टॉवल, बाथ सोप, शैम्पू, बॉडी लोशन और शॉवर कैप) का भी लाभ उठा सकते हैं।

लंबे समय के तक विश्राम हेतु आराम कुर्सियाँ एवं अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। ■

पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित मुख्यालय भवन के गौरवपूर्ण 120 वर्ष

विमलेश चन्द्र, सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर, अहमदाबाद

पश्चिम रेलवे के अनेक रेल भवनों में कई विरासत रेलवे वाले भवन भी हैं। मुंबई में रेलवे में वर्तमान में 'चर्चगेट मुख्यालय भवन' इन में से एक है। इसके अतिरिक्त 'बांद्रा उपनगरीय स्टेशन भवन' और महाप्रबंधक निवास भवन 'बोमबरसी' भी एक प्रमुख विरासत भवन है। ब्रिटिश समय में जीआईपी और बीबी एंड सीआईआर रेलवे में रेल संचालन में जबरदस्त प्रतियोगिता थी। जिसके कारण उस समय उनकी रेलगाड़ियों को संचालित करने के साथ-साथ उनके रेलवे स्टेशन भवनों को बनाने में भी एक दूसरे से जबरदस्त प्रतियोगिता थी। पश्चिम रेलवे का चर्चगेट मुख्यालय भवन भी उस समय इनकी आपसी प्रतियोगिता के कारण बहुत ही खूब सूरत बनाया गया था। तब यह भवन बीबी एंड सीआईआर रेलवे का मुख्यालय था और अब पश्चिम रेलवे का मुख्यालय भवन है। इस भवन को महाराष्ट्र की विरासत सूची में ग्रेड वन का दर्जा प्राप्त है। इस भवन के निर्माण और विशेषता के बारे में जानने के लिए इस रेलवे के इतिहास को भी जानना जरूरी है।

बाम्बे, बड़ौदा एंड सेंट्रल इंडिया का इतिहास : भारत में रेलवे के विकास की शुरुआत गारंटी प्रणाली के अंतर्गत हुई थी। जिसके अंतर्गत भारत में सर्वप्रथम ईस्ट इंडिया रेलवे कंपनी तथा दूसरी ग्रेट इंडियन पेनिनसुला कंपनी का 17 अगस्त, 1849 को गठन हुआ था तथा तीसरी रेल कंपनी थी बीबी एंड सीआईआर। जिसका गठन संसद में एक अधिनियम पारित करके वर्ष 1852 में किया गया था। इसने अपना प्रथम कार्यालय 2 जुलाई, 1855 को सूरत में स्थापित किया था। सूरत में इसलिए क्योंकि इसके कार्य की शुरुआत सूरत से हुई थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ इसका प्रथम समझौता 21 नवंबर, 1855 को हुआ था, जिसके अंतर्गत इसे सूरत से बड़ौदा होते हुए अहमदाबाद तक रेल लाइन बनाने की और रेलगाड़ी चलाने की स्वीकृति मिली। यह समझौता 99 वर्षों के लिए था। इसी के साथ सूरत से ताप्ती की घाटी से होकर खानदेश एवं नर्मदा घाटी तक शाखा लाइन का निर्माण कार्य भी शामिल था। जबकि सूरत से बम्बई की तरफ की रेल लाइन बनाने के लिए 2 फरवरी, 1859 को बीबी एंड सीआईआर तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ समझौता हुआ था। इस कम्पनी का मुख्य उद्देश्य था बम्बई को दिल्ली तथा उत्तर पश्चिम प्रान्तों से जोड़ना, जिसके लिए इसने कुछ अपनी रेल लाइनें बनायी। कुछ देशी राज्यों की रेल लाइनें तथा कुछ देशी राज्यों के सहयोग से रेल लाइन बनाकर इसने बम्बई-दिल्ली को बड़ौदा-रतलाम कोटा होकर बड़ी लाइन से तथा दूसरी अहमदाबाद-अजमेर होते हुए दिल्ली तक छोटी लाइन से जोड़ दिया। कम्पनी ने अपना तीसरा महत्त्वपूर्ण समझौता वीरमगाम से बधवान (सुरेन्द्रनगर) तक रेल लाइन बनाने के लिए 17 नवंबर, 1871 को किया था। इसके बाद नई रेल लाइनों के निर्माण के साथ-साथ अनेक समझौते होते रहे। इस प्रकार बीबी एंड सीआईआर वर्ष 1852 में अपने गठन से लेकर 1905 में अपने पुनर्गठन तथा सरकार द्वारा नियंत्रण में लिए जाने तक गारंटी रेलवे के रूप में कार्यरत रही। वर्ष 1905 में बीबी एंड सीआईआर के साथ हुए पहले सभी समझौते स्थगित कर दिये गये तथा इसे जारी रखने के लिए एक अल्पकालिक ठेका हुआ। 8 अप्रैल, 1907 को एक नया समझौता हुआ जिस पर बीबी एंड सीआईआर सहमत हो गयी थी। लेकिन आकवर्थ की अध्यक्षता में बनी रेल जांच समिति ने 1921 में अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि सरकार, रेल कम्पनियों के ठेके समाप्त करके स्वयं निर्माण एवं संचालन करे। वर्ष 1924 में रेलवे का राष्ट्रीयकरण शुरू हो गया। 1 जनवरी, 1942 को बीबी एंड सीआईआर को सरकार ने अपने नियंत्रण में ले लिया। कई छोटी-छोटी रेलवे को बीबी एंड सीआईआर में मिला लिया गया। 31 दिसम्बर, 1941 को पुनः सभी समझौते रद्द हो गये। इसके बाद वर्ष 1951-52 में 6 क्षेत्रीय रेलों का गठन हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश का विभाजन होने के कारण पूरी भारतीय रेल प्रणाली टूट-फूट गयी थी। इससे बीबी एंड सीआईआर भी काफी प्रभावित हुई थी। 5 नवम्बर, 1951 को बीबी एंड सीआईआर के साथ अन्य रेलवे जैसे कि सौराष्ट्र

रेलवे, जयपुर स्टेट रेलवे, राजस्थान स्टेट रेलवे, कच्छ स्टेट रेलवे को मिलाकर पश्चिम रेलवे का गठन हुआ।

बीबी एंड सीआईआर की प्रथम रेलगाड़ी–बीबी एंड सीआईआर की बड़ी लाइन का सर्वप्रथम रेल खंड उत्राण से अंकलेश्वर तक (46.27 मील) खंड को 10 फरवरी, 1860 को, नर्मदा पुल से भरुच तक के खंड को 22 जून, 1860 को, सूरत से उत्राण (3.62 मील) खंड को 19 नवम्बर, 1860 को खोला गया था। अंकलेश्वर नर्मदा पुल (8.96 मील) खंड को 5 दिसम्बर, 1860 को, भरुच–बड़ौदा खंड को 9 जनवरी, 1861 खोला गया था। बीबी एंड सीआईआर द्वारा प्रथम रेलगाड़ी 9 जनवरी, 1861 को भरुच और बड़ौदा के बीच भाप इंजन से चलायी गयी थी।

सूरत–बम्बई रेल लाइन का निर्माण–इस रेलवे को बनाने का मुख्य उद्देश्य था, गुजरात से मुंबई तक कपास की ढुलाई करना, जिसे फिर पानी के जहाज से इंग्लैंड भेजा जाता था। सूरत से सचिन (14.48 मील) रेलखंड को 18 मार्च, 1861 को, सचिन–नवसारी (14.89 मील) रेलखंड को 20 मई, 1861 को, नवसारी–वलसाड (39.03 मील) रेल खंड को 2 सितम्बर, 1861 को, वलसाड–ग्रांटरोड (195.57 मील) रेल खंड को 28 नवम्बर, 1864 को खोला गया था तथा इसी के साथ बम्बई में रेलगाड़ी का आगमन हो चुका था। हालांकि यह रेल लाइन ग्रांट रोड तक 22 अक्टूबर, 1864 को आ चुकी थी तथा इसके आगमन के एक महीने के बाद 28 नवम्बर, 1864 को यहां पर प्रथम रेलगाड़ी चलायी गयी थी। इस रेल लाइन को ग्रांट रोड–चरनी रोड (1.22 मील) खंड को 3 सितम्बर, 1868 को, चरनी रोड–मरीन लाइन (1.21 मील) खंड को 19 जून, 1869 को तथा मरीन लाइन–चर्चगेट (1.26 मील) खंड को 18 जनवरी, 1870 को खोला गया था। 22 अक्टूबर, 1864 को ग्रांड रोड तक रेल लाइन पहुँचने के बाद वर्ष 1866 में बैकवे नामक एक अस्थाई स्टेशन ग्रांट रोड से थोड़ा आगे बनाया गया। जहाँ से 10 जनवरी, 1870 को चर्चगेट तक ट्रेन चलाई गई थी। फिर यह लाइन 30 जून, 1873 को कोलाबा तक पहुंची। 7 अप्रैल, 1896 को कोलाबा स्टेशन को एक टर्मिनस स्टेशन के रूप में तीन प्लेटफॉर्म बनाकर खोला गया। 18 दिसम्बर, 1930 को बम्बई सेंट्रल स्टेशन का उद्घाटन हुआ तथा यह एक टर्मिनल स्टेशन के रूप में विकसित हुई। जिसके फलस्वरूप 31 दिसम्बर, 1930 को कोलाबा और चर्चगेट रेल खंड को हमेशा के लिए बंद कर दिया गया। जनवरी, 1931 में बम्बई सेंट्रल स्टेशन मेन लाइन के लिए टर्मिनल स्टेशन बन गया तथा इसी के साथ ही चर्चगेट स्टेशन, उपनगरीय रेलगाड़ियों के लिए टर्मिनल स्टेशन जबकि बम्बई सेंट्रल स्टेशन मेन लाइन के लिए टर्मिनल स्टेशन बन गया।

बम्बई में प्रथम रेलगाड़ी का आगमन–हालांकि बीबी एंड सीआईआर अपनी कई रेल लाइनें पहले ही खोल चुकी थी। इसमें प्रथम रेलगाड़ी की शुरुआत 9 जनवरी, 1861 को भरुच से बड़ौदा के बीच शुरू हो गयी थी। किन्तु पश्चिम बम्बई में सर्वप्रथम रेलगाड़ी 28 नवम्बर, 1864 को चल सकी। इस अवसर पर यह प्रथम रेलगाड़ी ग्रांट रोड टर्मिनल से सूरत तक चलायी गयी थी। यह कई श्रेणी वाली रेलगाड़ी थी। इसी के साथ ही बम्बई, सूरत और आगे गुजरात का सीधा रेल संपर्क स्थापित हो गया था। बम्बई से वीरमगाम तक का पूरा खंड चालू हो जाने के कारण बम्बई से वीरमगाम तक प्रथम सीधी रेलगाड़ी 30 नवम्बर, 1871 को चलायी गयी थी।

मुंबई में प्रथम उपनगरीय रेलगाड़ी – 1 नवम्बर, 1865 को तत्कालीन बीबी एंड सीआईआर की प्रथम उपनगरीय रेलगाड़ी, भाप इंजन से ग्रांट रोड से बसीन रोड (वसई) के बीच चलायी थी। बाद में 12 अप्रैल, 1867 को विरार और बैकवे स्टेशन के बीच एक भाप इंजन वाली उपनगरीय रेलगाड़ी चलायी गयी थी। रेल लाइन का विस्तार चर्चगेट तक होने पर 18 जनवरी, 1870 को उपनगरीय रेलगाड़ी बैकवे से चर्चगेट स्टेशन तक चलायी गयी।

मुम्बई में प्रथम बिजली की रेलगाड़ी–बीबी एंड सीआईआर बम्बई उपनगरीय का बिजलीकरण कार्य पूरा होने पर 5 जनवरी, 1928 को कोलाबा और बोरीवली के बीच 1500 वोल्ट वाली डीसी संकर्षण प्रणाली वाली प्रथम रेलगाड़ी की शुरुआत हुई। यह बीबी एंड सीआईआर की बिजली चालित प्रथम उपनगरीय रेलगाड़ी थी। फिर नवम्बर, 1934 में बोरीवली से विरार तक बिजलीकरण का कार्य शुरू किया गया। जो जून, 1936 में पूरा हो गया। जिस पर 17 अगस्त, 1936 को चर्चगेट से विरार के मध्य (62 किमी.) पर भी 1500 वोल्ट डीसी सप्लाई वाली बिजली की उपनगरीय रेलगाड़ी का उद्घाटन किया गया था।

मुख्यालय भवन का निर्माण, इतिहास और विशेषताएं–हालांकि इस मुख्यालय भवन के बनने के पहले बीबी एंड सीआईआर रेलवे का मुख्यालय कई जगह स्थानांतरित होता रहा। वर्ष 1863 में कम्पनी ने अपना प्रशासनिक कार्यालय सूरत से हटाकर परेल के लालबाग में तथा बाद में चर्चगेट स्थानांतरित कर लिया था। शुरू में इस कार्यालय को धनजी स्ट्रीट ग्रांट रोड मुंबई में लाया गया था। उसके बाद इसे मीडोज स्ट्रीट लाया गया और अंत में चर्चगेट स्ट्रीट में लाया गया था, जहां कंपनी ने रॉयल इंश्योरेंस कंपनी का भवन अपने कार्यालय के लिए उपयोग किया था। इसे अब ब्रेडी हाउस के नाम से जाना जाता है। एक समय ऐसा भी था, जब यह रॉयल इंश्योरेंस बिल्डिंग जीआईपीआर और बीबी एंड सीआईआर के मुख्यालय के रूप में एक साथ उपयोग की जाती थी, जोकि एक आश्चर्य वाली बात थी, क्योंकि यह दोनों कंपनी शुरू से एक दूसरे की प्रतियोगी थीं। जब बीबी एंड सीआईआर मुख्यालय के लिए नए भवन की आवश्यकता हुई, तब कंपनी प्रबंधन ने देशभर में अच्छे वास्तुशिल्पकार की खोजबीन शुरू की। तब देश भर में उस समय फेडरिक विलियम स्टीवेंस ही सबसे अच्छे वास्तु शिल्पकार थे, जिन्होंने विक्टोरिया टर्मिनस भवन

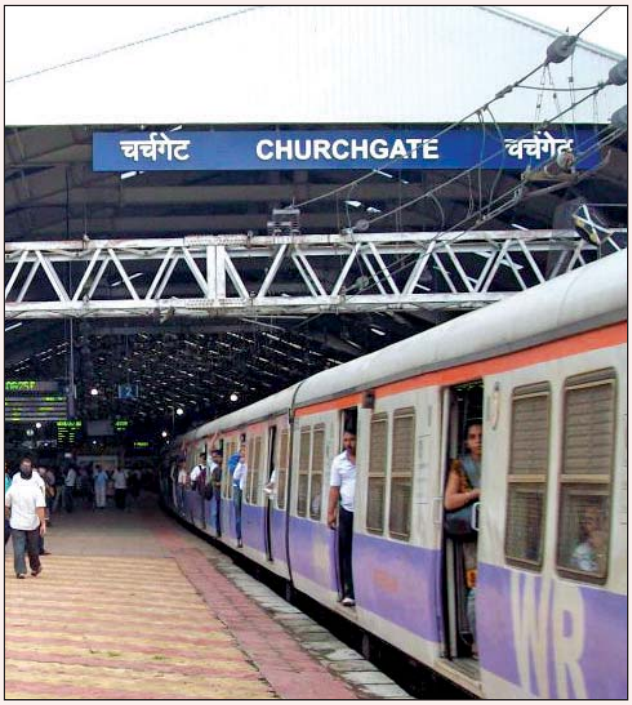

का डिजाइन और निर्माण कराया था। फिर भी कंपनी ने भारत में भी और इंग्लैंड में भी इस पर चर्चा और खोजबीन की। निर्माण कार्य के समय कम लागत रखने के लिए इसमें लिफ्ट और अग्नि सेवा को प्राथमिकता नहीं दी गई। जिसके कारण वर्ष 1905 में आग लगने पर इसमें काफी नुकसान हुआ। इसके निर्माण में कुल 5 वर्ष लगे। शुरुआत में विक्टोरिया टर्मिनस भवन को दोनों रेलवे अर्थात् जीआईपीआर और बीबी एंड सीआईआर को साझा करने का प्रस्ताव भी लाया गया, लेकिन जीआईपीआर ने ज्यादा जगह की आवश्यकता का कारण बता शेयर करने के लिए मना कर दिया। विक्टोरिया टर्मिनस भवन में जीआईपीआर के लोगो या प्रतीक से बीबी एंड सीआईआर को अलग पहचान नहीं मिल पा रही थी। इसके कारण भी बीबी एंड सीआईआर कंपनी ने अपने अलग भवन के लिए प्रयास तेज कर दिये थे। बीबी एंड सीआईआर के इस मुख्यालय भवन का निर्माण और डिजाइन प्रसिद्ध विक्टोरियन आर्किटेक्ट फेडरिक विलियम स्टीवेंस (1847-1900) ने किया था। इसे बनाने के लिए वर्ष 1889 में बीबी एंड सीआईआर कंपनी को जमीन प्रदान की गयी। इस भवन को बनाने के लिए कंपनी पहले ही तीन डिजाइनों को नामंजूर कर चुकी थी। वर्ष 1894 में वर्तमान चर्चगेट स्टेशन के सामने इस भवन का निर्माण कार्य शुरू हुआ तथा वर्ष 1899 में इसका निर्माण कार्य पूरा हुआ। इस भवन को बनाने के लिए उस समय कुल 7.5 लाख रुपये खर्च हुए थे।

इस भवन में वर्ष 1926 में मेसर्स ग्रेगसन, बेटली एंड किंग के डिजाइन के अनुसार अतिरिक्त भवन एनेक्स नाम से विस्तृत किया गया। दूसरे युद्ध विश्वयुद्ध दौरान इसके एनेक्स का विस्तार कर तीसरे तल का निर्माण किया गया। इसका मुख्य भवन नीले खुरदुरे बैसाल्ट पत्थरों से बनाया गया है। इसके गुंबद, मूल ढांचा, जालियाँ और नक्काशी वाली संरचना, ऊपरी भाग, खंभों का निर्माण कुर्ला, धांगद्रा और पोरबंदर से लाए गए पत्थरों से किया गया है, जबकि इसके ईटों को कल्याण से लाया गया था। इसका फर्श संगमरमर का बना है, जबकि प्रवेश हॉल की छत टीकवुड से बनी है, जो हल्की क्रीम एवं सुनहरे रंग की है। इसके बाहरी भाग में नीले रंग वाले पत्थर, कालम बेस में कुर्ला के पत्थर तथा तत्कालीन सीजन टिकट ऑफिस में पोरबंदर के पत्थर उपयोग किए गए थे। जबकि आर्क में पोरबंदर पत्थर और धांगद्रा के लाल पत्थर उपयोग किए गए थे। जबकि खिड़कियों में स्टेन ग्लास लगाए गए थे। इसके आगे के पश्चिमी भाग की लंबाई 276 फुट तथा मध्य टावर की ऊंचाई 160 फुट है। इसका टावर या स्तम्भ, आधार से 100 फुट की ऊंचाई तक वर्गाकार है उसके बाद अष्टकोणीय आकृत में पतला होता जाता है और अंत में वृत्ताकार गुंबद बन जाता है। मध्य में गुंबद के नीचे एक अतिरिक्त तल है। इसके दक्षिणी और पश्चिमी अग्र भाग में दो दो पोर्च बने हैं। इसके केंद्रीय भाग में कई शिल्पकृतियाँ स्थापित की हुई हैं। जिनमें इस रेलवे के अग्रणी में से एक कैनेडी और कर्नलो फ्रेंच की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। इस भवन के नींव का कार्य ठेकेदार गामाजी बालाजी एंड कंपनी को मिला था। जबकि सुपर स्ट्रक्चर के कार्य के लिए जागेजी हनुमान एंड कंपनी को ठेका मिला था। ड्रेनेज और पानी की आपूर्ति तथा इसकी फिटिंग के लिए ठेकेदार रिचड्र्सन एंड क्रूडास थे। इसी प्रकार टाइलों, संगमरमर और रंगीन शीशों के काम का ठेका सोराबजी वार्डन एंड कंपनी को मिला था। इस भवन की सजावट से जुड़ा कार्य जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स के छात्रों और उसके प्रिंसिपल ग्रीनवुड की देखरेख में और मिस्टर गोम्स के सहयोग से तैयार किया गया था। स्टीवेंस ने वर्ष 1893 में इस भवन को डिजाइन किया था। जबकि मई, 1894 में इसका निर्माण कार्य शुरू हुआ तथा जनवरी, 1899 में इसका कार्य पूर्ण हो गया। इस कार्य में उनका सहयोग उनके पुत्र चार्ल्स एफ. स्टीवेंस ने और रेजीडेंस इंजीनियर राव साहेब खंडेराव ने किया था। उस समय फेडरिक विलियम स्टीवेंस को महारानी विक्टोरिया द्वारा ओ.बी.ई. सम्मान से सम्मानित किया गया था। शुरुआत में इस भवन की लागत 4,75,000 रुपये थी, जबकि स्टीवेंस को उनके डिजाइन और देखरेख के लिए 50,000 रुपये दिया जाना तय हुआ था। इस भवन की शुरुआत में इसके भूमितल को सीजन टिकट कार्यालय, चीफ कैशियर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जनरल ट्रैफिक अधिकारी और ट्रैफिक सुपरिटेंडेंट के कार्यालय के रूप में उपयोग किया जाता था, जबकि पहले तल पर लोकोमोटिव सुपरिटेंडेंट, सेक्रेटरी, एजेंट, पुलिस सुपरिटेंडेंट, चीफ इंजीनियर के कार्यालय थे। टावर के नीचे सेंट्रल रूम को कंपनी के ऑफिस के रूप में उपयोग किया जाता था।

इस भवन के दूसरे तल पर आडिट विभाग, पुस्तकालय,

टिफिन रूम के लिए ऑफिस बनाया गया था। जबकि भवन के आगे और पीछे बगीचा बनाया गया था। भवन को गेट और रेलिंग लगा करके सड़क से अलग रखा गया था लेकिन मेन गेट सड़क से जुड़ा हुआ था। प्रवेश हाल में बनाई गई मूर्तियों का अपना रोचक इतिहास है। जिसमें बीबी एंड सीआईआर के जन्मदाता कनेडी की मूर्ति भी लगी हुई है। प्रवेश हाल में जिन 3 लोगों की मूर्ति लगी हैं, उनमें कैनेडी, फ्रेंच और फ्रांसिस मैथ्यू की मूर्ति है। इस भवन के निर्माण से जुड़े लोगों के बारे में जरूरी जानकारी इस भवन के प्रवेश हाल में मूर्तियों और सूचनाओं के आधार पर दी गई हैं। पश्चिम रेलवे मुख्यालय का यह भवन वेनेशियन गोथिक एवं इंडो सारासीनिक शैली का मिलाजुला स्वरूप है। भवन के निर्माण के एक सौ वर्ष पूरे होने के 2 वर्ष बाद 6 जनवरी, 2001 को स्पेशल पोस्टल स्टैंप जारी किया गया था

भवन में आग लगने की घटना–जब वेल्स के राजकुमार किंग जॉर्ज पंचम और राजकुमारी के स्वागत में इस भवन को विशेष रूप से रोशनी के साथ सजाया गया था। तब 15 नवंबर, 1905 को सुबह 5:00 बजे इस भवन में आग लग गई। कई घंटों की मेहनत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। इस दुर्घटना में भवन का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा, सम्मेलन कक्ष (बोर्ड रूम) और सेंट्रल ब्लॉक, रिकॉर्ड रूम तथा अन्य कमरे पूरी तरह जलकर राख हो गए। इस आग में अनेक ऐतिहासिक दस्तावेज भी जल गए थे। आग लगने के कारण भवन के आंतरिक भाग को काफी नुकसान हुआ था। आग लगने से प्रभावित और खराब हुये भाग का पुनर्निर्माण का कार्य एक वर्ष बाद किया गया। यह पुनर्निर्माण का कार्य इस भवन के डिजाइनर और निर्माता फेडरिक विलियम स्टीवेंस, जिनका पहले ही निधन हो चुका था, सुपुत्र और इस भवन के निर्माण में उनके सहयोगी रहे मिस्टर चार्ल्स एफ. स्टीवेंस की देखरेख में पूरा किया गया। इसके खराब भाग के पुनर्निर्माण में उस समय रुपये 3 लाख खर्च आया था।

फेडरिक विलियम स्टीवेंस का परिचय–फेडरिक विलियम स्टीवेंस का जन्म 11 मई, 1847 को इंग्लैंड के बाथ कस्बे में हुआ था। उनका बचपन जार्जियन शहर में बीता था। इनकी पहली नियुक्ति वर्ष 1867 में पब्लिक वर्क डिपार्टमेंट में पुणे में हुई थी। वर्ष 1869 में ये मुंबई शिफ्ट हो गए थे। यह भारत में 10 अक्टूबर, 1867 को आए थे तथा पुणे में सहायक इंजीनियर के पद पर इनकी नियुक्ति हुई थी। इंग्लैंड में अपने कार्यकाल में ये अपने कार्य और भवन डिजाइन में काफी प्रसिद्ध हो चुके थे। सुप्रसिद्ध विक्टोरियन आर्किटेक्ट विलियम स्टीवेंस ने मुंबई शहर के सुप्रसिद्ध भवनों विक्टोरिया टर्मिनस, फ्लोरा फाउंटेन का ओरिएंटल लाइफ इंश्योरेंस ऑफिस, गवर्नमेंट हाउस नैनीताल, महेसाणा कोर्ट हाउस, कोलकाता का स्टैंडर्ड लाइफ ऑफिस, कानपुर का पानी आपूर्ति विभाग का ऑफिस, आगरा और बनारस के साथ-साथ ईगतपुरी का चर्च, बॉम्बे एक्जिवीशन भवन तथा स्कूल आफ आर्ट डिजाइन किया था। इन्होंने इंप्रूवमेंट ट्रस्ट बिल्डिंग, म्युनिसिपल कॉरपोरेशन भवन, रायल अल्फ्रेड सेलर्स होम टाइप (पुलिस मुख्यालय), अपोलो बंदर का पोस्ट ऑफिस, आर्मी एंड नेवी स्टोर, मूलजी जेठा फाउंटेन, बॉम्बे एक्जिविशन भवन जैसे अनेक भवनों को बनाया था। इन्होंने मुंबई में और मुंबई के बाहर भी अनेक ऐतिहासिक भवनों का सफलतापूर्वक निर्माण वर्ष 1870 से 1890 के बीच कराया। बीबी एंड सीआईआर के इस मुख्यालय भवन के शुरुआत के एक वर्ष बाद ही इनका निधन इनके निवास मालबार हिल, मुंबई में 3 मार्च, 1900 को 54 वर्ष की आयु में मलेरिया से हो गया था। उनके निधन के तुरंत पहले इन्होंने अपना एक बड़ा प्रोजेक्ट चार्टर्ड बैंक ऑफिस भवन का कार्य पूरा कर लिया था। ■

रेल की रोचक जानकारी हेतु

भारतीय रेल

पत्रिका का

फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/bhartiyarailpatrika

लाइक करना न भूलें

गौरव और अध्ययन का विषय अमृत कुम्भ-2019

डॉ. अमित मालवीय, जनसम्पर्क अधिकारी, मुख्यालय, उत्तर मध्य रेलवे

5 मार्च, 2019 को कुम्भ 2019 का औपचारिक समापन हो चुका है, और आज जब इससे जुड़े लगभग सभी शिविर हट चुके हैं, तो पीछे मुड़ कर देखने पर एक अजब-सा एहसास हो रहा है। कुछ ऐसा एहसास जैसे आपके घर के किसी बड़े आयोजन के समापन पर होता है, जिसमें बिछड़न का मीठा-सा दर्द भी होता है पर पुनर्मिलन की आशा और विश्वास के साथ ही उत्कृष्ट आयोजन की सुखद संतुष्टिदायक अनुभूति भी होती है।

इन तैयारियों की शुरुआत में सदैव से ही कुम्भ और अर्धकुम्भ देखने वाले इलाहाबादवासियों को शायद अंदाजा भी नहीं था कि उनके साथ और उनके शहर के साथ क्या होने वाला है। इसी बीच इलाहाबाद-प्रयागराज हो गया। इस नाम परिवर्तन के पीछे बहुत होहल्ला हुआ पर यह परिवर्तन मात्र नाम का नहीं था वरन् ये एक बड़े पुनर्निर्माण की पूर्वसूचना थी।

पूरा नगर ही टूटा-फूटा, हर तरफ धूल का गुबार, जाम सड़के, ठहरा ट्रैफिक, अनिश्चय का नैराश्य कि कब तक रहेगी यह स्थिति या काम समय से पूरे होंगे कि नहीं, तब भी उस पर भारी थी नवसृजन की आशा, जिसने प्रयागराज नगरवासियों को इस अतुलनीय प्रसव पीड़ा को सहने का धीरज और साहस दिया। इस तरह के कामों, जिनमें बहुत से और काफी पुराने अतिक्रमण हटे, मंदिर, मजार और मस्जिद को हटाया या स्थानांतरित किया जाना था, को सामान्यत: बड़े विरोधों और आंदोलनों का सामना करना पड़ता है पर यह पूरी प्रक्रिया बिना किसी बड़े विरोध या गतिरोध के समाप्त हुई, इसके लिए संपूर्ण नगरवासी ही साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस विकास क्रम में अलिखित, अनपेक्षित और अद्वितीय सहयोग दिया और अपनी असुविधाओं को दर किनार करते हुए हर कष्ट को सहा।

इस प्रक्रिया में जब अक्टूबर, 2018 के आसपास शहर में 'पेंट माई सिटी' के कलाकार, नये सपनों को रंग भरने लगे थे तो जिस प्रकार जेठ की गरमी में रेगिस्तान में भटके पथिक को ठंडी हवा से किसी नखलिस्तान का एहसास होता है, कुछ वैसी ही आस आम लोगों को नगर में दिखने लगी। पर यह तो मात्र झांकी थी, इसके बाद एक के बाद एक 9 रोड ओवर ब्रिज/फ्लाईओवर पूरे हुए और 6 रोड अंडर ब्रिज जो लोकप्रिय भाषा में डॉट पुल कहलाते हैं वो चौड़े हुए, सड़कें चौड़ी हुईं पर आवागमन सरल होता नहीं दिखता था। कहीं डिवाइडर बन रहे थे तो ना जाने क्यों चौराहों पर काम हो रहे थे। पर नवम्बर और फिर दिसम्बर पूरा होते-होते काम तो चल रहे थे पर वो पूर्ण स्वरूप में आ रहे थे। हर सुबह किसी चौराहे पर कुछ नया होता था।

पूरा शहर कुम्भ में संपूर्ण विश्व से प्रयागराज आने वाले अतिथियों को सनातन संस्कृति से परिचित कराने और 'अतिथि देवो भव' के भाव से सभी के स्वागत को बड़ी तेजी से तैयार हो रहा था। बाहर से आने वालों को छोड़िए स्थानीय शहरी भी नए चौराहों को देख कई बार गफलत में पड़ रुक या मुड़ जाते थे। इसी बीच लगभग 500 वर्षों की अकबर के किले में जेल के बाद पौराणिक अक्षय वट को खोलने की घोषणा ने तैयारियों को नई ऊंचाई दी।

फिर शुरू हुआ आगंतुकों, साधुओं और कुछ सच्चे, कुछ ढोंगी महात्माओं के आगमन का दौर, अखाड़ों का नगर प्रवेश, सर्वप्रथम हुई जूना अखाड़े की पेशवाई जिसके बाद धीरे-धीरे मेले ने आकार लेना प्रारंभ किया। बसने लगी तंबुओं की नगरी, जिसके निवासी थे रहस्यमई जीवन जीने वाले बैरागी, सन्यासी, निरंकारी और भिन्न-भिन्न प्रकार के अलग-अलग रंगों वाले बाबा, नागा या दंडी स्वामी, कुछ नर कुछ नारी और तो और किन्नर भी। पर अभी भी मेला क्षेत्र और नगर में काम जारी थे।

14-15 जनवरी आते-आते मेला बस गया था। मकर संक्रांति के शाही स्नान के साथ ही प्रयागराज में कुंभ मेले की शुरुआत हो गई। कुंभ क्षेत्रफल और जनसंख्या के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा मेला होता है। इस साल तो मेला परिसर तकरीबन 35 वर्ग किमी तक फैला हुआ था। यह दुनिया के 4 देशों के भौगोलिक क्षेत्रफल से बड़ा था।

इस समय तक पूरे प्रयागराज नगर के मेला क्षेत्र को जोड़ने वाले मार्ग शायद कुछ उसी प्रकार से रंग-पुछ और पूरी तरह सज कर तैयार हो गए थे जैसे कभी जनकपुरी अपनी बिटिया सीता को ब्याहने के लिए अयोध्या से आई बारात के लिए तैयार हुई होगी। पूरा मेला क्षेत्र धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बन गया। मेला क्षेत्र घूमा तो सभी धार्मिक संगठनों और संतों के शिविरों में प्रवचन, यज्ञ, धर्म प्रचार और धार्मिक विषयों पर विचार विमर्श होता मिला, वहीं सांस्कृतिक पंडालों को देख भारतीय सनातन संस्कृति की विविधता का एहसास हुआ। इस विविधता को समरस रूप से पूरे 35 वर्गकिमी मेला क्षेत्र में सुनियोजित तरीके से दर्शाया गया था।

सामजिक कार्यों से जुड़ी गतिविधियों में नेत्र कुम्भ एक अदभुत आयोजन रहा जिससे लाखों लोगों को जाने-माने चिकित्सकों से नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा जिसमें चिकित्सकीय परामर्श, चश्मा और शल्य चिकित्सा शामिल थी, का लाभ मिला।

शिवकुटी के कोने पर बसे पूर्वोत्तर राज्यों के शिविर से अरैल में दूसरे कोने में बसे संस्कृति कुम्भ के कैम्प तक भारतीय संस्कृति के विराट और समृद्ध स्वरूप का दर्शन

आगुंतकों को पूरे मेले में आकर्षित करता रहा। विभिन्न सेक्टरों में लगे संस्कृति विभाग के पंडालों में पधारे कलाकारों के प्रदर्शन से कुम्भ में आए श्रद्धालु आनंदित होते रहे। इन प्रदर्शनों में दुनिया के अलग-अलग देशों से आए कलाकारों द्वारा रामलीला और रासलीला हो, जनजातीय नृत्य हो या फिर लोकगीत या शास्त्रीय प्रदर्शन, ये सभी अतिथियों के अनुभवों में अगणित रंग भरते रहे। पूर्वोत्तर राज्यों के शिविर में राज्यवार प्रदर्शन ना केवल दर्शकों के लिए ही आनंददायक रहा, वरन यह आयोजन सुदूर राज्यों जैसे नागालैंड और मिजोरम जहां का आम समाज सनातन संस्कृति से कट चुका है, वहां के युवाओं को मूल धारा में जोड़ने में सफल रहा।

उनमें पहले-पहल कौतूहल का भाव रहा और बाद में वही भाव सहज रूप से अपनत्व में बदल गया। यह आयोजन ना केवल संस्कृति के प्रदर्शन की दृष्टि से अद्वितीय रहा।

इसी क्रम में अरैल में लगा संस्कृति और कला कुंभ आकर्षण का केंद्र रहा। कला कुम्भ जहां कुम्भ के इतिहास से जुड़े पुराने दस्तावेजों को आम जन के लिए उपलब्ध कराने के साथ ही बहुत ही खूबसूरत और चिताकर्षक ललित कला सामग्रियों को दर्शा रहा था वहीं संस्कृति कुम्भ में भारतीय संस्कृति के विकास के क्रम को प्रदर्शित किया गया था।

दस्तावेजों में जहां धर्मग्रंथों में कुम्भ से जुड़े पुराने उल्लेख दिए गए थे, वहीं मुगल और अंग्रेजी दौर के आयोजनों के मिसिलों के कागजात भी प्रदर्शित थे। इससे ना केवल आयोजनों की जानकारी मिल रही थी बल्कि इस प्रदर्शन से यह भी अनायास ही दिखा कि, हमारी संस्कृति और धर्म को सहेजने में हमारे पूर्वजों को कितना संघर्ष और बलिदान करना पड़ा होगा।

संस्कृति कुम्भ - हड़प्पा काल से प्रारंभ हो रामायण काल, महाभारत काल सहित 17 खंडों में बंटी यह प्रदर्शनी भारतीय संस्कृति, दर्शन, विज्ञान और इतिहास का रोचक और मनोहारी प्रस्तुतीकरण थी जो वर्तमान पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने और संस्कारों को सींचने का अप्रतिम प्रयास थी।

कुम्भ में स्वच्छता का उल्लेख किए बिना, दिव्य कुम्भ-भव्य कुम्भ की कथा पूरी नहीं हो सकती। वर्तमान मेले ने स्वच्छ आयोजनों के लिए एक नया मानदंड स्थापित कर दिया है।

हर बार मेला अपने पीछे गंदगी का अंबार छोड़ जाता था और आस-पास रहने वाले तथा स्वयं गंगा और यमुना नदियों को इसका बोझ सहना पड़ता था पर इस बार ऐसा कुछ ना मिला। बड़ी संख्या में शौचालयों, कूड़ेदानों, स्वच्छग्रहियों जो ग्रामीणों को खुले में शौच से ना केवल रोक रहे थे बल्कि उन्हें शौचालयों के प्रयोग के लिए प्रेरित भी कर रहे थे, उनकी उपस्थिति एवं साथ ही अधिकांश श्रद्धालुओं के अघोषित योगदान ने मेले को अविस्मरणीय बना दिया।

प्रशासन जिसमें जिला, पुलिस, निर्माण से जुड़ी संस्थाएं, रेल, परिवहन निगम सभी शामिल हैं के साथ ही नगरवासियों के प्रयासों ने इस मेले के आयोजन को सुरक्षित और सफल बनाया। हजार से अधिक विशेष रेल गाड़ियों का संचालन और लगभग 75 लाख यत्रियों का परिवहन, स्नान दिवसों पर नि:शुल्क कुम्भ शटल बस सेवा का संचालन, कई रिकॉर्डों का बनना प्रशासन के कुम्भ को सफल बनाने के प्रयासों का प्रकटीकरण ही था।

शिकायत करने वालों को शिकायत के सैकड़ों बहाने मिल सकते हैं और सदैव ही सुधार की संभावना भी रहती है पर आजादी के बाद से इन आयोजनों को देखने, जानने और सहभागिता करने वाले अधिकांश लोगों को आनंदित किया है। अंत में यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि, इतने बड़े आयोजन जिसमें 24 करोड़ लोगों के आने का सरकारी आंकड़ा है, उसकी सफलता प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव और शेष दुनिया के लिए अध्ययन का विषय रहेगी। ■

अनुपम विरासत से परिपूर्ण हैं एहोल के मंदिर

विद्युत प्रकाश मौर्य

एहोल मंदिर

कर्नाटक के बगलकोट जिले का गांव एहोल, भले ही सैलानियों की नजरों में ज्यादा नहीं चढ़ा हो पर यह देश की अनुपम विरासत समेटे हुए है। छठी से 12वीं सदी के बीच बने यहां 125 से ज्यादा मंदिर अभिनव वास्तुकला और सौंदर्य समेटे हुए हैं। सातवीं शताब्दी में एहोल वास्तु कला का प्रमुख केंद्र बन चुका था। इसकी समृद्धि का एहसास यहां आकर ही हो पाता है। संस्कृत में एहोल को आर्यपुर कहा गया है। यह भी कहा जाता है कि अडवश्वर नामक संत ने यहां कठोर तपस्या की थी और लोगों का दुख दूर किया था। सैकड़ों साल तक एहोल लोगों की नजरों से दूर था। ब्रिटिश काल में 1912 में एहोल के स्मारकों के संरक्षण की शुरुआत हुई। अब यहां संरक्षित स्मारकों की सूची में 123 देवालय हैं।

एहोल चालुक्य शासन काल में वास्तु शिल्प और मंदिर निर्माण का दूसरा प्रमुख केंद्र था।

एहोल के मंदिरों को देखते हुए मुझे यह आश्चर्य होता है कि देश की सुंदरतम विरासत तक काफी कम लोगों की नजर क्यों पड़ी है। यह कर्नाटक की छिपी हुई विरासत है। यह आस्थावान और घुमक्कड़ लोगों की नजर में ज्यादा क्यों नहीं चढ़ा है, सोचने लायक है। इतनी अदभुत विरासत एक गांव में रची बसी है जहां पहुंचने के लिए नियमित वाहन सेवा की भी कमी है।

यह पट्टडकल का विस्तार है। आपको एहोल जाने के लिए अगर अपना वाहन न हो तो बसें दिन भर में बहुत कम मिलती हैं। हालांकि कर्नाटक परिवहन की और ग्रामीण नेटवर्क में चलने वाली सरकारी बसें इधर चलती हैं। पर यहां आने के लिए दिन भर वाहन सुलभ नहीं है। इसलिए समय का बेहतर सदुपयोग करने के लिए जरूरी है कि दिन भर के लिए ही कोई वाहन बुक कर लिया जाए। अभी बादामी में बाइक रेंट या स्कूटी रेंट का कोई विकल्प दिखाई नहीं देता। कुछ सुंदर नजारे वाले पहाड़ी रास्तों को पार करते हुए हम एहोल पहुंच गए हैं। एक गांव आता है। गांव में घर देखकर लगता है लोग गरीब हैं। गांव में ही कुछ ऐतिहासिक मंदिर नजर आते हैं। पर इन मंदिरों से ठीक सटकर घर बने हुए हैं। ये मंदिर संरक्षण के लिहाज से बेकद्री का शिकार हैं। पहले लगता है कि हम यही सब देखने आए हैं। पर गांव पार करने के बाद एक चौराहा आता है। वहां पर एहोल मंदिर परिसर है। एक परिसर में कई मंदिर हैं। परिसर के सामने सरोवर है वहां भी तीन मंदिर हैं।

उत्तर भारत के लोग बादामी और उसके आसपास के समृद्ध चालुक्य राजाओं के धरोहर को देखने इतनी कम संख्या में क्यों आते हैं। एहोल का मंदिर समूह राष्ट्रीय धरोहर है, पर इसे भी अलग से विश्व विरासत की सूची में शामिल करवाने की कोशिश चल रही है। जब इन देवालयों के संरक्षण की शुरुआत हुई तो कई मंदिरों में स्थानीय लोगों ने कब्जा कर लिया था। उसमें घर बनाकर रहने लगे थे।

सातवीं सदी का अदभुत मंदिर - दुर्ग देवालय

मुख्य परिसर में हम सबसे पहले पहुंचे हैं, दुर्ग देवालय। दूर से ही यह आकार में सभी मंदिरों से अलग नजर आता

एहोल दुर्ग देवालय

है। इसकी संरचना किसी शिवलिंगम जैसी है। यह सातवीं शताब्दी का बना हुआ अत्यंत सुंदर मंदिर है। इसके अंदर बाहर बनाई गई कलाकृतियां चमत्कार करने वाली हैं। मंदिर के गर्भ गृह के चारों तरफ प्रदक्षिणा पथ बना है। यह किसी बौद्ध मंदिर के चौत्य (हाल) की तरह प्रतीत होता है। मंदिर का गुंबद लगता है मानो अपने पूरे आकार में नहीं है।

मंदिर की बाहरी दीवारों पर नरसिंह, महिषासुर मर्दिनी, वराह, विष्णु, शिव, अर्धनारीश्वर आदि की प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं। मंदिर में कुछ सुंदर मिथुन प्रतिमाएं भी देखी जा सकती हैं। मंदिर में प्रकाश जाने के लिए झरोखे बनाए गए हैं। मंदिर का मुख्य आधार तकरीबन आठ फीट की ऊंचाई पर है। मंदिर के अंदर से देखने पर इसके छत में उकेरी गई देव प्रतिमाएं अनायास ही विस्मित करती हैं। छत पर एक तालाब का चित्रण है जिसमें कई कमल के फूल खिले हैं। वहीं छत पर एक राजा और उसके साथ महिला सहायिकाओं का सुंदर चित्र भी उकेरा गया है। मंदिर का प्रवेश द्वार पूरब की ओर से है। मंदिर में बनाई गई कई मूर्तियां विध्वंस कर दी गई हैं। इसके बावजूद मंदिर का सौंदर्य अभिभूत करता है। मंदिर में आप नरसिम्हा, विष्णु और गरुड़ आदि की प्रतिमाएं भी देख सकते हैं।

मंदिर के पास बावड़ी – दुर्ग देवालय से आगे बढ़ें तो एक बावड़ी नजर आती है। यह बावड़ी आकार में बहुत बड़ी नहीं है, पर इसमें उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। इसमें नीचे पानी दिखाई देता है। हमें पुरातत्व विभाग के कर्मचारी नीचे नहीं उतरने की सलाह देते हैं। पर अनादि और माधवी इस बावड़ी में उतरना चाहते हैं। वे कुछ सीढ़ियां उतरते भी हैं, फिर वापस लौट आते हैं। बावड़ी का आकार वर्गाकार है। इसमें एक तरफ से सीढ़ी बनाई गई है। संभवत: यह मंदिरों में पूजा करने से पहले स्नान और जल लेने के लिए बनाई गई होगी। इस बावड़ी के जल को आजकल संरक्षित नहीं किया गया है। पानी में गंदगी नजर आ रही है। हम अक्सर जल संरक्षण के नाम पर लापरवाही बरतते हैं।

देश का सबसे पुराना शिवालय - लडखान मंदिर

क्या आपको पता है कि देश का सबसे पुराना मंदिर कौन सा है। आजकल हम देश हम जितने भी ऐतिहासिक मंदिरों के दर्शन करते हैं उनमें ज्यादातर छठी से 16वीं सदी के बीच बने हैं। छठी सदी से पहले के निर्मित मंदिर बहुत कम मिलते हैं। एहोल का लडखान मंदिर जो मूल रुप से शिव का मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण काल 450 ई. का बताया जाता है। इस लिहाज से यह देश के सबसे पुरातन मंदिरों में शामिल है। हालांकि इससे भी पुराना मंदिर बिहार के कैमूर जिले के मुंडेश्वरी देवी को माना जाता है जो 105 ई. का बना हुआ बताया जाता है। मुंडेश्वरी मंदिर में कहा जाता है कि तब से लगातार नियमित पूजन हो रहा है। हालांकि लडखान मंदिर में नियमित पूजा नहीं होती।

पर अगर शिव मंदिरों में बात करें तो यह देश का सबसे पुराना मंदिर है। चालुक्य शासन में इस मंदिर का इस्तेमाल शाही आयोजन और विवाह समारोह आदि के लिए होता था। मंदिर में एक ही प्रवेश द्वार है। यह दूर से किसी आवास के सदृश्य ही नजर आता है। इसकी छत सीढ़ीदार बनाई गई है जिससे बारिश में पानी नहीं ठहर सके। यह दूर से किसी लकड़ी के घर होने का एहसास कराता है, पर यह ईश्वर का अपना आवास है।

एहोल का लडखान मंदिर बाहर से बहुत सादगी भरा नजर आता है। इसमें कुल 16 स्तंभ हैं जिसके सहारे मंदिर की छत खड़ी है। मंदिर के पीछे की दीवार से सटे कमरे को गर्भ गृह का रूप दिया गया है। कहा जाता है कि यह प्रारंभिक तौर पर सूर्य देव का मंदिर था। पर बाद में यह शिवालय के रुप में परिणत हो गया। यह मंदिर पंचायत शैली में बना हुआ है। यह दो मंजिला है। इसकी ऊपरी मंजिल पर छोटा सा सुंदर मंडप बना हुआ है। इस मंडप पर भी देव प्रतिमा उकेरी गई है। मंदिर के हाल में बीच में नंदी की छोटी सी प्रतिमा है। सभी मंदिरों की तरह नंदी का मुख मंदिर के गर्भ गृह की ओर है। गर्भगृह में काले रंग का शिवलिंगम स्थापित किया गया है। छत पर जाने के लिए लकड़ी की सीढ़ियां बनी हुई हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर सुंदर नक्काशी किए हुए देवी देवताओं के चित्र देखे जा सकते हैं। मंदिर की बाहरी बालकोनी पर कुछ मर्तबान (घड़े) के चित्र और नदियों की देवी गंगा का चित्र देखा जा सकता है। दूसरी तरफ प्रेम में आबद्ध एक युगल का सुंदर चित्र बना हुआ है। मंदिर की दीवारों पर चालुक्य राजाओं का प्रतीक चिन्ह भी अंकित किया गया है।

मंदिर के सभी 16 स्तंभों पर भी अदभुत नक्काशी देखी जा सकती है।

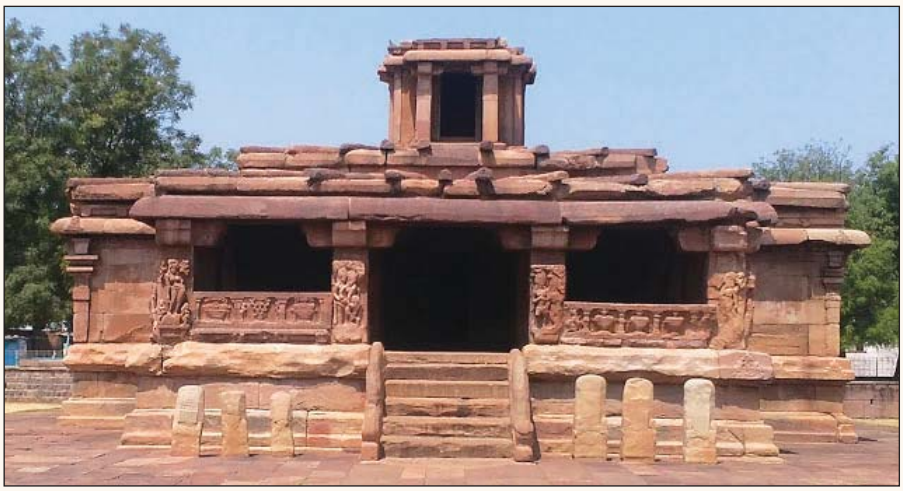

लडखान मंदिर

इनमें राजसी वैभव के प्रतीक दिखाई देते हैं। एक छतरी, दो मशालें नीचे बैठे दो व्यक्ति स्तंभों की नक्काशी को अतीव सुंदर बनाते हैं। एक स्तंभ पर गाय और उसके साथ बाल गोपाल का चित्र नजर आता है। मंदिर में अलग-अलग जगह के झरोखों से धूप आने का इंतजाम है। इन झरोखों में भी जालीदार नक्काशी दिखाई देती है। मंदिर की छतों पर भी फूलों की सुंदर नक्काशियां दिखाई देती हैं। एहोल मंदिर समूह का यह पहला मंदिर लगता है अंदर की ओर से काफी मनोयोग से निर्मित किया गया था। कुछ मामलों यह बादामी के गुफा मंदिरों से साम्य रखता है। दूर से देखने पर लडखान मंदिर किसी अनगढ़ संरचना सा नजर आता है, पर करीब से देखने पर यह काफी सुंदर है।

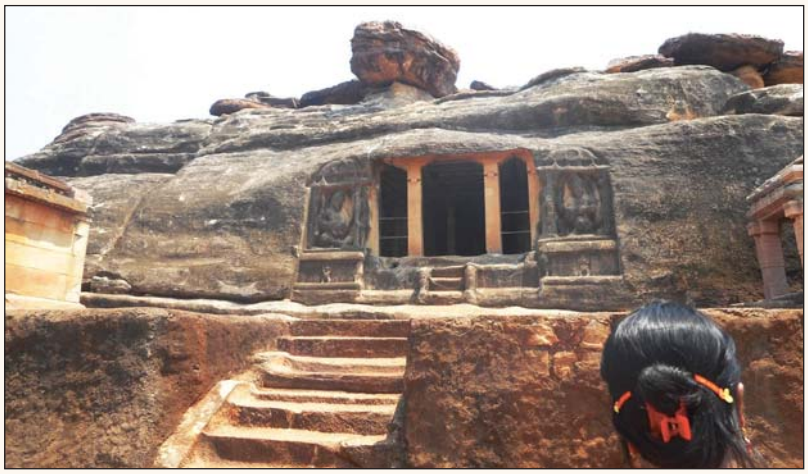

एहोल गुफा

एहोल के मंदिर समूह में लडखान मंदिर दुर्ग मंदिर के दक्षिण में स्थित है। इसका नाम लडखान क्यों पड़ा इसको लेकर भी एक कहानी है। दरअसल इस मंदिर में बाद में गांव का लडखान का परिवार रहने लगा था, इसलिए लोग इसे लडखान मंदिर के नाम से पुकारने लगे। लडखान एक मुस्लिम राजकुमार था, जिसने इस मंदिर में थोड़े समय के लिए अपना निवास बनाया था। बाद में लोग मंदिर को उसी के नाम से पुकारने लगे।

सूर्य नारायण देवालय – एहोल के मंदिरों की कलात्मकता देखते हुए लगता है मानो समय की सुई रूक गई हो, हम सूर्य मंदिर से मुखातिब हैं। सूर्य नारायण देवालय का निर्माण आठवीं सदी में हुआ है। इसमें चार स्तंभों और बारह अर्ध स्तंभों पर वृत्ताकार मंडप का निर्माण किया गया है। गर्भ गृह पर गरुड़, गंगा यमुना के चित्र बनाए गए हैं। गर्भ गृह के अंदर सूर्य देव की सुंदर मूर्ति है। सूर्य धरती पर एक मात्र देवता हैं जो हमें रोज दिखाई देते हैं। पर उनके मंदिर देश में बहुत कम ही हैं।

बडिगेर (सुतार) देवालय – नौंवी सदी का बना यह एक और सूर्य मंदिर है। इसके छत पर सूर्य का चित्र बना हुआ है। बादामी चालुक्य राजाओं द्वारा निर्मित इस देवालय से लगा हुआ एक सरोवर भी है।

सूर्यनारायण देवालय के पास पांचवीं सदी का बना गौडर देवालय देखा जा सकता है। कभी इस देवालय में गांव का मुखिया निवास करता था। कन्नड़ में गौड़ा का मतलब मुखिया होता है।

बौद्ध चौत्यालय-एहोल के मंदिर परिसर में एक बौद्ध चौत्यालय भी देखा जा सकता है। इसका मुख पूरब की तरफ है। इसके एक बड़े हिस्से को चट्टान को काटकर बनाया गया है। इसके गलियारे के मध्य में बुद्ध की मूर्ति पद्मासन की मुद्रा में बनी हुई है। उसके ऊपर छतरी है। यहां बुद्ध यों बैठे हैं मानो वे प्रशांत मुद्रा में नजर आ रहे हों। उनके घुंघराले बाल हैं, घुटने तक धोती है, और वे ध्यानमग्न नजर आ रहे हैं।

हुच्चमल्ली देवालय समूह – एहोल के मुख्य मंदिर परिसर से निकलने के बाद हमलोग अगले मंदिर की ओर चलने वाले हैं। पर थोड़ी तरावट की जरूरत है तो गन्ने का जूस बेहतर हो सकता है। हम तीनों ही गन्ने का जूस पीते हैं। मैं दही तो पहले ही पी चुका हूं। अब हमलोग तकरीबन एक फर्लांग आगे चलकर पहुंचे हैं हुच्चमल्ली देवालय समूह में। यह एक शिव मंदिर है। गर्भ गृह और दरवाजों पर कई सुंदर कलाकृतियों का निर्माण हुआ है। इसे 11वीं सदी में कल्याणी चालुक्य राजाओं द्वारा निर्मित बताया जाता है। मंदिर के सभा मंडप में इंद्र, यम, कुबेर आदि के चित्र हैं। इस मंदिर में कुछ प्रेम मग्न मिथुन मूर्तियां भी हैं, बिल्कुल खजुराहो की तरह। पर यह अति सुंदर मंदिर एहोल में भी एक कोने में उपेक्षित प्राय दिखाई देता है। देवालय के परिसर में एक छोटा सा तालाब भी है। इस तालाब की दीवारों पर भी देव प्रतिमाएं उकेरी गई हैं। इसके साथ ही पंचतंत्र की कथाओं से संबंधित चित्र भी यहां दिखाई देते हैं। हुच्चीमल मंदिर समूह में एक छोटा सा मंदिर भी है, पर अब वह नष्ट प्राय हो गया है।

रावणफडि मंदिर – हमारा अगला पड़ाव है रावणफडि। यह एक गुफा मंदिर समूह है। यह एहोल के सभी स्मारकों में सबसे पुराना है। हालांकि यह बादामी के गुफा मंदिरों से छोटा है। इस मंदिर के बाहर चार खंभे मात्र दिखाई देते हैं। दीवार पर दस हाथों वाले शिव तांडव करते दिखाई देते हैं। एक अन्य कलाकृति में सप्तमातृकाएं शिव तांडव देखती हुई दिखाई गई हैं। यह गुफा मंदिर छठी शताब्दी का बना हुआ है। पहाड़ों पर गुफाओं तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। पर ये सीढ़ियां बेहतर हाल में नहीं हैं। रावणफडि नाम से ऐसा लगता है कि कहीं यह वास्तव में रावण पहाड़ी तो नहीं है। इस गुफा मंदिर समूह में एक सुंदर सरोवर भी बना हुआ है। इसमें पानी मौजूद है, पर सरोवर की साफ-सफाई नहीं की जाती है। कदाचित बारिश के दिनों में यहां बेहतरीन नजारा दिखाई देता होगा।

कैसे पहुंचे – पट्टडकल से एहोल की दूरी 14 किलोमीटर है। वहीं बादामी रेलवे स्टेशन से कुल दूरी 36 किलोमीटर है। बादामी बेंगलूरु बीजापुर रेल मार्ग पर बागलकोट जिले का रेलवे स्टेशन है। ■

रेत का महल

सविता मिश्रा 'अक्षजा'

"डैडी, डैडी देखो ना! उधर मैंने वंडरफुल घर बनाया है।" शुभी अपने डैडी को झकझोर रही थी, परन्तु उसके डैडी तो यादों के गहरे समुद्र में गोते लगाये हुए डूब-उतरा रहे थे। फिर नन्हीं शुभी की आवाज को वे कैसे सुनते।

समुद्र के किनारे सुहानी शाम रेत पर फैल गयी थी। लालिमा लिए सूरज पानी में सोना बिखेरते हुए डूबने को था। ऐसी मस्तानी शाम में मियां-बीवी, प्रेमी-प्रेमिकाएं एक दूसरे के बाँहों में सिमटे नयनाभिराम पल को जी रहे थे। लेकिन इन्हीं विहंगम दृश्य के बीच विवेक और निशा बैठकर अपनी-अपनी अतीत की यादों के पालने में हिलोरे ले रहे थे। हूँ-हाँ में होती बात भी अब दोनों के मध्य सन्नाटे में तब्दील हो गयी थी।

दूर समुद्र के एक छोर से दिख रहे खम्बे की टिमटिमाती रोशनी विवेक के जख्मों को हरा कर रही थी। विवेक एक टक उसी टिमटिमाती हुई रोशनी को देखे जा रहा था। पापा से रूठकर शुभी बगल में ही बैठी माँ से बोली- "मम्मा देखो न, डैडी मेरे बनाये घर को देखने नहीं चल रहे हैं। आप चलो ना मम्मा, आप ही देखो।" निशा की भी जैसे तंद्रा टूटी शुभी के झकझोरने पर। निशा विवेक की ओर देखकर समझ गयी कि वह पूरी तरह से तल्लीन है अपनी भूली-बिसरी यादों में।

निशा शुभी के रेत के घर को देखकर बोली - "अरे, कितना प्यारा घर बनाया है। ओहो! इसमें तो गार्डन भी है!" शुभी मचल उठी प्रसंशा सुनकर।

"अच्छा! यह कुआँ भी बनाया है क्या?" जब तक निशा यादों के गलियारे से बाहर आकर अपने शब्द का मतलब बताती, शुभी ने सवाल जड़ दिया-"कुआँ!! यह क्या होता है! मैंने तो यह स्विमिंग पूल बनाया है। ब्यूटीफुल है न!" उसकी चहकती आँखों से खुशी छलक रही थी।

निशा मुस्कराते हुए बोली - "कुआँ, जिसमें अंडरग्राउंड वाटर होता है। जो कि ठंडा और स्वीट होता है। तुम्हारी दादी यानी ग्रैंडमदर के यहाँ है। जब चलूँगी इंडिया, तब दिखाऊँगी।"

शुभी की गोलमटोल आँखे विस्फारित-सी हो रही थीं। शुभी फिर दादी को लेकर कोई और सवाल न करने लगे उससे पहले ही वह उठकर खड़ी होते हुए बोली- "मैं अभी आती हूँ, तुम खेलो।" यादों के झरोखों से निकलकर आती ठंडी-गरम हवा उसे भी विचलित कर रही थी। वह विवेक के बगल में जा बैठी और हौले से बोली- "किन यादों में खोए हो!" विवेक ने निशा की बात को अनसुना कर दिया।

किंतु निशा द्वारा दुबारा जोर देने पर वह बोला- "वह दूर खड़ा स्तम्भ देख रही हो न! उस स्तम्भ की लाइट ने मुझे उन्हीं पुराने दिनों की याद दिला दी। जिससे मैं सालों से पीछा छुड़ाना चाह रहा था। इसी तरह की स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठ पढ़-लिखकर आज इस मुकाम को हासिल किया है मैंने। मम्मी-पापा ने कितने सपने बुने थे मुझे लेकर। जैसे तुम और मैं शुभी को लेकर बुन रहे हैं। क्या तुम बता सकती हो कि हमारे देखे सपनों को पूरा करने के बाद शुभी पलटकर आएगी हमारे पास? क्या उसे उसका जीवनसाथी आने देगा!!"

इस तरह यादों में विवेक का यदा-कदा गुम हो जाना, निशा को उसकी अपनी गलतियाँ याद दिलाता रहता था। सूखे हुए उसके घाव जब-तब हरे हो जाते थे। विवेक कभी भी गड़े मुर्दे उखाड़कर उसका पोस्टमार्टम नहीं करता था। लेकिन उसका खामोश हो जाना या एक-दो जलते हुए शब्द उछाल देना ही निशा के मन में भंवर ला देता था।

आज उसका ऐसा बोलना ही निशा के दिल तक तीर चुभो गया था। वह तुरन्त विवेक के कंधे पर सिर रखकर बोली - "एक महीने बाद ही शुभी के स्कूल की छुट्टी है। चलो! चलेंगे भारत, मम्मी-पापा से मिलने।"

विवेक फटी आँखों से निशा को देखने लगा। उसे शायद विश्वास नहीं हो पा रहा था निशा की बात पर।

"ऐसे क्या देख रहे हो! मुझे एहसास हो गया है कि घर दीवारों से नहीं अपनों की खुशियों से बनता है। और अपनों की खुशियों को समेटने के लिए मैं तुम्हारे साथ अपने घर चलने को तैयार हूँ।" कहते हुए वह शुभी के बनाये रेत के घर को देखने लगी।

विवेक की खुशी का ठिकाना न रहा। वह तो मन से महीने भर बाद क्या जैसे उसी वक्त माता-पिता के पास पहुँच गया था। इधर समुद्र की लहरें उसके पैरों को गुदगुदाकर पुरानी यादें भी गुदगुदाने लगी थीं।

"अब कहाँ खो गए! कहा न कि चलूँगी मैं भारत।"

"आज पंद्रह साल बाद तुम्हारी बुद्धि कैसे जागी, यह सोच रहा था मैं।" तिरक्षी दृष्टी डालते हुए व्यंग्य से मुस्कराया वह।

सुनकर निशा उसके सीने पर प्रहार करने लगी और दोनों खिलखिलाने लग पड़े।

ठहाके सुनकर शुभी पापा के पास आकर बोली- "डैडी, आपने मेरा घर नहीं देखा। कट्टी आपसे।" विवेक झट से खड़ा हुआ। उसकी ऊँगली पकड़कर बोला - "चलो, दिखाओ अपना घर।" तीनों खुश होकर रेत के घर से खेलने लगे।

'समुद्र-तट के इतने पास बनाया है, जल्दी ही शैतान लहरें तोड़ देंगी।' विवेक ने शुभी से कहा।

शुभी तुरन्त बोली - "ओफ्फ ओ डैडी, नहीं टूटेगा।"

रेत से बने घर की दीवारें भले मजबूत नहीं थीं पर प्यार के साँचे में ढली थीं। प्यार का सीमेंट रेत से बने घर को भी मजबूती दे रहा था। विवेक ने देखा की लहरें दूर से ही लौट जा रही थीं। शायद शुभी का विश्वास पानी को पास नहीं आने दे रहा था।

विवेक को उस रेत के घर में अपने माँ-बाप के द्वारा खून पसीने की कमाई से बनाये घर की छवि दिख रही थी।

"जैसे शुभी इस रेत के घर को बनाकर खुश हो रही है, वैसे पापा भी तो उस ईंट-पत्थर से घर को बनाकर कितने

खुश थे। जिस दिन घर बनकर पूरा हुआ था, पापा-मम्मी ने सत्यनारायण की कथा करके पूरे मुहल्ले को भोजन कराया था।" कहकर विवेक फिर से अतीत को टटोल आया।

"हर क्षण तुम्हें याद है?" आश्चर्य से बोली निशा।

"हाँ निशा! मैं उनके हर कष्ट का गवाह हूँ। रिटायरमेंट के बाद साल-भर पापा और मम्मी ने कड़ी मेहनत करने के उपरांत उसी दिन चैन की सांस ली थी और कहा था कि अब रहेंगे आराम से अपने घर में।"

"यह तो सच है, अपने द्वारा बनाये घर को देखने सा सुख कहीं नहीं..!" निशा रेत के घर से खेलती हुई शुभी के चेहरे को देखकर बोली।

"बिल्कुल! मेरा कमरा मम्मी ने कितने करीने से सजाया था। दर्पण के नीचे बने दराजों को खोलकर जब मैंने सवाल किया था कि ''मम्मी ये सब क्या बनवाया है!'' तो मेरे कान पकड़कर माँ बोली थी- ''ये तेरी बहुरिया के लिए है। इसमें वह अपने श्रृंगार का सामान और चूड़ियाँ रखा करेगी।"

"तुम्हारी नौकरी लगने के पहले ही शादी के सपने देखने लगी थीं माँ?" मुस्कराते हुए निशा ने पूछा।

"नहीं! मेरी नौकरी लगे अभी छः महीने भी नहीं हुए थे, लेकिन उसके कानों में मेरी शादी की शहनाई बजने लगी थी। वह रह-रहकर न जाने कहाँ खो जाती थी। मुझे उन्हें वर्तमान में खींचना पड़ता था। मेरी बलाइयाँ लेकर हौले से वह मुस्करा देती थीं।"

निशा की ओर देखते हुए बोला- "मदर्स भी कितने सपने बुन लेती हैं न। जबकि वे खुद भी नहीं जानतीं कि भविष्य के गर्त में क्या छुपा हुआ है। मेरी शादी तय होते ही उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ते थे। पूरे घर को दुल्हन की तरह सजवाया था उन्होंने।"

फिर शहर की चकाचौंध भरी रोशनियों की ओर देखकर विवेक बोला - "इसी तरह मेरा पूरा घर अपनी सुंदरता पर जैसे इठला रहा था उस दिन। उसकी दीवारें और दहलीज भी नयी बहू के स्वागत में दमक रही थीं। कण-कण, क्षण-क्षण से खुशी के गीत फूट रहे थे। माँ तो अचानक बूढ़ी से जवान हो उठीं थी। दौड़-दौड़कर सबको दिशा निर्देश देती फिर रही थीं।" याद करते-करते विवेक की आँखों में चमक जाग उठी।

"मेरे भी घर में वही माहौल था, लेकिन शादी के गीतों पर मेरी माँ की आँखों में आँसुओं की गंगा-जमुना बहने लगती थी।" निशा की आँखों में पानी तैर आया।

उसके चेहरे को हाथ में लेकर उसके आँसू पोंछकर विवेक ने कहा - "तुमने जब घर के अंदर प्रवेश किया था तो सभी रिश्ते-नातेदार ''चाँद उतर आया तुम्हारे घर तो'' कहकर मुस्करा रहे थे। माँ बहू की तारीफ सुनकर पुलकित हो रही थी। दोनों हाथ की मुड़ी हुई उंगलियों को जोड़कर बजा देती थी। कहती किसी की नजर न लगे मेरी बेटी को।"

"सच में मम्मी तो बहुत खुश थीं लेकिन आज मैं समझी उन खुशियों को।" निशा ने कहा ही था कि सुनकर विवेक के घाव उभर आये, वह तपाक से बोला - "पर यह खुशी ज्यादा दिन कहाँ ठहरी।" कहकर वह मौन हो गया।

लेकिन मन में तूफान उठ रहा था। लहरों की तरफ बढ़कर लहरों को हाथों से छूकर बुदबुदाने लगा विवेक-'चार दिन बाद ही तो तुम्हारे 'चाँद से चेहरे के पीछे छुपे दाग दिखने लगे थे। छोटा-सा घर तुम्हें कैदखाना लगने लगा था। कमरे की हर चीज तुम्हें आउटडेटेड लगती। हर दूसरे दिन माँ से तुम्हारी कहासुनी होती सुन-देखकर मेरे कान पक गए थे।'

लहरें तेजी से उठीं और उसकी आँखों से बहते आँसुओं को जैसे धो गयीं। विवेक का खुद से वार्तालाप जारी था- 'दिल पे पत्थर रख मैंने साल भर बाद ही उस पक्की ईंटों के घर को 'रेत का घर' समझ विदेश आ गया था। सुना था दीवारों के भी कान होते हैं, किन्तु वो दीवारें तो मुझे पीछे से आवाज भी देती थीं। लेकिन मैं उस घर पर रह नहीं सकता था। निशा नाम की बेड़ियाँ जो पैरों में पड़ गयी थीं। माँ-बाबा का वो निरीह-सा चेहरा आँखों के सामने अक्सर घूमने लगता था। परन्तु अपनी मन की शांति और माँ-बाबा को परेशानी से बचाने के लिए, मैं यही विदेश में आकर बस गया था।'

लहरें भी विवेक के दिल में उठे हलचल के मुताबिक चल रही थीं। तभी निशा की आवाज कानों में गूँजी- "फिर से किस दुनिया में खोये हो विवेक!"

विवेक के पास उसकी आँखों में देखते हुए निशा बोली - "मानती हूँ! मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है। सबसे होती है, मुझसे भी भरम बस हो गयी। किन्तु मैं अपनी गलतियों को सुधारना चाहती हूँ। मैं अपने उस घर को इस रेत के महल की तरह ढहने नहीं दूँगी। उसे अपने प्यार और संस्कार से वैसा ही सजा दूँगी जैसा मम्मी-पापा बसाना और सजाना चाह रहे थे। तुम इतना तो यकीन कर सकते हो न मुझपर!"

"हाँ निशा, बिल्कुल कर सकता हूँ। मुझे मालूम है, समय ने तुम्हें बदल दिया है। अपनों से दूर, अजनबियों के बीच रहकर अपनत्व के महत्त्व को तुम समझने लगी हो। और रही सही कसर शुभी ने पूरी कर दी है।" अँधेरा भी छाने लगा था। तभी समुद्र से एक लहर जोर से अँगड़ाई लेती हुई आयी और रेत के घर को अपने साथ बहा ले गयी।

घर को टूटता देख शुभी रोने लगी। विवेक के आश्वासन पर कि कल आकर इससे भी सुंदर घर हम तीनों लोग मिलकर बनायेंगे, जिसमें तुम्हारे दादा-दादी का भी एक बड़ा-सा रूम होगा, शुभी शांत हुई।

निशा तुरन्त बात को बढ़ाते हुए बोली - "उस कमरे के एक कोने में दादा जी की मूविंग चेयर होगी। जिस पर झूलते हुए तुम्हारे दादा जी तुमको इंटरेस्टिंग स्टोरीज सुनाएंगे।"

सुनकर वह खुश होकर आँखें मटकाकर बोली - "वाव डैड, सच्ची!"

विवेक ने कहा - "यस, मुच्ची...!"

"इसमें तो दादाजी का कमरा नहीं था। अच्छा हुआ पानी ने तोड़ दिया।" कहकर दोनों की ऊँगली पकड़कर नन्हें-नन्हें पैरों से बड़े-बड़े डग भरती हुई शुभी घर की ओर जाने लगी। ■

लापता

जसविंदर शर्मा

जी हां, आपने सही पहचाना। वह मेरे पापा ही हैं – त्रिलोकी नाथ चौहान

है न भारी भरकम नाम। बहुत कड़क आदमी हैं जनाब। अपने समय के कलन्दर।

एक वाक्य बोलकर सबको चुप करवा देते थे – डोंट ट्राई टू बी ओवरस्मार्ट। मैं तो क्या हर आदमी जो उनसे वाबस्ता था, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। एन्साइक्लोपीडिया तो फिर छोटा शब्द है उनके सामने। कोई कहता कि वह अपने आप में एक बहुत बड़ी संस्था थे।

हर चीज में उनका दख़ल काबिले गौर था – संगीत, कविता, धर्म, विज्ञान, इतिहास या राजनीति। आप बात करके देखते उस समय।

उनके सामने बहुत छोटा महसूस करते थे हम। उनका हर वाक्य एक कमांड होता था और हरेक शब्द एक संदेश। कभी अपनी पीठ नहीं लगने दी उन्होंने।

उनका सबसे बड़ा प्लस प्वाईंट यह था कि बहुत बेदाग चरित्र के मालिक थे वह। साफ सुथरी छवि के मालिक। कभी कोई अनर्गल बात नहीं करते थे। जो बात आज उन्होंने कही दस साल बाद भी वही हू ब हू। हजारों लोगों के नाम मानो तोते की तरह रटे हुए थे।

अब कहां हैं? जी हां, जिन्दा हैं अभी।

जिन्दा भी ऐसे मानो मांस का लोथड़ा हो। दिन में पता नहीं कितनी बार हिंसक हो उठते हैं। घर के एक कमरे में कैद करके रखना पड़ता है उन्हें। ताला लगाकर।

डिमेंशिया नाम का रोग सुना होगा आपने। इसमें स्मरण शक्ति खत्म हो जाती है। रोजाना की आम गतिविधियां नहीं कर सकता वह आदमी। बातचीत में ठहराव नहीं रहता, कोई फोकस नहीं। बच्चों से भी गया गुजरा हो जाता है। बच्चा तो फिर भी हर रोज एक नई बात सीखता है मगर पापा जैसा आदमी लगातार भूलता जाता है। आसपास, अपने आपको। अपने शरीर के अंगों से नियंत्रण घटता जाता है उनका।

कई रूप हैं इस बीमारी के। मैं तो ठीक से बता भी नहीं पाऊंगा। अल्जीमेर रोग है या कुछ और।

मगर जो भी है आदमी आलू गोभी की तरह हो जाता है। सामने है मगर उसका वजूद न के बराबर। अपने आप में गुम हो गया लगता है। खो गया लगता है।

लापता हो जैसे।

हम लोग पापा को कई अस्पतालों में ले गए। शुरू-शुरू में पापा का कुछ और ही रूप था। तब शुरुआत थी शायद।

डाक्टर पूछता – क्या नाम है?

पापा चौकन्ने होकर जवाब देते – त्रिलोकी नाथ चौहान

डाक्टर सहम जाता – अरे, आप हैं सर। बहुत नाम सुना है आपका। आपको कौन नहीं जानता। आपने तो बहुत बड़े बड़े काम किए हैं जो कोई दूसरा नहीं कर सकता।

पापा मुस्कराते, अजीब सी दंभभरी मुस्कराहट। चेहरे पर अहंकार भरे भाव आ जाते उनके।

शुरू के सालों में पापा अपनी यह बीमारी मिलने वालों पर जाहिर नहीं होने देते थे। घर में कोई भी आता उससे मिलकर खुश हो जाते। भले ही पहचानते नहीं थे मगर आने वाले के पास बैठते। बेशक कुछ न पूछते मगर ऐसा भी नहीं कि कोई रूचि न लेते हों। कहते – खाना खाया, कब आए हो।

दो चार बातों तक ही महदूद हो गया था उनका सारा अस्तित्व।

फिर धीरे धीरे अपने कमरे में ही रहने लगे।

सबसे बुरी बात तब हुई जब वह आईने में अपनी ही सूरत भूल जाते। खुद को कोई अन्य समझकर अपने अक्स से बात करने लगते।

फिर आसपास से बेखबर होने लगे। सुबह को शाम समझने लगे। दिन तारीख तो अब क्या याद रखनी थी उन्होंने। कुछ बातों की जिद पकड़ लेते। कभी अपने घर की बाल्कनी में हम पापा को बिठाते तो कुछ देर बार वह अपने कमरे या बाथरूम का ठिकाना भूल जाते।

खाने को लेकर बहुत लोचा होने लगा। उन्हें कभी तो बहुत भूख लगती तो किसी दिन उन्हें चाय के साथ बिस्कुट खिलाना भी मुसीबत हो जाता हम लोगों के लिए।

कभी अपने स्वर्गीय पिता को याद करने लगते। कहते मुझे उनके पास छोड़ आओ। मम्मी समझाती – आप 90 के हैं तो आपके पिता तो कब के स्वर्ग सिधार गए होंगे।

हैरान होकर पूछते – अच्छा कब मरे? मुझे बताया क्यूं नहीं।

उनकी आंखों से आंसू छलकने लगते।

पापा की स्मरण शक्ति बहुत तेजी से घटती जा रही थी। अब मुझे पहचानते थे या मेरी मम्मी को। मम्मी उनसे 10 साल छोटी थी। सेहत तो उनकी भी अच्छी नहीं थी।

बहुत क्षुद्र जीव है यह आदमी। ज्यादा देर तक शासन नहीं चला सकता। दूसरों पर ठीक है। दूसरों को चालीस पचास बरस काबू कर लेगा मगर खुद अपने शरीर से नियंत्रण हट जाए तो बहुत मुसीबत आ जाती है। खुद के साथ समीकरण बिगड़ जाए तो साथ वालों की जिन्दगी हराम हो जाती है।

आपका कहना अपनी जगह सही है। सब के साथ नहीं होता ऐसा।

इंग्लैंड की रानी नब्बे के आसपास हैं। खूब कर रही हैं राज। अजी क्या पावर है उसके पास। औपचारिक रूप से बस

सोने की मुहर ही हैं। हां, बस इतनी सी पावर हो तो आदमी का दिमाग खराब नहीं होता।

पापा से मनोचिकित्सक उनके आसपास बैठे लोगों के बारे में पूछता – ये कौन है?

पापा तिरस्कार के भाव से कहते – ये मेरा नालायक बेटा है। कुछ नहीं हो सका इससे। नेशनल डिफेंस एकेडमी से भाग आया। अब अपना बिजनेस चौपट करके बैठा है।

मुझसे बहुत अपेक्षाएं थी पापा की। खुद तो बहुत बड़े महत्त्वाकांक्षी थे ही? मुझे लेकर कुछ ज्यादा ही पजेसिव थे। मुझे अपने से भी ऊपर देखना चाहते थे।

जब मैं आर्मी अफसर के प्रशिक्षण केन्द्र से भाग आया और इधर उधर हाथ-पांव मार रहा था तब पापा मुझे उलाहने देते। बार बार कहते – मैं खाली हाथ आया था दिल्ली। बाप की पांच रुपए महीने की पेंशन थी। खाने वाले दस जीव थे। अब तुम्हारे लिए चण्डीगढ़ में दो कनाल की कोठी बनवाई है मैंने। दस एकड़ का फार्म हाउस है। घर में चार कारें खड़ी हैं। साले, तुमने क्या किया? मेरे नाम को बट्टा लगा दिया।

मेरी हर चीज से शिकायत थी पापा को। मैं उनकी किसी अपेक्षा पर खरा नहीं उतरा।

मैं क्या बनना चाहता था? अरे साहब जब से होश सम्भाला है मुझसे किसी ने पूछा ही नहीं। बस हुक्म दे दिया जाता कि ये कर लो, वो कर लो।

पूरे इलाके में पापा का इतना ज्यादा रौब था, रसूख था। एक से एक बढ़िया स्कूल में मुझे दाखिला मिल जाता। कालेज में आराम से एडमिशन मिल जाता। टीचर मुझसे खौफ खाते कि कहीं मेरे पापा उनके खिलाफ किसी को टेलीफान न कर दें।

एक वक्त था शहर की बहुत बड़ी ताकत का पर्याय थे वह, बहुत बड़ी हस्ती थे पापा। सब कुछ भगवान की देन थी। इतने ज्यादा पढ़े नहीं थे। बस दिमाग बहुत बड़ा था। पता नहीं सब कुछ कैसे समा जाता था। सुबह अखबार पढ़ते थे। याददाश्त बहुत गजब की थी। सामने वाले को तर्क देने लायक नहीं छोड़ते थे।

बहुत सारी महत्त्वपूर्ण घटनाएं थी उनके जीवन की। फौज में सीधे अफसर बनकर गए थे। आजादी के तुरंत बाद पुलिस के बड़े अफसर आर्मी से लिए गए। पापा की टॉप के लोगों में गिनती होने लगी। काम के माहिर थे और राजनीति से दूर। नेताओं ने खूब फायदा उठाया पापा का। पापा को अच्छे प्रभार मिलते। जहां जहां दंगा या अलगाववादी उपद्रव होते, पापा ने हीरो की तरह काम किया।

मैं क्या-क्या बताऊंगा। आप गूगल से पूछ लेना।

वह बताते-बताते नहीं थकेगा मगर आप सुनते सुनते बोर हो जाएंगे।

हम परिवार वाले बुरी तरह पक गए थे, पापा की इस मशहूरी से।

उसका हमारी नार्मल लाइफ पर बहुत बुरा असर पड़ा।

मां की जुबान चली गई।

जी नहीं, गूंगी नहीं हुई। पापा के सामने बौनी होती गई। विरोध नहीं कर पाती थी। पापा ने जो कह दिया वह पत्थर की लकीर।

मैं खुद। कहां कहां नहीं धकेला गया मुझे। और मैं था कि हर जगह नाकाम करार दे दिया जाता। क्योंकि मैं वह सब नहीं करना चाहता था।

क्या करना चाहता था?

अजी सोचने का मौका ही कब मिला मुझे। पापा ही हावी रहे मेरी सोच पर।

रिटायरमेंट भी बहुत लम्बी थी पापा की। 80 साल की उम्र तक तो वह बहुत ही सक्रिय रहे। कई तरह के असाईनमेंट मिलते रहे पापा को। विदेशों में भी जाते रहते। हर समय सूटकेस तैयार रहता।

बस एक ही बात बताई जाती हमें – दिल्ली जा रहे हैं।

हमारी सांस में सांस आती कि कुछ दिन आराम से कटेंगे।

समय बदला, लोग बदले, सरकारें बदली। पापा का स्थान दूसरे लोगों ने ले लिया। पापा की उपयोगिता कम होती जा रही थी। अब ईमानदारी की कोई कीमत नहीं रह गई थी। पापा अनवांटिड हो गए। समय सापेक्ष नहीं रहे। बूढ़े भी हो गए।

जब पापा की उम्र 85 से 90 के बीच थी तब पापा रुतबे से घटते गए। चिड़चिड़े हो गए। मैं 60 का हो गया था।

क्या करता हूं?

छोटे मोटे धंधे करता हूं। पापा ने इतना कुछ जमा कर लिया उसे सम्भालता हूं।

लोगों ने पापा से मिलना छोड़ दिया। पापा अपने कमरे में अकेले होते गए।

कभी कभार कुछ लिखते। वह दिखाऊंगा आपको। मेरे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ा। देश की राजनीति पर कुछ निबन्ध वगैरा हैं।

जी हां, पापा का लिखा दिखाया था प्रकाशकों को। वे कहते हैं कि बिकेगा नहीं। अगर बीस साल पहले लिखा होता तो शायद कुछ करते।

इन्सान की यही लिमिटेशन है। समय पर खरीदा माल समय पर ही बेच देना चाहिए। बाद में कोई कीमत नहीं मिलती।

पापा को अब घर में बांधकर रखना भी अपने आप में फुलटाइम काम होता जा रहा था। किसी को कुछ नहीं समझते थे वह। किसी का कहना नहीं मानते थे। मम्मी को समझते थे कि घर की नौकरानी है।

मैं अब उन से खुलकर झगड़ने लगा था। शायद तभी

मेरे काबू में आ जाते थे। अब मेरा डर खत्म हो गया था। पापा अब ऐसे बूढ़े शेर थे जिसके दांत टूट चुके थे और गुर्राना भी वह भूल चुके थे।

अब एक नई मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था हमें। पापा बिन बताए मौका पाते ही घर से निकल जाते।

एक बार नहीं बार-बार घर से निकल कर भागे वह। पहले तो यहीं अपने एरिया में ही गुम हो जाते। हम ढूंढ लाते या कोई जान पहचान वाला छोड़ जाता।

दाढ़ी बढ़ आई थी उनकी। शक्ल बदल गई थी। शहर बदल गया था। दुकानदारों को तो पापा की बीमारी के बारे में पता था मगर जान पहचान के पुराने लोग कम होते जा रहे थे। कुछ बच्चों के साथ चले गए। कुछ मर मरा गए।

ये ससुरा चण्डीगढ़ है न। यहाँ सारे सेक्टर एक समान लगते हैं। सेक्टर 35 की मार्केट और सेक्टर 36 की मार्केट में फर्क करना मुश्किल हो जाता है। चौक, मकान, मोड़ सब एक जैसे दिखते हैं।

अब पापा को काबू करना सच में मुश्किल हो गया था। जरा सा मौका मिलता, वह निकल भागते। दीवार फांद लेते।

सारी उम्र दिल्ली जाते रहते थे। अब भी हर वक्त एक ही रट लगाते, ''मुझे दिल्ली ले चलो। वहाँ मेरे पिताजी हैं। उनकी देखभाल कौन करता होगा।'' मम्मी रोने लगती। पापा पर कोई असर नहीं होता था।

बाकी के सारे रिश्तेदार भूल गए थे उन्हें। सिर्फ मुझे नहीं भूले। हम उनके गले में या बाजू पर नाम, पता या मेरे मोबाइल का नम्बर लिखा रिबन बांध देते मगर वह उसे उखाड़ कर फेंक देते। कमीज के कालर या बाजू के कॅफ के अन्दर लिखा रहता पेन से। मगर किसी दूसरे को क्या पड़ी है। आजकल आदमी अपने आप से बेखबर रहने लगा है। किसी दूसरे की तरफ तो देखता तक नहीं। पुलिस? अरे साहब उनका अपना पेट नहीं भरता। वह आम नागरिक की मदद क्यूं करने लगी भला।

एक दिन वही हुआ जिसका हमें हर वक्त डर सताता रहता था।

पापा लापता हो गए।

हर वक्त दिल्ली जाने की रट लगाते रहते थे। तो किसी ने दिल्ली की बस में बिठा दिया होगा।

अब दिल्ली तो एक समुन्दर है। हम लोग यहां अपने शहर, अम्बाला, पटियाला में ढूंढते रहे। पुलिस स्टेशन, वृद्धाश्रम, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, सराए सब जगह। दो आदमी रखे पैसे देकर। उन्हे हर रोज सब तरफ भेजते। लापता होने के पोस्टर भी लगवाए। अखबारों में कई दिन विज्ञापन दिया।

पापा सेक्टर 35 के स्टेट बैंक से अपनी पेंशन लेते थे। वहां पता किया। मम्मी के नाम पेंशन लगवाने की बात हुई तो वे बोले किसी जगह से मृत्यु का प्रमाणपत्र लाओ। या कुछ साल इन्तजार करो। उसके बाद कचहरी से लापता होकर मरा हुआ जानकर ऐसा प्रमाणपत्र मिल जाएगा।

साल बीता कोई खबर नहीं मिली पापा की।

घर का बन्दा गुम हो जाए तो कितना तकलीफदेह हो जाता है रहना सहना। हर रोज एक आस जगती है। फिर इस उम्र का आदमी घर से चला जाए तो सोच कर देखिए जनाब।

हम चुप हो कर बैठे थे। क्या कर सकते थे हम।

फिर एक दिन बैंक से ही मुझे फोन आया कि आपके पापा जिन्दा हैं।

दिल्ली में सरकारी अस्पताल एम्स में भर्ती हैं।

आखिर दिल्ली जाकर ही दम लिया पापा ने।

वहां पता नहीं कहां-कहां भटकते रहे होंगे। बीमार हुए तो किसी ने लावारिस समझकर एम्स में भर्ती करवा दिया होगा। अंग्रेजी बोलते थे तो किसी ने सोचा कि अच्छे घर के होंगे। अपना नाम तक याद नहीं था पापा को।

कैसे पता चला।

डाक्टर लोग हर रोज उनसे बातचीत करते होंगे तो एक दिन अचानक पापा ने बोला - त्रिलोकी नाथ चौहान, स्टेट बैंक, सेक्टर 35, चण्डीगढ़।

वहां के लोगों ने यहां नम्बर मिलाया और बैंक वालों ने मुझे सूचित किया।

मैं पापा को लेने के लिए निकला। मन में गुस्सा भी था और अपराधबोध भी कि हम उनकी परवरिश ठीक से नहीं कर रहे हैं।

लावारिस की तरह जनरल वार्ड में पड़े मिले वह। गन्दे से कपड़ों में। बहुत शर्म आई। बहुत देर लगी यह बताने में कि मैं उनका बेटा हूं। बिल्कुल पराये से लग रहे थे। आंखों में कोई भाव नहीं। कोई भी ले जाता उन्हे वहां से।

मुझे उनके खर्च की फीस भरने को कहा गया। मैं दो लाख रूपए नकद लेकर गया था। कांउटर पर बैठे आदमी ने बताया - एक हजार, दो सौ साठ रुपए।

मेरा यकीन करना साहब।

बहुत पत्थर दिल इन्सान हूं मैं मगर पहली बार फूट फूटकर मेरे आंसू निकले। गला रुंध गया। वाह रे खुदा। ये मैं क्या देख रहा हूं। कितने दिनों से यह आदमी यहां फटेहाल पड़ा है। अब कहीं भागने की हिम्मत भी नहीं रही इसकी।

मैं घर ले आया उन्हें। लाश जैसे थे वह। कार की सीट बेल्ट से बांधकर। बार बार लुढ़क जाते।

अब तो सब शांत है।

जिन्दा हैं बस। मुझे भी बहुत बार नहीं पहचानते।

पता नहीं किस बात का इन्तजार है उन्हें। तरस आता है। जीवन की नियति यही होती है क्या? तमाम उम्र कितनी भागदौड़ करते हैं हम। चोरी, डाका, फरेब, झगड़े।

और अन्त में क्या शेष रहता है। एक शून्य, एक गुमशुदगी, एक लामकानी, खोई हुई अस्मिता। अपने आप में कोई इतना लापता कैसे हो सकता है भला। ■

जीवन में अमृत वर्षा करती है हंसी

शिवचरण बैरवा, राजभाषा अधिकारी, उत्तर पश्चिम रेलवे

कांटे भरी जिंदगी से यूं मत घबराओ,
पुष्प की तरह हर दम मुस्कराओ।
पुष्प प्रेरणा देता है हंस-हंस कर जीने की,
रो-रोकर जिंदगी को व्यर्थ मत गंवाओ।

सुमन चौहान द्वारा रचित उक्त पक्तियां हमें खुश रहने की प्रेरणा देती है। प्राचीन काल से ही मानव ने प्रसन्नता के अवसर सृजित किए हैं। जीवन में हंसी-खुशी को समाज, साहित्य और संस्कृति सभी ने महत्त्व दिया है। पर्व-त्यौहार, शादी-समारोह, पार्टी-फंक्शन की मूल भावना भी खुश रहने की है। साहित्य के नौ रसों में हास्य भी एक रस है। कविता, नाटक, कहानी, चुटकले तथा फिल्में हमें प्रसन्नता देती है। कवि सम्मेलन, रंगमंच, हास-परिहास, लाफ्टर टीवी चैनल, नाइट म्यूजिक शो भी लोगों को हंसाने का प्रयास करते हैं। टूरिज्म, लाँग ड्राइव, लाफ्टर क्लब आदि भी प्रसन्न रहने के ही साधन है।

भारतीय साहित्यकारों जैसे सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत निराला या फिर पाश्चात्य जगत के कवि शैली या वर्डसवर्थ, इन सभी ने प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन किया है। उनकी कविताओं में गीत है, संगीत है, उसका रस एवं सौंदर्य पूर्णतया निखर कर आता है। जब से मनुष्य प्रकृति से दूर हुआ है, तब से ही उसके जीवन में नैसर्गिक हंसी गायब हो गई है।

सुमित्रानंदन पंत ने कहा है :

छोड द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन?

बचपन में छोटा बच्चा सवेरे आंगन में चिड़ियों के पीछे भागता था, साथियों के साथ खेलता था और धूल-मिट्टी में बड़ा होता था, तो उसके चारों और हंसी-खुशी बिखर रही होती थी। बच्चे स्वभाविक ही खुश हो लेते थे, उनकी खुशी के लिए कोई बड़े इंतजाम या बड़े प्रबंधन की आवश्यकता नहीं होती थी। बचपन में खिलौनों में बड़ी खुशी होती थी, लेकिन वर्तमान में सुविधा युक्त जीवन ने बालक को सहजता से अलग कर बनावटी बना दिया है। जिसे उसका स्वाभावित विकास नहीं होता है, परिणामस्वरूप अवसाद से ग्रसित है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने बचपन के बारे में लिखा है :

बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।

जब हम प्रसन्न होते हैं, या जब हमारे मन में उल्लास होता है, आत्मिक सुख होता है, तो हम हंसते हैं। हंसने से व्यक्ति सकारात्मकता से भर जाता है। वर्तमान वातावरण में व्याप्त हो रहे तनाव, हिंसा, द्वेषता, कुंठा, वैमनस्य आदि के कारण हमारा जीवन संकट में है। व्यक्ति इनसे उभरने के लिए सदैव उपाय करता है। ईश्वर ने भी हमें कुछ उपाय दिए हैं, उनमें हंसना-मुस्कराना भी एक है। नियति ने हमको हंसी एक ऐसा वरदान दिया है, जो नि:शुल्क है और जीवन में उसका महत्त्व अमृत के समान है।

चिकित्सा की दृष्टि से भी हंसी का महत्त्व बताया गया है। डॉक्टरों का कहना है कि यदि आप सात दिन तक नहीं हंसे तो कमजोर हो जाएंगे। भरपूर हंसी चेहरे के स्नायुओं, श्वांस के परदे ओर पेट को व्यायाम देते हैं। इससे दिल की धड़कन और रक्तचाप बढ़ता है। सांस तेज और गहरी होती है और शरीर में प्राणवायु दौड़ने लगती है। एक ठहाकेदार हंसी उतनी ही कैलेरी जला सकती है, जितना की तेज चलना, प्रसन्न रहने के लिए जरूरी है कि आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएं।

आध्यात्म में भी हंसी/ठिठोली का सकारात्मक महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। ओशो कहते हैं कि गंभीरता एक बीमारी है। हास्य में एक अदभुत क्षमता है - स्वास्थ प्रदान करने की और ध्यान में डुबाने की भी। हंसने वाले लोग आत्महत्या नहीं करते और उन्हें दिल के दौरे नहीं पड़ते। इसलिए ओशो के प्रवचन चुटकलों और लतीफों से सराबोर होते हैं। पश्चिमी विद्वान एडिथ वार्टन का मानना है कि जीवन में प्रसन्नता के लिए विशेष प्रयास करने की जरूरत नहीं है। आप तो बस प्रयास किए जाओ, प्रसन्नता बरसने लगेगी। जीवन अक्सर हमारे सामने विकल्पों के पासे फेंकता है, कहीं संघर्ष का अग्निपथ सामने होता है, तो कहीं फूलों की सेज बिछी होती है। अपनी बात करूं तो मुझे संघर्ष का पथ स्वीकार है, क्योंकि संघर्ष के बाद ही सफलता का सही स्वाद या खुशी या प्रसन्नता महसूस होती है।

आप को यह अंक कैसा लगा : हमें जरूर बतायें

फोन, व्हाट्सएप, एस.एम.एस. : 9717641075 या 9909909966

ईमेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 337-बी, रेल भवन,
रेल मंत्रालय, नई दिल्ली-110001

वर्तमान में संवेदनहीन जीवन बढ़ता जा रहा है। जबकि संवेदनाएं इंसान को इंसान बनाती हैं। वरना मनुष्य मशीन बन करके जीवन जीता रहता है।

आधुनिक सुविधायुक्त जीवन में हमारी सारी कोमल भावनाएं दब गई हैं। हम तार्किकता में, कुटिलता में, षड्यंत्र में ऐसे डूबे हैं कि हम सहज जीवन नहीं जी पा रहे हैं, इस कारण से हम मुस्कराना भी भूल गए हैं। आधुनिक जीवन में सब कुछ है, परंतु जिसे पाकर हम खुश नहीं हो पा रहे हैं ओर प्रसन्न नहीं हो पा रहे हैं। इसका कारण है कि हम निर्दोष और निष्कपट नहीं है। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक हम ना तो मुस्कुरा सकते हैं और न ही खिलखिलाकर हंस सकते हैं। जो इंसान छोटे बालक की तरह सहज और जीवन की अपल खुशी में भी प्रसन्न होता है, वह विकारों से मुक्त रहता है। शेक्सपीयर ने कहा था कि प्रसन्न रहने के लिए तुम आत्मविस्मृत हो जाओ, परोपकारी बनो, दूषित विचार को दूर करने का यही एक उपाय है।

हमें ज्ञात है कि महापुरुष निश्छल, निर्मल और सहज होते हैं, आडंबरों से दूर रहते हैं, वे बच्चों की तरह खुश हो जाते हैं, उनमें बचपन भरा-पूरा होता है। वे दिखावे से परहेज करते हैं, छल कपट से अलग रहते हैं, तभी जाकर दूसरों को दिये की तरह ज्ञान का प्रकाश दे पाते हैं। कबीर, रैदास, गुरु गोविंदसिंह, रामकृष्ण परमहंस, रवींद्रनाथ टैगोर, विवेकानंद, महात्मा गांधी आदि जितने महान थे, उतने ही सहज व प्रसन्न रहने वाले भी थे।

आधुनिक जीवन के रसायन-शास्त्र में कुछ ऐसी प्रक्रिया घुस गई है कि बार-बार उसमें विषाद का विष प्रकट होता है। शिव के समान विषपान कर अमृत उगलने की क्षमता पैदा करने की आवश्यकता है। समाज में भाई-चारा, समरसता, सौहार्द घटता जा रहा है। अवसाद का जो जहर घुल रहा है, उससे क्लेश, क्राइम, क्रूरता बढ़ती जा रही है और आपसी-विश्वास में कमी हो रही है। उसको परिवर्तित करने की सामर्थ्य केवल हंसी में ही है। हमें बार-बार हंसी के अवसर ढूंढना चाहिए। यदि जीवन को विषैला होने से रोकना है, प्रदूषण मुक्त करना है, मन में आए हुए विकारों को हटाना है, तो जीवन में हंसी को स्थान देना पड़ेगा।

जीवन इतना सहज, प्राकृतिक और सादगी से भरा होगा, उतना ही तनाव रहित होगा। हंसी जीवन में अमृत सींचती है। अत: हमें मन को हंसी में डुबाना चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता है। पंडित राम शर्मा आचार्य का कहना है कि प्रसन्नता उन्नति का द्वार है। मानव हृदय भंडार का द्वार खोलने वाली निम्नता से उच्चता की ओर ले जाने वाली यदि कोई वस्तु है, तो वह है प्रसन्नता। ■

विज्ञान वरदान या अभिशाप

विज्ञान ने मानव जीवन को
उन्नति के शिखर तक है पहुंचाया
धरती के अलावा मंगल ग्रह
व चांद तक पहुंचाने का श्रेय भी
विज्ञान ने ही है पाया
मेट्रो के आविष्कार ने जहां
गंतव्य स्थान तक पहुंचाने में
समय है बचाया
वहीं बुलेट ट्रेन का प्रत्यय भी
विज्ञान से ही है आया
कई आधुनिक मशीनों का आविष्कार
भी विज्ञान के कारण ही संभव हो पाया
आरडीएक्स जो देन है विज्ञान की
पर हो रहा है प्रयोग उसका
केवल पीछे से करने में वार
जिससे हो रही इंसानियत शर्मशार
हो रहा है प्रयोग उसका
देश के जवानों को बिना दिए मौका
अपने बचाव का, सीधा करने में उन्हें शहीद
ऐ मानवता के दुश्मनों
मत मचाओ पृथ्वी पर यूं हाहाकर
कर रहे हो बिना सोचे
जिन जवानों पर तुम वार
ऐसा न हो वो उठायें हथियार
तब तुम दो दुहाई इंसानियत की
अन्याय सहना भारतीयों को भी नहीं आता
पर बिना कारण किसी को मारना
ये विज्ञान कभी नहीं सिखाता
बना है विज्ञान देने हेतु मानव को जीवन दान
और लड़ने हेतु उन बीमारियों से
जिनका संभव नहीं अभी तक कोई निदान
सरहद पर मत मारो धोखे से जवानों को
क्योंकि युद्ध नहीं होता किसी भी
समस्या का समाधान
करो प्रयोग विज्ञान का सृष्टि की भलाई में
न कि किसी की हस्ती मिटाने में
इसके लिए तो पहले ही भरे हैं
सभी देशों के पास हथियारों के भंडार
मत बनाओ विज्ञान को अभिशाप
वरना न मिटने वाला बचेगा और
न ही मिटाने वाले का होगा कोई नामो-निशान ■

शीला वर्मा
निदेशक, पर्यावरण, रेलवे बोर्ड

क्या बाजार की अल्पकालीन अस्थिरता आपको NPS में निवेश करने से रोक रही है

आर.के. महोपात्रा अतिरिक्त जीएम, वित्त, इरकॉन

वृद्धावस्था के समय जब लोगों के पास एक नियमित आय का साधन नहीं होता है तो उस समय पेंशन योजना व्यक्ति को आर्थिक सुरक्षा एवं जीवन में स्थिरता प्रदान करती है। नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) एक अच्छी तरह से परिभाषित और जीवन उपयोगी योजना है, जिसमें कम लागत, कम कर, लचीली व्यवस्था व आसानी से समझी जानेवाली व्यवस्था शामिल की गयी है, जो एक सेवानिवृत्त बचत खाते के साथ में कार्य करती है। इस योजना के अन्तर्गत हम अपने बचत खाते से दो श्रेणियों में निवेश कर सकते हैं। इस निवेश को भारत में कुछ राशि के साथ कहीं से भी शुरू किया जा सकता है।

प्रथम श्रेणी के अंतर्गत एनपीएस में निवेश करने वाले व्यक्ति को कम से कम 6 हजार रुपये प्रति वर्ष निवेश करने होते हैं।

द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत निवेशक को पेंशन खाते में कम से कम 2000 रुपये वार्षिक जमा करने होते हैं, जिसको घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

एनपीएस योजना के अंतर्गत सरकारी पेंशन फंड में निवेश किए गए पैसों को एसबीआई पेंशन फंड प्राइवेट लिमिटेड, एलआईसी पेंशन फंड लिमिटेड, और युटीआई रिटायरमेंट सॉल्यूशन लिमिटेड, के द्वारा व्यवस्थित तथा संचालित किया जाता है। ये कंपनियां ही इन पैसों को बाजार की स्थिति के अनुसार निवेश करती हैं। जबकि एनपीएस के अंतर्गत गैर सरकारी फंड में निवेश किए गए पैसे को फाइनेंसियल सेवा प्रदान करनेवाली सभी आठ कंपनियों के द्वारा पैसे का निवेश किया जाता है जिसमें एसबीआई, एलआईसी, युटीआई भी शामिल हैं।

वर्ष 2009 के अनुसार एनपीएस योजना भारत में रहने वाले या भारत से बाहर रहने वाले किसी भी व्यक्ति को एनपीएस अकाउंट में निवेश करने का अवसर प्रदान करती है तथा उसे वृद्धावस्था में प्राप्त की जानेवाली राशि को उपयोग करने का लाभ प्रदान करती है। लेकिन सेवानिवृत्ति के समय प्राप्त होनेवाली राशि को निवेशक के द्वारा संचालित किसी वार्षिक योजना (Annuity Plan) में निवेश करना पड़ेगा और उसके पश्चात वह एक नियमित आय प्राप्त कर सकेगा।

सरकार ने एनपीएस को नियंत्रित करने तथा उसकी उचित देखरेख करने हेतु पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) संस्था बनाई है। यह प्राधिकरण, एनपीएस को सही तरह से व्यवस्थित करता है तथा समय-समय पर इसमें शामिल सभी विषयों से जुड़ी प्रक्रिया में सुधार करता है ये प्रक्रिया निम्न है।

- एनपीएस अकाउंट को खोलना
- एनपीएस से पैसों को निकालने की प्रक्रिया को आसान बनाना,
- एनपीएस की प्रक्रिया को और अधिक विकसित करना,
- एनपीएस को और सरल बनाना तथा
- एनपीएस से संबंधित सभी शिकायतों का निवारण करना

निवेश करने का तरीका

एनपीएस किसी भी निवेशक को अपने धन को निवेश करने के दो विकल्प निर्देशित करता है, निवेशक को इनमें से किसी एक को चुनना होता है

1. सक्रिय च्वाइस (Active Choice)
2. ऑटो च्वाइस (Auto Choice)

सक्रिय पसंद

सक्रिय पसंद के अनुसार निवेशक को एनपीएस अकाउंट में किए गये निवेश का कुछ हिस्सा अलग-अलग निवेश करने वाली श्रेणी में लगाना होता है, यह निवेश श्रेणियां निवेश करने वाली संस्था द्वारा नियंत्रित होती हैं। जिससे निवेशक अपना पैसा अपनी इच्छा अनुसार शेयरबाजार में या ऋण प्रदान करने

वाली सेवा में लगा सकता है या दोनों वर्गों में लगा सकता है। सक्रिय पसंद के अंतर्गत निवेशक अपने पैसे का अधिक हिस्सा शेयर में निवेश करना चाहे तथा कम हिस्सा ऋण देनेवाली कंपनी में निवेश करना चाहे या इसके विपरीत ज्यादा हिस्सा ऋण देने में तथा कम हिस्सा शेयर बाजार में निवेश करना चाहे तो वह अपनी इच्छा अनुसार निवेश कर सकता है। सक्रिय पसंद निवेशक को समान अनुपात में दोनों वर्गों में पैसा लगाने का भी विकल्प प्रदान करती है।

एनपीएस के अंतर्गत निवेशक के द्वारा लगाए गए पैसे को निवेश श्रेणी में लगाया जाता है और इन निवेश श्रेणी को तीन भागों में बांटा गया है।

1. शेयर (Equity-E)
2. व्यापारिक ऋण (Corporate Debt-C)
3. सरकारी प्रतिभूति (Government Security-G)

निवेशक दी गई तीनों श्रेणी का लाभ ले सकता है निवेशक व्यापारिक बांड तथा सरकारी प्रतिभूति में अपने फंड का पूरा पैसा निवेश कर सकता है जबकि शेयर में अपने फंड का अधिकतम 50% ही निवेश कर सकता है।

ऑटो च्वाइस

ऑटो च्वाइस निवेशक के एनपीएस अकाउंट की राशि को निवेश करने का दूसरा विकल्प है। इसके अनुसार अगर निवेशक एक्टिव च्वाएस को मंजूरी नहीं देता है तो निवेशक का पैसा स्वत: ही ऑटो च्वाइस श्रेणी में माना जाएगा, जिसके अंतर्गत फंड में निवेश किया गया पैसा निवेशक की आयु के अनुसार व्यवस्थित तथा निवेश किया जाएगा। निवेशक के फंड को ऊपर बताई गई तीनों निवेश श्रेणी (E, C & G) में एक अनुपात में निवेश किया जाएगा जो निवेशक की आयु पर निर्भर होगा।

उदाहरण के लिए मानलो एक व्यक्ति की आय 40 साल है तो एनपीएस अकाउंट में निवेश किया गया फंड का 40% शेयर (इक्विटी-E) में, 25% व्यापारिक ऋण (कॉरपोरेट डेब्ट-C) में एवं शेष 35% गवर्नमेंट सिक्यूरिटी-G में निवेश कर दिया जाएगा

एनपीएस में निवेश का विस्तार

पूर्व व्यवस्था के अनुसार एनपीएस अकाउंट में निवेशक केवल 60 साल की आयु तक निवेश कर सकता था और 60 साल के बाद वो इस योजना से बाहर हो जाता था और आगे वो किसी भी प्रकार निवेश नहीं कर सकता था। लेकिन अगर चाहे तो बगैर निवेश किए 70 वर्ष की आयु तक वो उसे चला सकता था। हाल ही में पीएफआरडीए ने सभी निवेशकों की निवेश करने की उम्र 60 से बढ़ाकर 65 वर्ष कर दी है।

पीएफआरडीए ने एनपीएस के अंतर्गत अन्य जीवन चक्रफंड (Life Cycle Fund) शुरू किया है। इसके अंतर्गत निवेशक अपनी 35 साल की उम्र तक अपने फंड का अधिकतम 75% शेयर (इक्विटी) में निवेश कर सकता है। लेकिन अगले साल से जैसे निवेशक की उम्र बढ़ेगी, शेयर का प्रतिशत कम होता चला जाएगा। यह योजना कम उम्र के निवेशकों के लिए बहुत ही लाभदायक एवं आकर्षक है।

एनपीएस ने निवेशक को कुछ शर्तो के अंतर्गत अपनापैसा निकालने की भी सुविधा प्रदान की है। वह कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए पैसा निकाल सकता है। जैसे कि संतान की उच्च शिक्षा, संतान की शादी, निर्माण कार्य, पहले घर की खरीद, परिवार एवं माता-पिता की चिकित्सा हेतु होने वाला खर्च। निवेशक अपने फंड का अधिकतम 25% निकाल सकता है, बशर्ते उसने इस योजना में लगातार 10 वर्ष तक निवेश किया हो। एक निवेशक अपने निवेश करने की आयु तक 3 बार पैसा निकाल सकता है, (चिकित्सा हेतू छोड़कर)। लेकिन पैसा निकासी में 5 साल का अंतर होना चाहिये। खाता परिपक्व होने से पहले निकाला गया इस तरह का पैसा कर मुक्त होता है।

एनपीएस निवेशक को अपने निवेश श्रेणी बदलने तथा निवेश करने वाले फंड को भी बदलने की सुविधा प्रदान करता है। जबकि एनपीएस स्वत: ही निवेशक के फंड को पूर्ण अवधि तक सही तरह से निवेश करता है। एनपीएस अकाउंट के परिपक्व होने पर भी एनपीएस निवेशक की पेंशन की भी अच्छी तरह से देखभाल करता है।

एनपीएस से लाभ प्राप्ति

शुरुआत से ही एनपीएस ने सभी निवेश श्रेणी में लगाए गए पैसे पर बहुत अच्छा लाभ देकर शानदार प्रदर्शन किया है। जिसकी वजह शुल्क दर का कम होना है। पिछले 5 सालों में एनपीएस से प्राप्त लाभ बहुत ही आकर्षक है, जो बाजार में उपलब्ध अन्य किसी भी पेंशन योजनाओं से काफी बेहतर है।

नीचे प्रदर्शित तालिका एनपीएस की प्रथम श्रेणी (Tier-I) में किए गए निवेश तथा 5साल में प्राप्त लाभ को दर्शाती है, जिसको फंड कंपनी ने तीन वर्गो (Equity-E, Corporate Debts-C, Government securities-G) में निवेश किया था।

प्रथम श्रेणी के अंतर्गत एनपीएस शेयर में लगाए गये पैसे से प्राप्त लाभ

तालिका-1 से यह ज्ञात होता है कि एनपीएस इक्विटी फंड अनुमान से भी अच्छा रहा, जिससे निवेशक को अच्छा लाभ प्राप्त हुआ है। उपरोक्त तालिका में बिरला सन लाइफ पेंशन फंड के तीसरे और पांचवे साल के आंकड़ें शामिल नहीं किए गये हैं। फिर भी औसतन लाभ प्राप्त हुआ फंड तथा ऋण फंड से हुयी है जिसकी गणना 9 मई, 2017 से की गयी है। इस अवधि के दौरान सातों फंड कंपनी ने बहुत अच्छा लाभ दिखाया है, जो निर्धारित अनुमान से भी ज्यादा

Table 1 **TIER I: NPS Equity Schemes Returns as on 8 February, 2019**

Pension Funds #	Returns 1 Year	Returns 3 Years	Returns 5 Years	Returns Inception
Birla SL Pension	1.63%	NA	NA	8.86%
HDFC Pension	1.88%	15.48%	13.87%	14.19%
ICICI Pru. Pension Fund	1.35%	14.26%	13.20%	11.20%
Kotak Mahindra Pension	0.72%	13.86%	13.26%	10.22%
LIC Pension Fund	-0.72%	12.92%	11.57%	11.37%
Reliance Capital Pension Fund	-0.76%	12.82%	12.54%	10.19%
SBI Pension Funds	2.22%	14.78%	13.48%	9.51%
UTI Retirement Solutions	1.58%	15.05%	13.68%	11.25%
Average returns of all seven Funds (except Birla Fund)	0.89%	14.17%	13.08%	11.13%
Bench Mark Index (Nifty 50)	2.20%	13.70%	11.50%	

है। फरवरी 2014 से फरवरी 2019 के मध्य किए गये विश्लेषण में एनपीएस इक्विटी फंड ने निफ्टी-50 से ज्यादा आकर्षक लाभ दिया है। एनपीएस इक्विटी फंड ने औसतन 13.08% का लाभ दिया है जबकि बाजार मानदंड (Benchmark-निफ्टी 50) ने 5 साल में 11.50% का लाभ दिया है। तीन साल के दौरान निफ्टी-50 ने औसतन 0.47% से भी कम लाभ दिया है।

शेयर बाजार (इक्विटी मार्केट) अनिश्चितता एवं जोखिम से भरा हुआ है। बाजार की अस्थिरता, Crude Price के बढ़ने, भारतीय मुद्रा में गिरावट आने और बाजार की अन्य उथलपुथल परिस्थिति के कारण पिछले एक साल के दौरान एनपीएस इक्विटी फंड का लाभ शून्य के आसपास है। शेयर बाजार में अस्थिरता बनी रहती है परंतु निवेश श्रेणी के अंतर्गत किया गया निवेश एक लंबी अवधि दौरान सभी जोखिमों को दूर कर देता है और बहुत अच्छा लाभ प्रदान करता है।

आज के समय भारत एक प्रगतिशील एवं तेजी से उभरती हुयी अर्थव्यवस्था है। वर्ष 2008 और 2009 के आर्थिक आंकड़ों के अनुसार Current Account Deficit (CAD), जीडीपी का केवल 2.5% है और इसका एक सकारात्मक पहलू यह है कि इस दौरान भारत में महंगाई नियंत्रित रही है। दिसम्बर 2018 में महंगाई दर 2.19% थी। आर्थिक वर्ष 2017-2018 में भारत का ऋण जीडीपी के अनुपात में 46.5% था। जब हम भारत कि तुलना चीन के आर्थिक आंकड़ों से करते हैं तो ये बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम चीन के मूल संसाधनों के विकास के ढांचे तक पहुंचने के लिए सिर्फ 10 साल पीछे हैं और उसके कुछ सालों बाद ही भारत चीन के बराबर ही आर्थिक स्थिति विकसित कर लेगा। अन्तरिम बजट 2019-2020 में सरकार ने 10 बिन्दुओं वाला एजेंडा रखा है जिसके अनुसार आने वाले 5 सालों में भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगी और 8 साल बाद 10 ट्रिलियन डॉलर की आर्थिक शक्ति बन जायेगा। फिस्कल रेस्पॉनसिविलिटी एंड बजट मेनेजमेंट एक्ट के अनुसार भारत को जीडीपी अनुपात के हिसाब से अपना ऋण 2024- 2025 तक 40% लाना चाहिये।

इसलिए, अल्पकालीन अस्थिरता और सूचकांक में गिरावट से निवेशक को घबराना नहीं चाहिये और निवेशक को एनपीएस में निवेश करने से हिचकिचाना नहीं चाहिये क्योंकि एनपीएस निवेशक को एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है। निवेशक एनपीएस में लगातार निवेश किए गये पैसों से एक अवधि के पश्चात् अच्छा लाभ प्राप्त कर सकता है, जिसको

Table 2 **TIER I: NPS Corporate Debt Schemes Returns as on 8 February, 2019**

Pension Funds #	Returns 1 Year	Returns 3 Years	Returns 5 Years	Returns Inception
Birla Sun Life Pension Management Ltd.	6.62%	NA	NA	8.07%
HDFC Pension Management Co. Ltd.	6.19%	8.59%	9.85%	9.93%
ICICI Pru. Pension Fund Mgmt Co. Ltd.	6.35%	8.73%	10.15%	10.32%
Kotak Mahindra Pension Fund Ltd.	5.36%	8.38%	9.77%	10.15%
LIC Pension Fund Ltd.	5.63%	7.98%	9.60%	9.73%
Reliance Capital Pension Fund Ltd.	6.10%	8.49%	9.79%	9.10%
SBI Pension Funds Pvt. Ltd	6.43%	8.55%	9.81%	10.32%
UTI Retirement Solutions Ltd.	5.68%	8.19%	9.52%	9.13%
Average returns of Seven Funds (except Birla pension fund)	5.96%	8.41%	9.79%	9.81%
CCIL Bond Broad-TRI	7.71%	6.27%	8.15%	

Table 3 **TIER I: NPS Govt. Schemes Returns as on 8 Febuary, 2019**

Pension Funds #	Returns (1 Year)	Returns (3 Years)	Returns (5 Years)	Returns Inception
Birla Sun Life Pension Management Ltd.	9.19%	NA	NA	6.53%
HDFC Pension Management Co. Ltd.	9.55%	9.31%	10.34%	9.69%
ICICI Pru. Pension Fund Mgmt Co. Ltd.	9.23%	9.39%	10.56%	8.69%
Kotak Mahindra Pension Fund Ltd.	9.60%	9.61%	10.53%	8.60%
LIC Pension Fund Ltd.	11.83%	10.73%	11.40%	11.01%
Reliance Capital Pension Fund Ltd.	9.02%	9.51%	10.53%	8.35%
SBI Pension Funds Pvt. Ltd	9.49%	9.59%	10.70%	9.54%
UTI Retirement Solutions Ltd.	8.86%	8.65%	10.13%	8.33%
Average returns of all seven Funds (except first one)	9.65%	9.54%	10.60%	9.17%
CCIL All Sovereign Bond-TRI	7.86%	6.24%	8.08%	

http://www.npstrust.org.in/return-of-nps-scheme
*Scheme Returns for more than one year are annualised

भारत के अर्थिक आंकड़े तथा लगातार हो रही मजबूत विकास दर दर्शा रही है।

तालिका-2 में एनपीएस ऋण फंड (कॉरपोरेट डेट स्किम्स-सी) में निवेश किए गये लाभ के आंकड़ों को दर्शाती है। एनपीएस कॉरपोरेट डेट्स स्किम्स-सी के अंतर्गत सातों पेंशन फंड ने 9.79% का औसतन लाभ दिखाया है, जो बाजार के अनुमानित सूचकांक लाभ 8.15% है। ये दर्शाता है कि एनपीएस ऋण फंड, इस अवधि के अनुमानित सूचकांक (Benchmark CCIL Bond-TRI) से ज्यादा बेहतर है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि एनपीएस Tier-I में जो पैसा सरकारी योजना (G) में 5 साल के दौरान लगाया गया है उसने निवेशक को एक बहुत अच्छा लाभ दिया है जो 10% से भी ज्यादा है, जबकि अनुमानित सूचकांक (Benchmark CCIL All Sovereign Bond-TRI) लाभ 8.08% था।

अब ऊपर बताए गये Tier-I के सभी निवेश श्रेणियों को उदाहरण से समझेंगे-

मान लो एक निवेशक ने Tier Ist NPS अकाउंट में फरवरी, 2014 को एक लाख रुपये निवेश किया और उसने Tier Ist की एक्टिव च्वाइस को अपनाया जिसके अंतर्गत उसके कुल निवेश का 50% शेयर में, 30% सरकारी योजना (G) में और शेष 20% कॉरपोरेट बांड (C) में निवेश किया गया। 5 साल बाद उसके एनपीएस अकाउंट में फरवरी, 2019 को लाभ प्राप्ति के बाद कुल राशि रु. 1,72,251 प्राप्त हुई। प्राप्त हुई राशि को इक्विटी (E), सरकारी योजना (G) और कॉरपोरेट बांड (C) के लाभ दर के द्वारा प्राप्त किया गया है। इस दौरान एनपीएस इक्विटी (E) में 13.08%, सरकारी योजना (G) में 10.60% तथा कॉरपोरेट बांड (C) में 8.56% का औसतन लाभ दिखाया है। अगर हम इस कुल राशि का औसतन विकास दर (कंपाउंड वार्षिक विकास दर) लगायें तो यह 11.49% दिखाती है।

निवेशक द्वारा किया गया निवेश तथा उससे प्राप्त हुये लाभ को तालिका-4 में संक्षेप में समझ सकते हैं।

उपरोक्त आंकड़े ये साबित करते हैं कि पिछले 5 वर्षों में कंपाउंड वार्षिक विकास दर 11.49% रही है।

अन्य पहलू

यह साबित हो गया है कि एनपीएस ने शेयर (इक्विटी) बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है जबकि इसी अवधि के दौरान म्यूचुएल फंड बाजार में इतना अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। म्यूचुएल से प्राप्त होने वाला लाभ भविष्य में पूर्ण रूप से अस्थायी हो सकता है क्योंकि समय-समय पर भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) म्यूचुअल फंड को पुनः वर्णित किया है और म्यूचुअल फंड का प्रबंधन शुल्क भी अत्यधिक होता है।

Table 4

NPS-Tier-I -Allocation on active Choice	Principal	Rate of returns	Amount (₹)
Equity (50%)	50000	13.08	92448
Govt. Debt (30%)	30000	10.60	49647
Corporate Debt (20%)	20000	8.56	30156
Total	100000		172251
Return after 5 years			72251
CAGR for five year as of 08.02.19			11.49%

2015-2016 वित्तीय वर्ष के अनुसार, एनपीएस निवेशक को 50,000 रुपये की बचत पर Sec 80 CCD (1B) के अंतर्गत कर में अतिरिक्त छूट प्रदान करता है और 1.5 लाख रुपये तक की लिमिट पर Sec 80 (C) के अंतर्गत कर में छूट प्रदान करता है। स्व रोजगार वाला व्यक्ति (जो सरकारी सेवा में नहीं है एवं अपना खुद का कार्य करते हैं) EPF (Employee Provident Fund) में अपना पैसा निवेश नहीं कर सकते हैं। इसके स्थान पर इन्हें PPF (Public Provident Fund) में अपना पैसा 15 वर्ष के लिए निवेश कर सकते हैं जिसकी निवेश सीमा अधिकतम 1.5 लाख रुपये है। इसी प्रकार से ये लोग एनपीएस Tier -I में अपना पैसा निवेश कर सकते हैं तथा Sec 80 CCD (1B) के अंतर्गत 50,000 रुपये की बचत पर अतिरिक्त कर लाभ उठा सकते हैं।

वर्तमान नियम के अनुसार एनपीएस अकाउंट के परिपक्व होने पर निवेशक अपनी कुल राशि का 60% पैसा बिना किसी कर के निकाल सकता है जबकि शेष 40% पैसे को उसे किसी फंड की वार्षिक योजना में निवेश करना पड़ेगा और तभी उसे एक नियमित आय की प्राप्ति होगी। ये एनपीएस का एक नकारात्मक पहलू है क्योंकि वार्षिक निवेश अच्छे लाभ प्रदान नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त निवेश वार्षिक रूप से कम लाभ प्राप्त करता है जबकि बैंक की फिक्स डिपॉजिट स्कीम एक वर्ष में इससे ज्यादा पैसा दे देती है। बैंक से प्राप्त होने वाले ब्याज पर निवेशक को टैक्स देना पड़ता है। इसी प्रकार निवेशक वार्षिकी प्लान से जो लाभ प्राप्त करता है उसे उस पर टैक्स देना होता है।

एनपीएस अकाउंट के परिपक्व होने पर कुल राशि का 60% निवेशक बगैर किसी टैक्स के निकाल सकता है जबकि इपीएफ/पीपीएफ का पूरा पैसा बगैर किसी टैक्स के निकाला जा सकता है। निवेशक चाहे तो अपने अकाउंट का 40% की जगह पूरा पैसा वार्षिक योजना में निवेश कर सकता है। लेकिन इससे प्राप्त होने वाली आय पर नियमानुसार टैक्स देना होता है। एक और लाभकारी तथ्य जो एनपीएस से जुड़ा है, वो यह है कि वार्षिक योजना में निवेश किया गया पैसा जीएसटी से मुक्त होता है जबकि सामान्यत: वार्षिक योजना पर 18% जीएसटी लगता है। लेकिन एनपीएस निवेशक जीएसटी से मुक्त है।

एनपीएस निवेशक को उसकी वृद्धावस्था के समय एक नियमित आय का प्रबंध करता है जो उसके लिए बहुत अच्छा है। आज भारत में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण व्यक्ति की जीवन अवधि (आयु) बढ़ रही है। जिसके परिणामस्वरूप सेवानिवृत्ति के पश्चात व्यक्ति को समय के अनुसार पैसों की आवश्यकता होती है और बढ़ते जीवन लागत मूल्य और महंगाई के कारण व्यक्ति को एक सेवानिवृत्ति योजना जरूरी हो जाती है। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि एनपीएस में थोड़ा थोड़ा पैसा निवेश करके हम अपने सेवानिवृत जीवन को बहुत ही सुखद बना सकते हैं।

एक और उदाहरण से हम एनपीएस के महत्त्व को समझ सकते है, अगर कोई निवेशक अपनी सेवानिवृत्ति के समय रु 1,00,00,000 (एक करोड़) प्राप्त करना चाहता है तो उसे 30 साल की आयु से ही एनपीएस में निवेश शुरू कर देना चाहिये। इसके लिए उसे Tier-I के एक्टिव च्वाइस के विकल्प इक्विटी (E) & 50%, सरकारी प्रतिभूति (G)-30%, कॉरपोरेट डेट (C)-20% को चुनना चाहिये और हर महीने रु 3165 को क्रमबद्ध निवेश (Syatematic Investment Plan-SIP) में निवेश करना चाहिये। अर्थात हर माह उसे 3165 रुपये निवेश करना चाहिये। जिस समय तक निवेशक 60 वर्ष का होगा, उस समय तक 11.50% औसतन वार्षिक दर के हिसाब से उसे राशि प्राप्त हो जाएगी अर्थात एक करोड़ रुपया उसके एनपीएस अकाउंट में होगा। अगर बैंक ब्याज दर 6.75% भी माने तो उसे 56,000 रुपये उसे लाभ के रूप में हर महीने प्राप्त हो सकते हैं। जिससे व्यक्ति आराम से अपना जीवन निर्वाह कर सकता है।

ऊपर दिये गये तथ्यों के अनुसार अगर निवेशक बुद्धिमानी से एक वर्ष में दो लाख रुपये NPS अकाउंट में निवेश करता है तो बहुत ज्यादा कर लाभ उठा सकता है। Sec80C के अंतर्गत 1.5 लाख रुपये पर टैक्स लाभ मिलेगा और Section 80 CCD (1B) के अंतर्गत 50,000 रुपये पर टैक्स लाभ मिलेगा और Sec 80 CCD (1B) के अंतर्गत वह अतिरिक्त कर लाभ 15,000 रुपये वार्षिक प्राप्त कर सकता है। ■

भारतीय रेल

पत्रिका की

सदस्यता एवं प्राप्ति

हेतु

संपर्क करें

011-47845381

सोमवार से शुक्रवार

(सुबह 10 से 1 एवं
दोपहर 2 से 5 बजे तक)

editorbhartiyarailrb@gmail.com

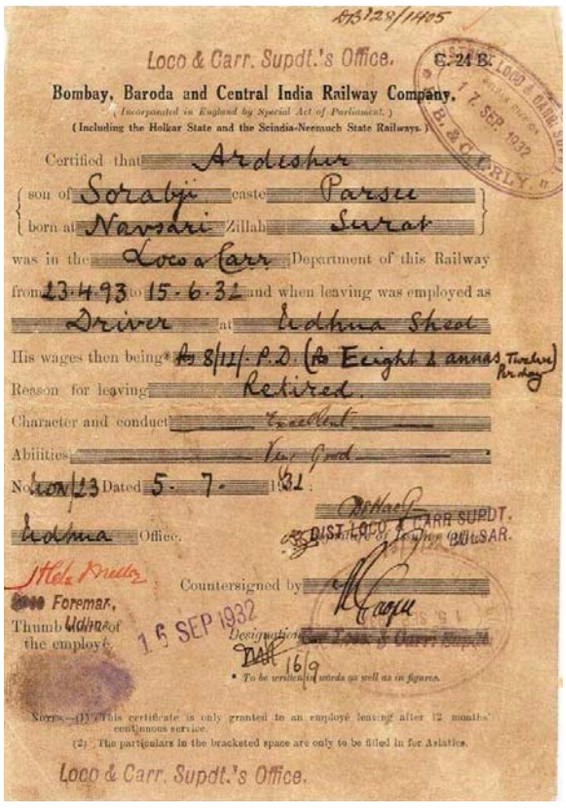

BB/128/1405

Loco & Carr. Supdt.'s Office. C. 24 B.

Bombay, Baroda and Central India Railway Company.
(Incorporated in England by Special Act of Parliament.)
(Including the Holkar State and the Scindia-Neemuch State Railways.)

Certified that Ardeshir
son of Sorabji caste Parsee
born at Navsari Zillah Surat
was in the Loco & Carr Department of this Railway
from 23.4.93 to 15.6.31 and when leaving was employed as
Driver at Udhna Shed
His wages then being* Rs 8/12/- P.D. (Rs Eight & annas Twelve per day)
Reason for leaving Retired.
Character and conduct Excellent
Abilities Very Good
No. Con/23 Dated 5. 7. 1931
Udhna Office.

DIST. LOCO. & CARR SUPDT. BULSAR.

Foreman.
Thumb Udhna of the employé.

Countersigned by
Designation
16 SEP 1932
16/9

* To be written in words as well as in figures.

NOTES.—(1) This certificate is only granted to an employé leaving after 12 months' continuous service.
(2) The particulars in the bracketed space are only to be filled in for Asiatics.

Loco & Carr. Supdt.'s Office.

17 SEP 1932 B. B. & C. I. RLY.

पश्चिमी रेलवे के पारसी इंजन ड्राइवर का सेवानिवृत्ति प्रमाणपत्र
वह 1893 में नियुक्त किए गए थे एवं 1932 में सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 39 वर्षों तक बी.बी. एंड सी.आई.आर.सी. में काम किया। सेवानिवृत्ति के समय उनकी अंतिम मजदूरी आठ रुपये और 12 आना थी

ग़ज़ल

शेर कुछ दिलकश सुनाना चाहता है,
हर बहर को गुनगुनाना चाहता है।

मिल गई फुर्सत उसे जब काम से तो,
शायरी को फन बनाना चाहता है।

आ गया है घूम कर सारा जहाँ वो,
दुश्मनी जड़ से मिटाना चाहता है।

प्रेम की भाषा लिखे जब भी लिखे वो,
नाम खुद का वो बढ़ाना चाहता है।

मिल गई शौहरत जब से जिंदगी में,
चाँद तारे तोड़ लाना चाहता है।

कौन पूछेगा यहाँ 'संजय' तुझे अब,
हर कोई पीछा छुड़ाना चाहता है। ■

संजय कुमार 'गिरि'

ग़ज़ल

उसे रोका अगर होता तो यूँ बिगड़ा नहीं होता।
जरा सी बात पर फिर यूँ कभी दंगा नहीं होता।

तुझे गर खून की कीमत कहीं अपने पता होती
कभी खत यार को फिर खून से लिखा नहीं होता।

उसे जो याद करता है उसी का रब हुआ समझो
निकालो बात दिल से ये कि रब सबका नहीं होता।

मुहब्बत की खनक दिल में अगर तेरे नहीं होती
यकीं कर ले, तू बनके दिल मेरा धड़का नहीं होता।

दिलों के तार तुझसे हैं कहीं बेशक जुड़े वर्ना
तेरे बारे में यूँ इतना कभी सोचा नहीं होता।

जहां पर प्यार होता है भरोसा हो ही जाता है
खुदा की रहमतों से फिर कभी धोखा नहीं होता।

बिगड़ जाती है बनती बात भी नफरत के चश्मों से
मुहब्बत के बिना झगड़े का समझौता नहीं होता।

खुदा की हो अगर रहमत लिखा जाता है तब 'बिरदी'
वरना यह गजल क्या एक भी मिसरा नहीं होता। ■

हरदीप बिरदी

प्रिय महोदय

देश की प्रतिष्ठित संचार संवाद संस्था ए.बी.सी.आई. द्वारा भारतीय रेल मासिक पत्रिका को पुरुस्कृत एवं सम्मानित करने पर हार्दिक प्रसन्नता हुई, निसंदेह आप एवं आप की टीम के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

एक नये कलेवर साज सज्जा तथा रेल की महत्त्वपूर्ण जानकारी द्वारा भारतीय रेल पत्रिका न केवल रेल कर्मचारियों में अपितु आम पाठकों में भी अपनी पैठ बना चुकी है।

भारतीय रेल एक नये आयाम तक पहुंचे इसी कामना एवं शब्दों के साथ एक बार पुनः बधाई।

दुर्गादत्त शर्मा, गुरुग्राम (हरियाणा)

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोये
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

आज ही सदस्य बनें

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला .....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

वार्षिक सदस्यता	सर्व साधारण	रेलकर्मी	विशेषांक	एक प्रति
एक वर्ष	₹100*	₹90*	₹40	₹10
दो वर्ष	₹200*	₹180*	₹40	₹10
तीन वर्ष	₹300*	₹270*	₹40	₹10

*** विशेषांक के साथ**

रेल कर्मचारी ..... हां/नहीं वर्तमान सदस्यता (हो तो) संख्या ..... तारीख .....

देय राशि : डी.डी. ..... चेक ..... मनी ऑर्डर ..... पोस्टल ऑर्डर .....

डीडी/चेक/म.ओ./पो.ओ. नंबर ..... स्थान ..... रुपये ..... दिनांक .....

(डी.डी./म.ओ./पो.ओ. देय - 'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली')

संपर्क

व्यापार प्रबंधक

310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली - 110001

(011) 23382531/23303665/23304456 (रेलवे नं. 43665, 44456), मोबाइल : 9717647367

ई-मेल : **bmpr310rb@gmail.com / editorbhartiyarailrb@gmail.com**

सदस्यता-फॉर्म की फोटोकॉपी मान्य है

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

वर्ष 2019 में
विशेषांक हेतु

• क्षेत्रीय रेल • मंडल
• उत्पादन इकाई एवं अन्य

जो अपनी उपलब्धियों पर आधारित विशेषांक प्रकाशित करवाना चाहते हैं, वे कृपया संपर्क करें

संपादक, 9717641075,
व्यापार प्रबंधक, 9717647367
email : bmpr310rb@gmail.com
editorbhartiyarailrb@gmail.com

विशेषांक हेतु विज्ञापन दरें सामान्य रहेंगी।
विज्ञापन दरें देखें (पेज नं. 2)

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2018-19-20
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

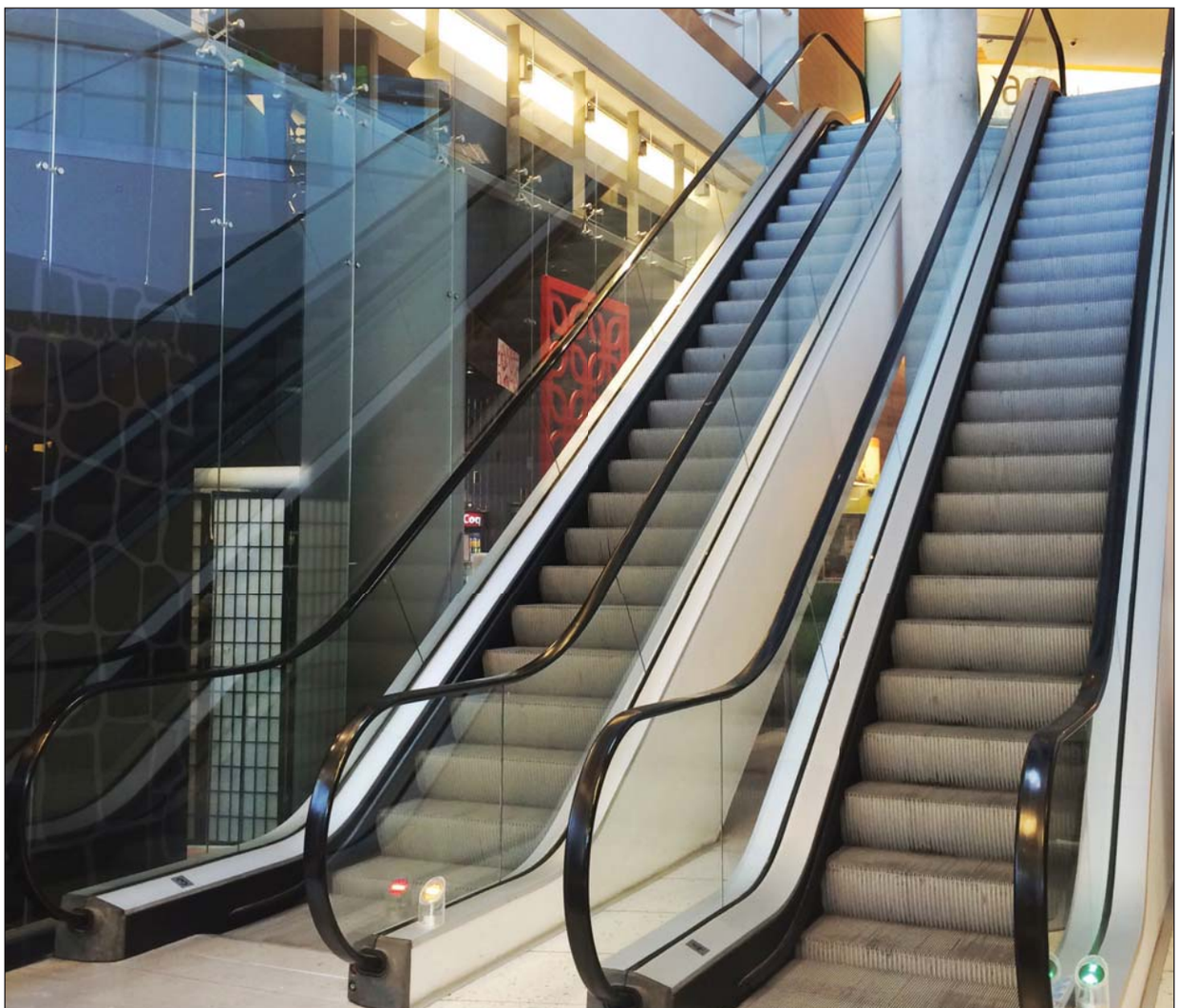

Escalators
Railway, Metro Stations

Locomotives | Traction Alternators & Motors
Dynamic Brake Resistors | Cooling Fans | HVAC

Daulat Ram
Engineering Services Private Limited

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Near Bhopal City, Dist. Raisen (MP) 464993 INDIA
Ph: 91 7480 231252 / 53 | Fax: 91 7480 231250 | info@daulatram.org | daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**